

तृतीय संस्करण, १०००
सं० २००५

प्रकाशक—
नागरीप्रचारिणी सभा
काशी

मूल्य
दो रुपये चार आने

मुद्रक—
सूर्य प्रेस
बंगाल

तृतीय संस्करण का वक्तव्य

सभा द्वारा जोधराजकृत 'हम्मीररासो' का प्रथम संस्करण संवत् १९६५ में प्रकाशित हुआ था। उसमें मूल के अतिरिक्त पादटिप्पणी में कुछ पाठांतर भी दिए गए थे। ग्रंथ किस हस्तलेख के आधार पर संपादित किया गया और पाठांतर देने में किस दूसरे हस्तलेख से सहायता ली गई इसका उल्लेख ग्रंथ के संपादक स्वर्गीय बाबू श्यामसुंदरदास जी ने अपनी भूमिका में नहीं किया है। वहाँ इतना ही संकेत है कि कुँवर कृष्णसिंह जी वर्मा से यह काव्य प्राप्त हुआ था। 'खोज' में हम्मीररासो का कोई हस्तलेख आज तक नहीं मिला। सभा के आर्यभाषा-पुस्तकालय में अलबत एक आधुनिक हस्तलेख है जो सं० १८६४ की 'असल प्रति' की अनुलिपि है और संवत् १९६१ में प्रस्तुत हुआ है। सभा से हम्मीररासो का प्रथम संस्करण इस अनुलिपि के चार वर्ष बाद प्रकाशित हुआ। अतः उसके संपादन के लिये ही कदाचित् यह अनुलिपि कराई गई होगी और इसका उपयोग भी किया गया होगा। फिर भी इस अनुलिपि में अनेक पाठांतर मिलते हैं और एकाध स्थल पर कुछ पंक्तियाँ भी अधिक हैं। इसमें दो पृष्ठ (१७५-१७६) नहीं हैं, पूरी अनुलिपि १७६ पृष्ठों में समाप्त हुई है।

प्रथम संस्करण में एकरूपता नहीं थी। कुछ ऐसे कठिन शब्द भी थे जिनका अर्थ देना आवश्यक जान पड़ा। अतः इस संस्करण (तृतीय आवृत्ति) में यह पूर्ति कर दी गई है। यह कार्य बहुत मनोयोगपूर्वक संपन्न किया है 'नागरीप्रचारिणी पत्रिका' के सहायक संपादक श्री शिवनाथ, एम्० ए० ने जो नई पीढ़ी के अच्छे आलोचक हैं। जोधराज ने यह ग्रंथ सं० १७८५ में प्रस्तुत किया था। यह हिंदी-साहित्य का रीतिकाल या शृंगारकाल था। 'रासो' ग्रंथों की परंपरा अपभ्रंशकाल की है। जैन अपभ्रंश में 'रास' नाम के अनेक

ग्रंथ मिलते हैं। रासो, रास या रासा संस्कृत के 'रासक' शब्द से बने हैं जिसका अर्थ 'काव्य' होता है। अपभ्रंश में 'रासक' लिखने की प्रथा बहुत थी। भारतीय विद्याभवन वंवाई से अद्वहमान (अद्वैत रहमान) का जो 'संदेशरासक' प्रकाशित हुआ है उससे प्रमाणित कि देशभाषा अपभ्रंश की प्राचीन परंपरा वंसी ही भेद-भावशून्य थी जैसी हिंदी की आधुनिक काल के पूर्व तक रही है। अपने को 'मिच्छ' (म्लेच्छ) देश (वर्तमान सीमाप्रांत) का निवासी बतलाते हुए कवि ने बड़ी विनय से ग्रंथ का आरंभ किया है।

हिंदी में 'रासो' शब्द चल पड़ा है, पर खड़ा बोली हिंदी के गद्य में उसका रूप 'रासा' ही होना चाहिए। अभी तक यह शब्द अनुमित संस्कृत शब्दों के साथ जोड़ा जाता रहा है। आश्चर्य की बात है कि 'पृथ्वीराजरासा' के हस्तलेखों की पुष्पिकाओं में प्रयुक्त होने पर भी 'रासक' शब्द की ओर विद्वानों का ध्यान नहीं गया। प्रस्तुत ग्रंथ का गतानुगतिक नाम 'हर्मीररासा' ही है। मूल पाठों की एकरूपता के लिये पुराने हस्तलेखों के व्यवहार-बाहुल्य के आधार पर 'वर्तनी' रखी गई है। पाठ-संपादन में पूर्वोक्त अनुलिपि का ही सहारा रखा है। पर अनुलिपिकर्ता ने वर्तनी सावधानी से कार्य नहीं किया जितनी ऐसे ग्रंथ के लिये अपेक्षित थी। प्राचीन हस्तलेखों में 'वर्तनी' अनेक प्रकार की मिलती है। इसके कारण देशभेद, कालभेद, भाषाभेद आदि हैं। राजपूताने और अवध प्रांत के हस्तलेखों में, सोलहवां शताब्दी और अठारहवां शताब्दी के हस्तलेखों में तथा बुंदेली और भोजपुरी जनपदों में मिले हस्तलेखों में 'वर्तनी' का अंतर बहुत है। कवि अपने समय तक विकसित रूपों के साथ ही काव्य-परंपरा में व्यवहृत रूपों को भी यनाए रहते हैं इसलिये जब तक कवि के हाथ की ही लिखा कोई हस्तलेख न मिले तब तक किसी प्रामाणिक हस्तलेख का ही आधार मानकर 'वर्तनी' रखी जा सकती है और उस समय के प्रचलन आदि के अनुमान ही पाठों का संपादन किया जा सकता है। प्राचीन हस्तलेखों में

और 'म' के पूर्व का आकार प्रायः सानुनासिक हो रखा गया है, जैसे धाम, बान आदि में । क्रियापदों, कृदंतों, विभक्ति-चिह्नों में ओकारांत, औकारांत दोनों का घालमेल है । इसका कारण यह है कि काव्यभाषा 'ब्रज' का उच्चारण ऐसे मध्यस्थल का उच्चारण है जिसके पश्चिम ओ की प्रवृत्ति है और जिसके पूर्व औ की । विचार करने पर दिखाई देता है कि इसका प्रभाव भिन्न भिन्न शब्दों पर पृथक् पृथक् पड़ा है । क्रियापदों में ता औकार का आरंभ हुआ है पर संज्ञा-शब्दों में औकार को ओर । अनुलिपि से संगत बैठते हुए इसी नियम का पालन किया गया है ।

'रासा' ग्रंथों में राजस्थानी के प्रभाव के कारण 'व'-बहुला और 'ण'-बहुला प्रवृत्ति है । इनमें से 'व' का प्रवृत्ति ब्रज के अनुकूल नहीं है इससे उसमें यथास्थान 'व' का ही व्यवहार किया गया है, पर 'ण' रहने दिया गया है—पारंपरिक रूपों के ग्रहण का विचार करके । विभिन्न प्रदेशों, समयों, कवियों, उपभाषाओं के प्राचीन ग्रंथों के संपादन में कैसी 'वर्तनी' रखी जाय इसका विस्तृत विवेचन अपेक्षित है और इसपर स्वतंत्र निबंध क्या पुस्तिका लिखन का आवश्यकता है । खान-विभाग के प्राचीन हस्तलेखों का आलाइन और विवरणों के अनुशीलन से पता चलता है कि पूरवा, पछाहा आदि कई शैलियाँ हैं । इसका अनुसंधान अपेक्षित है । अतः प्रस्तुत संस्करण में एकरूपता लाने के लिये जिस वर्तनी का व्यवहार किया गया है उसका विस्तार करने की यहाँ कोई विशेष आवश्यकता नहीं । यह संस्करण संपादन की थोड़ी सामग्री के होते हुए भी जहाँ तक हो सका है उपयोगी बना दिया गया है । द्वितीय आवृत्ति बहुत दिनों पूर्व समाप्त हो गई थी । इस आवृत्ति के प्रकाशित हो जाने में कुछ देर सुसंपादन के कारण हो गई है । आशा है कि यह संस्करण विशेष लाभदायक प्रतीत होगा ।

वास्तविक नवरात्र }
सं० २००५ वि० }

विश्वनाथप्रसाद मिश्र
(साहित्य-मंत्री)

भूमिका

यह ऐतिहासिक काव्य कवि जोधराज का बनाया हुआ है। नीमराणा के राजा चंद्रभान को आज्ञा से जोधराज ने इस काव्य को संवत् १७८५ में रचा। इसमें रणथंभौर के वीरशिरोमणि महाराज हम्मीरदेव का चरित्र और विशेष कर अलाउद्दीन के साथ उनके विग्रह का वर्णन है। भारतवर्ष के इतिहास में हम्मीर का नाम प्रसिद्ध है और उसके चरित्र को पढ़ और सुनकर लोग अब तक मनोमुग्ध और उत्साहित होते हैं। कवियों और लेखकों ने भी उसके चरित्र का गान करने में कोई बात उठा नहीं रखी है। अब तक कविता में इस विषय के तीन ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। एक तो चंद्रशेखर का हम्मीर-हठ है जो छपकर प्रकाशित हो चुका है। दूसरा ग्वाल कवि का ग्रंथ है जो अब तक छपा नहीं। उसकी कविता-शैली भी ऐसी उत्तम नहीं है। तीसरा ग्रंथ यह जोधराज का है। और भी अनेक ग्रंथ इस विषय के होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं। गद्य में भी अनेक ग्रंथ लिखे गए हैं परंतु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उनमें ऐतिहासिक खोज का बहुत कुछ अभाव देख पड़ता है। राजपूताने में दो हम्मीर हो गए हैं। एक उदयपुर के और दूसरे रणथंभौर के। लेखकों ने प्रायः दोनों के चरित्रों को मिलाकर एक कर डाला है और इसी भ्रम में पड़कर इतिहास के विरुद्ध बातें लिख डाली हैं। जिन हम्मीर की इतनी प्रसिद्धि है और जिनके गुण गाने से अब तक लोग उत्साहित होते हैं तथा जिन्होंने अलाउद्दीन से गार ठानी थी वे रणथंभौर के चौहान थे, न कि उदयपुर के सिसौदिया हम्मीर। अतएव इस काव्य के विषय में कुछ लिखने के पहले अथवा इसके संबंध की ऐतिहासिक बातों का उल्लेख करने के पहले मैं जोधराज कृत इस काव्य में चौहान हम्मीर का जो कुछ चरित्र वर्णन किया गया है उसे

दे देना उचित समझता हूँ। इस सारांश के लिये, जो आगे दिया जाता है, मैं कुँवर कन्हैया जी का अनुगृहीत हूँ।

भारतवर्ष के अंतिम सम्राट् भृगु^१ कुलोत्पन्न महाराज पृथ्वीराज के वंश में चंद्रभान नाम का एक वीर पुरुष था। यद्यपि नीमराणा अब एक छोटी सी रियासत अलवर राज्य के अंतर्गत है, पर यहाँ के अधिपति चौहानों के मुकुटमणि माने जाते हैं। ये राजा अपने को महाराज पृथ्वीराज का वंशधर बताते हैं। महाराज चंद्रभान को उनके वीरत्व, दारुत्व, औदार्य, पराक्रम, बुद्धिमत्ता और सर्वप्रियता के कारण लोग राठ^२ का महाराज कहा करते थे, और सब लोग उसी भाँति उसका आदर भी करते थे। उक्त चंद्रभान के दरबार में आदि-गौड़-कुलोत्पन्न अत्रिगोत्रीय ब्राह्मण, बालकृष्ण का पुत्र जोधराज था। इस वंश के लोग डिहवरिया राव कहे जाते थे।

एक समय चंद्रभान ने जोधराज से हम्मीररासो के सुनने की इच्छा प्रकट की और कहा कि इस काव्य में महाराज हम्मीर की वंशावली, उनका अलाउद्दीन से वैर, उनकी वीरता और उनके युद्ध-कौशल इत्यादि का यथाक्रम संक्षेप में वर्णन होना चाहिये। तब जोधराज ने इस काव्य “हम्मीर रासो” की रचना की।

सृष्टिरचना—प्रथम कल्प के आदि में संसार रूपी उपवन के जीव-निर्जीव, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सब पदार्थ वीर्यस्वरूप में उस परम प्रभु परमात्मा अनादि जगदीश्वर के स्वरूप में स्थित थे और वह प्रभु योगनिद्रा में निभगत था। एक समय वह अपनी शक्ति का आप ज्ञान करके निद्रा से उठा और उसके इच्छा करने ही माना उसने

हुई। जिस समय शेषशायी भगवान् के नाभि-कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए वह वाराह कल्प का आदि था।

मानवसृष्टि—जलज से उत्पन्न हुआ ब्रह्मा बहुत समय पर्यन्त इसी विचार में मुग्ध रहा कि मैं क्या करूँ। इसी प्रकार जब बहुत समय बीत गया तब उसे आपसे आप अनुभव हुआ कि तप करके सृष्टि उत्पन्न करनी चाहिए और उसने वैसा ही किया। पहले तो उसने अप, तेज, वायु, पृथ्वी, आकाशादि पंच महातत्त्वों की रचना की, तदनंतर बीज वृक्षादि जड़ वस्तुओं की रचना करके उसने सनक, सनंदन, सनत्कुमारादि चार पुत्र रचकर मानव जाति की वृद्धि करनी चाही; किंतु जब सनकादि कुमारों ने अखंड ब्रह्मचर्य धारण कर सांसारिक विषय-भोगादि से अरुचि प्रगट की तब ब्रह्मा ने उसी प्रकार से अन्यान्य मुनिवरों को उत्पन्न किया। ब्रह्मा के मन से मरीचि; कानों से पुलस्त्य, नाभि से पुलह, हाथों से कृतब्रह्म, त्वचा से नारद, छाया से कर्दम, पीठ से अर्द्धम, कंठ से धर्म और ओष्ठ से लोम ऋषि उत्पन्न हुए। इन्हीं ऋषियों से मनुष्यों की भिन्न भिन्न जातियों की वृद्धि हुई।

चंद्रवंश और सूर्यवंश—ब्रह्मा के पुत्र मरीचि के १३ स्त्रियाँ थीं जिनमें से एक का नाम कला था। कला के कश्यप और धर्म दो पुत्र हुए। अत्रि ऋषि के तीन पुत्र हुए जिनमें से बड़े का नाम सोम था और कनिष्ठ का नाम दुर्वासा। उक्त सोम का पुत्र बुध और बुध का पुत्र पुरुरवा हुआ। इस पुरुरवा के ६ पुत्र हुए जिनसे चंद्रवंशियों के ६ कुल प्रख्यात हैं।

इसी प्रकार भृगु मुनि से चहुआन क्षत्रियों का वंश चला जिसका वर्णन इस प्रकार से है कि भृगु मुनि की पहली स्त्री से धाता और विधाता नाम के उनके दो पुत्र हुए। भृगु की दूसरी स्त्री से दैत्यगुप्त का और च्यवन ऋषि का जन्म हुआ। च्यवन के ऋचीक, इनके जमदग्नि और जमदग्नि के परशुराम नामक क्षात्र वृत्तिधारी पुत्र हुए जिन्होंने क्षात्र धर्म से च्युत विषयलोलुप सदृशों क्षत्रिय राजाओं

को मारकर उनका वंश पर्यंत नाश कर डाला और उनके रुधिर से पितृ-देवताओं का तर्पण किया। इस प्रकार परशुराम के पराक्रम से प्रसन्न हुए पितृ-देवताओं ने परशुराम को शांत होकर तप करने की आज्ञा दी।

आबूराज पर्वत पर- यज्ञ और चहुआनों की उत्पत्ति—
इधर सृष्टि के शासनकर्ता क्षत्रियों के समूल उन्मूल हो जाने से जब परस्पर अन्याय आचरण के कारण प्रजा पीड़ित हो उठी और दैत्य और राक्षसों के उपद्रव से ऋषि लोगों के यज्ञादि कर्मों में भी विघ्न पड़ने लगा तब ऋषिगण संसार की रक्षा और उसके उचित शासन के निमित्त फिर क्षत्रियों के उत्पन्न करने की अभिलाषा से यज्ञ करना विचारकर अर्बुदगिरि अर्थात् आवू के पहाड़ पर गए। वहाँ पर सब ऋषियों ने शिव की आराधना की। तब शिव ने भी वहाँ आकर मुनिवरों की प्रार्थना स्वीकार की और वे उक्त पर्वत पर अचल रूप से विराजमान हुए; अस्तु तब मुनिवरों ने भी सुंदर वेदिका रचकर यज्ञ-कर्म आरंभ किया। इस यज्ञ में द्वैपायन, वशिष्ठ, लोम, दालिभ, जैमिनि, हर्षन, धौम्य, भृगु, घट्योनि, कौशिक, वत्स, मुद्गल, उद्दालक, मातंग, पुलह, अत्रि, गौतम, गर्ग, शांडिल्य, भरद्वाज, जाबालि, मारकंडेय, जरत्कार, जाजुल्य, पराशर, ज्यवन और पिप्पलाद आदि मुनियों का समारोह हुआ था। इसके अतिरिक्त शिव और ब्रह्मा भी स्वयं वहाँ उपस्थित थे। इस प्रकार समुचित प्रकार से जिस समय यज्ञ हो रहा था और वेदिका में उत्पन्न हुई अग्निशिखाएँ आकाश को स्पर्श कर रही थीं, उसी समय उस वेदिका में से चालुक्य, प्रमार और परिहार क्षत्रिय क्रम में निकले। इन्होंने मुनिवरों की आज्ञा पा देवता से कुछ भी किया; किन्तु उन्हें परान्त करने में वे समर्थ न हो सके। तब ऋषियों ने उक्त यज्ञस्थल को त्यागकर उसी पहाड़ पर नैऋत दिशा में दूसरा अग्निद्वंद्व निर्माण किया। इस वेद के यज्ञ में ब्रह्मा ने ब्रह्मा, भृगु मुनि ने दाना, वशिष्ठ ने आचार्य्य, वत्स ने ऋषिक और परशुराम ने यज्ञस्थान का कार्य संपादन किया।

निदान इस यज्ञ से जो अग्नि के समान तेजवाला पुरुष उत्पन्न हुआ उसका नाम चहुआन जी हुआ; क्योंकि इनके चार बाहु थे और प्रत्येक बाहु खड्ग, धनुष, शूल और चक्र इन चारों आयुधों को धारण किए हुए था। इस पुरुष ने ऋषिवरों के आशीर्वाद और निज कुलवेदी आशापूरा के प्रसाद से संपूर्ण दैत्यों का वध कर ऋषि और देवताओं को प्रसन्न किया।)

कथामुख—इस प्रकार यज्ञकुंड से उत्पन्न चहुआन जी के वंश में बहुत दिनों पीछे विक्रमीय १२वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के आरंभ में राव जैतराव चहुआन जन्मे। एक समय जैतराव जंगल में शिकार खेलने गए। वहाँ उन्होंने एक बलवान् बाराह का देखकर उसके पीछे घोड़ा डाल दिया। बहुत दूर निकल जाने पर एक गंभीर वन में बाराह तो अदृष्ट हो गया और राव जी संगी साथियों से छुटकर चकित चित्त अकेले उस वन में भटकते फिरने लगे। ऐसे समय में वहाँ उन्हें एक ऋषि का आश्रम देख पड़ा। वहाँ जाकर वे देखते क्या हैं कि परम रमणीय पणकुटी में कुशासन पर बैठे हुए पद्म ऋषि जी ध्यान में मग्न हैं। राव जी ने उनके निकट जाकर साष्टांग प्रणाम किया और उनके दर्शन से अपने को कृतार्थ जानकर वे उनकी स्तुति करने लगे। निदान तब ऋषि ने भी प्रसन्न होकर राव जी को आशीर्वाद दिया; और कुछ दिवस पर्यंत उसी स्थान पर रहकर उन्हें शिवार्चन करने का भी उपदेश दिया। राव जी ने वैसा ही करके शिव को प्रसन्न किया। तब ऋषि ने पुनः आज्ञा दी कि राव जी तुम यहाँ एक गढ़ भी निर्माण करो। अस्तु राव जी ने उसी समय अपने मित्र, मंत्री और सुहृदों को दुलाकर संवत् १११० वैशाख सुदी अक्षय तृतीया, शनिवार को पाँच घटी सूर्योदय में रणधंभगढ़ की नींव डाली और उसी के उपस्थ में एक रमणीक नगर भी बसाया।

ऋषि का तप भंग होना—उस पर्वतावेष्टित प्रच्छन्न एवं दृढ़ दुर्ग की रम्य भूमि को पद्म ऋषि ने राव जी से अपने रहने के लिये माँग लिया और उसी में रहकर वे तप करने लगे। जब उनके उग्र

एवं पवित्र तप की सूचना इंद्र को मिली तब भोरुहृदय इंद्र ने अपने श्रीभ्रष्ट होने के भय से आर्शंकित होकर पद्म ऋषि का तप भ्रष्ट करना चाहा और इसीलिये उसने इस कर्म के लिये कुकर्मी-मकरकेतु को उपयुक्त जानकर उसे आज्ञा दी कि हे मित्र, तू अपने सच्चे सहचर वसंत के सहित जाकर रणथंभ गढ़ में तप करते हुए तेजस्वी पद्म ऋषि की श्री नष्ट कर दे । इस प्रकार इंद्र से उत्तेजित किया हुआ कामदेव अपनी सहकारी षड् ऋतुओं सहित रणथंभ गढ़ में ध्यानमग्न पद्म ऋषि को जाग्रत करने की इच्छा से ऋतुओं के उपचार का प्रयोग करने लगा, किंतु ग्रीष्म का प्रचंड मार्तंड और मलय समीर, पावस के पपीहा, शरद की स्वच्छ चाँदनी, शिशिर के दुशाला और हेमंत के पाला को पराजित करनेवाले मसाले भी जब ऋषि की समाधि भंग न कर सके, तब उस कुसुमायुध ने साक्षात् शिव को रसिक बनानेवाले वसंत का प्रयोग किया अर्थात् उस जनशून्य वन में नाना प्रकार के पुष्प प्रस्फुटित हुए और उनपर मधुप गुंजार करते हुए आनंद से मकरंद पान करने लगे, जहाँ तहाँ नाना वर्ण के पक्षी-सावक कलरव करते हुए कल्लोल करने लगे । उसी समय इंद्र द्वारा प्रेरित अप्सराओं ने आकर नृत्य और गान करते हुए उस शिखरशैली को इंद्र का अखाड़ा बना दिया, तब उपयुक्त समय जानकर कामदेव ने भी अपने शरों से मुनिवर के शरीर को वेध दिया । इस प्रकार समाधि भंग होने पर जब मुनि ने आँख उठाकर देखा तो देखते क्या हैं कि उस रणथंभ के अभेद्य दुर्ग में शांत रस को पराजित कर शृंगार रस ने पूर्णतया अपना अधिकार जमा लिया है और एक चंद्रमुखी मृगलोचनी, गयंद-गामिनी, नवयौवना सन्मुख खड़ी हुई मुनि की ओर कटाक्ष-सहित देख रही है । यह देखकर पद्म ऋषि के शरीर से शांति और तप इस प्रकार बिदा हो गए जैसे तुषारतोषित वृक्ष सुकोमल पल्लवों को त्याग देते हैं, एवं जिस प्रकार फल के लगते ही वृक्षगण सूखे पुष्प का अनादर कर देते हैं । इस प्रकार कामातुर होकर पद्म ऋषि समाधि छोड़ सुंदरी

का आलिंगन करने को उत्सुक हो उठे। उधर उस रमणी ने भी ऋषि के मनोगत भाव को जानकर उनका हाथ पकड़ लिया और तब वे दोनों आनंद से रस-क्रीड़ा करने लगे।

पद्म ऋषि का शोक और शरीरत्याग—इस प्रकार जब अधिक समय व्यतीत हो गया तब सुंदरी तो अंतर्हित होकर स्वर्ग को चली गई और पद्म ऋषि की भी मोहनिद्रा खुली। तब वे मन ही मन विचार और पश्चात्ताप करके विलाप करते हुए आप ही आप कहने लगे—हाय ! मैं कैसा दुर्बुद्धि हूँ कि मैंने क्षणिक सुख के लिये अपना सर्वनाश किया और फिर भी जिसके लिये सर्वस्व का त्याग किया वह भी पास नहीं। हा ! यह मैंने अब जाना कि पाप का परिणाम केवल संताप होता है और संतप्तहृदय मनुष्य जो कुछ कर डाले सब थोड़ा है। हाय, मैं तब से भी गया, भोग से भी गया, अब मैं इस शरीर को रखकर क्या करूँ ? इस प्रकार शोकातुर होकर मुनि ने एक वेदिका रचकर उसमें अपने शरीर के पाँच खंड करके होम कर दिए। जिस समय पद्म ऋषि ने शरीर त्याग किया उस दिन माघ शुक्ल १२ सोमवार आर्द्रा नक्षत्र था। पद्म ऋषि के मस्तक से अलाउद्दीन बादशाह, वत्सस्थल से राव हम्मीर, भुजाओं से महिमा-शाह और मीर गभरू, चरणों से उर्वसी अर्थात् अलाउद्दीन की उस वेगम का अवतार हुआ जो कि इस आख्यान की नायिका है।

हम्मीर का जन्म—पद्म ऋषि के उपर्युक्त रीति से शरीर त्यागने के पश्चात् अर्थात् संवत् ११४१, शाका १००६ दक्षिणायन शरद ऋतु कार्तिक शुक्ल १२ रविवार को उत्तरभाद्रपद नक्षत्र में उक्त रणथंभ गढ़ के चहुआन राव जैतराव जी के हम्मीर नाम का एक पुत्र जन्मा। पुत्र का प्रफुल्लित मुख देखकर जैतराव के आनंद का ठिकाना न रहा। उन्होंने ज्योतिषियों को बुलाकर लग्न-कुंडली बनवाई। सारस्वों ब्राह्मणों, भिजुकों और बंदीजनों को यथायोग्य संमान सहित अन्नदान, गोदान, हेमदान, गजदान देकर सबको संतुष्ट किया गया।

जिस समय रणथंभ गढ़ में हम्मीर का जन्म हुआ उसी समय गजनी में शहाबुद्दीन के पुत्र अलाउद्दीन का तथा मीणा के घर महिमा मंगोल दोनों भाइयों का और गभरू के घर उक्त स्त्री का अवतार हुआ ।

हम्मीर और अलाउद्दीनशाह का वैर—एक समय वसंत ऋतु के आरंभ में अलाउद्दीन ने सहस्रों सैनिक और अमीर उमरावों तथा बेगमों को साथ लेकर शिकार के लिये यात्रा की । उसने एक परम रमणीक वन प्रांत में शिविर लगवा दिए और वह उसी वन में इतस्ततः आखेट करके जंगली जंतुओं के प्राण संहार करने लगा । इसी प्रकार जब वसंत का अंत होकर ग्रीष्म के आतप से भूमि उत्तापित हो रही थी, अलाउद्दीन सब सदोरों सहित शिकार खेलने चला गया । इधर बेगमों भी अपनी सखी सहेली और अगनित खोजाओं को लेकर एक कमलवन-संपन्न निर्मल सरोवर पर जाकर जलक्रीड़ा करने लगीं । दैवयोग से उसी समय सहसा वायु का वेग बढ़ते बढ़ते इतना प्रचंड हो गया कि बड़े बड़े मेघस्पर्शी वृक्ष टूट-टूटकर गिरने लगे; धूलि के आकाश में आच्छादित हो जाने के कारण घोर अंधकार छा गया । इस आकस्मिक घटना से भयभीत होकर सब लोग तीन तेरह होकर अपने अपने प्राणों की रक्षा करने के लिये जहाँ तहाँ भागने लगे, जलक्रीड़ा करती हुई बेगमों में से “रूपविचित्रा” नामक एक बेगम जो कि स्वरूप और गुण में सब बेगमों से श्रेष्ठ थी, भटककर एक ऐसे निर्जन प्रांत में जा पहुँची जहाँ हिंसक जंतुओं के भीषण नाद के सिवाय अन्य शब्द ही न सुन पड़ता था । जिस समय रूपविचित्रा भय एवं शीत के कारण थर थर काँपती हुई प्राणरक्षा के लिये ईश्वर का स्मरण कर रही थी उसी समय महिमा मीर वहाँ आ पहुँचा । जब उसे पूछने पर ज्ञात हुआ कि उक्त स्त्री बादशाह की बेगम है, तब उसने उसे छोड़े पर बैठालकर शिविर में ले जाने का अग्रह किया । इसपर रूपविचित्रा ने मीर महिमाशाह को धन्यवाद देकर कहा कि इस समय मेरा शरीर शीत

से अधिक व्याकुल हो रहा है, इसलिये तू आलिंगन से मुझे संतुष्ट कर । इसपर महिमाशाह ने उत्तर दिया कि एक तो मैं किसी भी पराई स्त्री को अपनी भगिनीवत् मानता हूँ तिसपर आप मेरे स्वामी की स्त्री हैं इसलिये आप मेरी माता समान हैं अतएव मैं यह अकर्तव्य एवं पाप कर्म करने को कदापि सहमत नहीं हूँ । तब रूपविचित्रा ने पुनः उत्तर दिया कि क्या आप यह नहीं जानते कि अपने मुख से माँगती हुई स्त्री को रति-दान न देना भी तो एक ऐसा पाप है कि जिसका कोई प्रायश्चित्त है ही नहीं, और हे वी। युवक, तेरे रूप और गुणों की प्रशंसा पर मोहित हुआ मेरा मन तेरे लिये बहुत दिनों से व्याकुल है । भाग्यवश आज यह संयोग प्राप्त हुआ है । वेगम को ऐसी बातें सुनकर महिमाशाह का भी मन डोल उठा और तब उसने घोड़े को एक समीपवर्ती वृक्ष से बाँध दिया हथियार खोलकर पास रख लिए और वहीं उस स्त्री की मनोकामना पूर्ण करने लगा । उसी समय एक गर्जता हुआ विकराल सिंह सामने आता देख पड़ा । उसे देखकर रूपविचित्रा थर थर काँपने लगी, किंतु महिमाशाह ने उसे धैर्य देकर कहा कि भय मत करो कोई डर नहीं, और कमान को उठाकर एक ही वाण से उसने सिंह को मार डाला ।

उपर्युक्त प्राकृतिक उपद्रव के शांत होते ही सहस्रों मनुष्य वेगम की खोज में इधर-उधर फिरने लगे । उनमें से कोई कोई तो वेगम के पास तक आ पहुँचे और उसे शार्दा शिविर में लिवा ले गए । रूपविचित्रा को पाकर अलाउद्दीन अत्यंत प्रसन्न हुआ जब ग्रीष्म का अंत हो गया और पावस की घनघोर घटाएँ घेर घिरकर आने लगीं तब अलाउद्दीन ने लश्कर-सहित दिल्ली को कूच कर दिया ।

दिल्ली के राजमहल में एक दिन आधीरात को जिस समय अलाउद्दीन रूपविचित्रा के पास बैठा था, उसी समय एक चूहा आ निकला । उसे देखते ही बादशाह का काम-ज्वर जागृत हो गया, किंतु उसने किसी प्रकार सम्भलकर उस चूहे को लक्ष्य करके एक ऐसा

बाण मारा कि वह वहीं मर गया। चूहे को मारकर अलाउद्दीन की प्रसन्नता का अंत न रहा, इसलिये उसने रूपविचित्रा से कहा कि मैं जानता हूँ कि स्त्रियाँ स्वभाव से ही कायर होती हैं, इसलिये मैंने यह पुरुषार्थ प्रगट किया है। यह सुनकर रूपविचित्रा ने मुस्कराकर कहा—पुरुषार्थी मनुष्य वे होते हैं जो इसी अवस्था में सिंह को सहज ही मारकर शोखी की बात नहीं करते। वेगम को ऐसी बातें सुनकर अलाउद्दीन आश्चर्य और क्रोध के समुद्र में गोते खाने लगा, किंतु उसने अपने को सम्हालकर कहा कि जो तू ऐसा पुरुष मुझे बतला दे तो मैं उससे बहुत ही प्रसन्नतापूर्वक मिलूँ अथवा उसने मेरा कैसा ही अपराध क्यों न किया हो मैं सर्वथा उसे क्षमा करूँ। तब वेगम ने अपना और मीर महिमाशाह का भूत वृत्तांत कह सुनाया और कहा कि उस वीर पुरुष के ये चिह्न हैं कि न तो वह उकड़ूँ बैठकर भोजन करता है, न शरणागत को त्यागता है, और न बिना किसी विशेष कारण के झूठ बोलता है। यह सुनते ही बादशाह का क्रोध इस प्रकार बढ़ उठा जैसे सचिकन पदार्थ की आहुति से अग्नि का तेज बढ़ उठता है। अलाउद्दीन ने उसी समय महिमाशाह को बुलाए जाने को आज्ञा दी। इधर रूपविचित्रा भी अपनी मूर्खता पर पछताने लगी। अंत में उसने साहसपूर्वक बादशाह से कहा कि यदि आप उस वीर पुरुष को कुछ दंड देना चाहते हों तो प्रथम मुझे ही मरवा डालिए, क्योंकि इसमें वास्तव में मेरा ही दोष है, न कि उसका। जहाँपनाह क्या यह अन्याय न होगा कि एक निःपराधी पुरुष दंड पावे और अपराधी को आप गले से लगावें? वेगम की ऐसी बातें सुनकर बादशाह ने महिमाशाह के आने पर उससे कहा कि “रे मूढ़ कुमार्गगामी अधम, अब मैं तेरा मुख नहीं देखना चाहता, बस अब यदि तुझे अपने प्राण प्यारे हैं तो इसी समय मेरे राज्य से चला जा।”

मीर महिमा और हम्मीर राव—क्रुद्ध अलाउद्दीन से तिरस्कृत होकर महिमाशाह ने घर आकर अपने सहोदर मीर गभरू से सारा

वृत्तांत कह सुनाया और उसी क्षण परिवार सहित वह दिल्ली से बल दिया। महिमाशाह जिस किसी राजा राव के पास जाता वह उसे शाह अलाउद्दीन का द्वेषी समझकर तुरंत ही अपने यहाँ से विदा कर देता। इसी प्रकार फिरते फिरते जब वह राव हम्मीर की ड्योढ़ी पर पहुँचा और उसने अपने आने की इत्तला कराई तो राव जी ने उसे बड़े ही संमानपूर्वक डेरा दिलवाया और दूसरे दिन अपने दरबार में बुलाया। दरबार में पहुँचकर महिमाशाह ने पाँच घोड़े, एक हाथी, दो मुल्तानी कमान, एक तलवार, दो बाण, दो बहुमूल्य मोती और बहुत से ऊनी वस्त्र राव जी की नजर किए, जिनको राव जी ने सादर स्वीकार कर लिया। उसी समय मीर महिमाशाह ने अपनी बीती भी राव जी से निवेदन करके सविनय कहा—“मैं अलाउद्दीन के विरोधियों में से हूँ। यदि आपमें मेरी रक्षा करने की शक्ति हो तो शरण दीजिए अथवा मुझे भाग्य के भरोसे पर छोड़ दीजिए।” मीर के ऐसे वचन सुनकर हम्मीर ने कहा कि हे मीर मैं तुम्हें अभयदान देकर प्रण करता हूँ कि इस मेरे तनपिंजर में प्राण-पखेरू के रहते एक क्या सहस्रों बादशाह तेरा बाल बाँका नहीं कर सकते—यह रणार्थभ का अभेद्य दुर्ग, ये अपने राजपूत वीर अथवा मैं स्वयं अपने को युद्धाग्नि में आहुति देने को प्रस्तुत हूँ परंतु तुम्हें न जाने दूँगा। इस प्रकार कहकर राव हम्मीर ने उसी समय मीर को पाँच लाख की जागीर का पट्टा कर दिया और तब से मीर आनंद-पूर्वक रणार्थभौर के अभेद्य दुर्ग में रहने लगा।

इधर बादशाह के गुप्तचरों ने उसके संमुख यह समाचार जा सुनाया जिसके सुनते ही अलाउद्दीन पूँछ कुचले हुए काले सर्प की तरह क्रोधित हो उठा; किंतु वजीर बहराम खाँ ने आगत उपद्रव के टालने अथवा मीर महिमा के पक्षपात की इच्छा से दूत को डाँटकर कहा कि जिस मीर को सात समुद्र पार भी ठिकाना देनेवाला कोई नहीं है उसे हम्मीर क्या रखेगा। इसपर दूत ने पुनः कहा कि यदि मेरी बातों में कुछ भी असत्य हो तो मैं उचित दंड पाने के लिये

प्रस्तुत हूँ। दूत की ऐसी दृढ़ता देखकर अलाउद्दीन ने उसी समय आज्ञा दी कि हम्मीर को एक पत्र इस आशय का लिखा जाय कि वह मेरे अपराधी को स्थान न देवे क्योंकि अब तक वह मेरा मित्र है, न कि शत्रु। यदि वह अपने हठ से न हटे तो उसे उचित है कि वह सम्हल जाय, मैं क्षण मात्र में उसके समस्त दर्प और हठ को धूल में मिला दूँगा। अलाउद्दीन की आज्ञा पाते ही एक दूत को बहुत कुछ समझा बुझाकर रणथंभ की तरफ भेजा गया।

दूत ने रणथंभ जाकर बादशाह का पत्र राव हम्मीर जी को दिया और कहा कि आप बादशाह अलाउद्दीन के बल, पुरुषार्थ और पराक्रम एवं अपने भविष्य के विषय में भी खूब सोच-विचारका उत्तर दीजिए। इस पत्र का उत्तर राव जी ने इस प्रकार से लिख कि मैं यह भली भाँति जानता हूँ कि आप दिल्ली के बादशाह हैं; परन्तु मैं जो प्रण कर चुका हूँ, उसे अपने जीवन पर्यंत छोड़ने का नहीं। इस लिये उचित यही है कि आप अब मुझसे संहिमाशाह के विषय में बात मत न करें, और जो कुछ आपसे बन पड़े उसके करने में विलव मत न कीजिए। इस पत्र को पाकर बादशाह का क्रोध और भी बढ़ उठ परन्तु राजमंत्रियों के समझाने-बुझाने पर उसने एक बार फिर राव हम्मीर के पास दूत भेजकर उसके मन की थाह ली। परन्तु उस वीर पुरुष ने बड़े धैर्य और साहस के साथ फिर भी वही उत्तर दिया। राव हम्मीर जी के हठ और साहस के सामने बादशाह की बुद्धि भी चक्कर में पड़ गई, उसे भी अपने आगे पीछे का सोच पड़ गया। उसने विचार किया कि जब राव हम्मीर में इतना साहस है तब उसका कुछ कारण भी होगा, यदि न भी हो तो प्राण की परवाह न करनेवाले के सामने विरले ही माई के लाल खड़े हो सकते हैं। सिंह हाथी से बहुत ही छोटा है किंतु वह अपने साहस और पुरुषार्थ ही से उसे मार डालता है। इसी प्रकार सोच विचार करते हुए बादशाह ने अपने सब दरबारियों को बुलाकर हम्मीर के हठ और अपने कर्तव्य की सूचना दी। तब उसके सब सद्गीरों ने तो हुजूर ही की 'हाँ'

‘हाँ’ मिला दी, सिर्फ एक वृद्ध पुरुष ने कहा कि उस चहुआन के फेर में न पड़िए, रणथंभ पर चढ़ाई करना सहज नहीं है। परंतु वृद्ध की इस बात पर ध्यान भी न दिया गया। अलाउद्दीन ने उसी समय आज्ञा दी कि यथासंभव शीघ्र ही फौज तय्यार की जाय। बादशाह की आज्ञा पाते ही जहाँ तहाँ पत्र भेजकर सोरठ, गिरनार और पहाड़ी देशों के अनेक राजपूत सरदार बुलाए गए। तब तक इधर शाही वैतनिक फौज भी तय्यार हो गई और फौज के लिये आवश्यक रसद वरदास भी इकट्ठी हो गई।

निदान इस प्रकार अरबी, काबुली, रूमी इत्यादि मुसलमान वीरों की सत्ताईस लाख जंगी फौज और अठ्ठारह लाख परिकर कुल ४५ लाख मनुष्य, ५००० हाथी और पाँच लाख घोड़ों की भीड़ भाड़ लेकर अलाउद्दीन ने रणथंभ गढ़ पर चढ़ाई करने को चैत्र मास की द्वितीया संवत् ११३८ को कूच किया। जिस समय यह शाही दल बल राव हस्मीर जी की सरहद्द में पहुँचा उस समय वहाँ की प्रजा में कोलाहल मच गया। अलाउद्दीन के आज्ञानुसार सब सैनिक सिपाही प्रजा को नाना प्रकार के कष्ट देने लगे। इसलिये सब लोग भाग-भागकर रणथंभ के गढ़ में शरण के लिये पुकारने लगे। इसी प्रकार निरपराधी प्रजा का खून करते हुए जब यह दल बल “नल हारणों गढ़” के किले पर पहुँचा तब वहाँ के किलेदार ने तीन दिन पर्यंत शाही फौज का मुकाबिला किया। किंतु अंत में किले पर बादशाही दखल हो गया। इसलिये यहाँ का किलेदार भी रणथंभ को दौड़ गया और उसने बादशाह के अगनित दल बल का समाचार विधिवत् राव हस्मीर जी के संमुख निवेदन किया। इस समाचार के पाते हस्मीर की धंक भृकुटी और भी टेढ़ी हो गई, कमल समान नेत्र अग्नि-शिखा से लाल हो उठे, बाहु और ओठ फड़कने लगे। रावजी का ऐसा दंग देखकर अभयसिंह प्रमार, भूरसिंह राठौर, हरिसिंह चघेला, रणदूला चहुआन और अजमतसिंह इन पाँच सर्दारों ने २०००० फौज लेकर शाही फौज को रास्ते में रोक लिया

और वे ऐसे पराक्रम से लड़े कि बादशाही सेना के पैर उखड़ गए और बड़े बड़े अमीर उमरा जहाँ तहाँ भागने लगे। उस समय अलाउद्दीन के वजीर महिरज खाँ ने कहा—“मैंने पहले ही अर्ज किया था कि एक तो राजपूत अपनी बात रखने के लिये जान देने की कभी परवाह नहीं करते, फिर भी उस पहाड़ी किले पर फतह पाना बहुत ही मुश्किल काम है”। किंतु बादशाह ने फिर भी उसकी बात यों ही टाल दी और आगे कूच करने की आज्ञा दी। इस युद्ध में अलाउद्दीन के ३०००० सिपाही, डेढ़ सौ घोड़े और कई एक अमीर उमरा काम आए किंतु राव हम्मीर के १२५ सिपाही और १० सर्दार खेत रहे और अभयसिंह प्रमार के सीस में बहुत गहरे गहरे २१ घाव लगे।

अलाउद्दीन ने रणथंभ गढ़ के पास पहुँचकर चारों तरफ से किले को घेरकर फौज का पड़ाव डाल दिया और फिर से एक दूत के हाथ पत्र भेजकर राव हम्मीर जी से कहला भेजा कि अब भी मेरे अपराधी मीर महिमाशाह को मेरे पास हाजिर करके मुझसे मिलो तो मैं तुम्हारे अपराध को क्षमा कर दूँगा। इस बार राव जी ने जो उत्तर दिया वह इस प्रकार था—“मैं जानता हूँ तू बादशाह है, परंतु मैं भी उस चहुआन कुल में से हूँ जिसने सदैव मुसलमानों के दाँत खट्टे किए हैं। ख्वाजा मीराँ पीर का एक लाख अस्सी हजार दल बल अजमेर में चहुआनों ने ही खपाया था। पुनः बीसलदेव जा ने सौनगरा का शाका किया, उसी वंश के पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन का सात बार पकड़कर छोड़ दिया। वस मैं उसी चहुआन कुल में हूँ और तू भी उसी पीर भर्दे औलिया खानदान का मुसलमान है। देख अब किसकी टेक रहती है। हे यवनराज, तू निश्चय रख, मेरी टेक यह है कि सूर्य चाहे पूर्व से पश्चिम में उगने लगे, समुद्र मर्यादा छोड़ दे, शेष पृथ्वी को त्याग दे, अग्नि शीतल हो जाय, परंतु राव हम्मीर का अटल प्रण नहीं टल सकता। देव अलाउद्दीन, संसार में जो जन्म लेता है वह एक दिन मरता अवश्य है; अथवा जिसकी उत्पत्ति है उसका नाश होता ही है। फिर इस क्षणभंगुर शरीर के

लिये शरणागत को त्यागकर अपने कुल में मैं कलंक नहीं लगाना चाहता । तुझे कितना दर्प है जो अपने सामने दूसरे को वीर नहीं गिनता । इस पृथ्वी पर रावण, मेघनाद सरीखे अभिमानी और अतुल बलशाली वीर पानी के वबूले की तरह बिला गए । यवनराज ! मनुष्य नहीं रहता, परंतु उसके कर्तव्य की कहानियाँ अवश्य रहती हैं । अतएव अब तुझे जो सूझे सो कर । मैं भी सब तरह से तैयार हूँ ।”

अलाउद्दीन के दूत को इस प्रकार उत्तर देकर राव हम्मीर जी शिवालय में जाकर शिवार्चन करने लगे । धूप, दीप नैवेद्य संयुक्त विधिवत् पूजा करके जिस समय राव जी ध्यानमग्न थे उसी उसी समय शिवालय में आकाशवाणी हुई कि हे हम्मीर तुमसे और अलाउद्दीन से १२ वर्ष पर्यंत संग्राम होगा । तत्पश्चात् आपाढ़ सुदी ११ को तुम्हारा शाका पूर्ण होगा जिससे संसार में चिरकाल तक तुम्हारा यश बना रहेगा । शिवजी से इस प्रकार वरदान पाकर राव जी ने प्रसन्न होकर अपने समस्त शूर वीर सरदारों को युद्ध के लिये सन्नद्ध होने की आज्ञा दी । उसी समय हम्मीर के चाचा राव रणधीर ने, जो कि “छाड़गढ़” के किले के स्वामी थे, हम्मीर से कहा कि श्रीमान् क्षमा करें इस समय मेरे हाथ देखें ।

इधर हम्मीर जी का पत्र पाते ही अलाउद्दीन लाल पीला सा हो उठा और उसने उसी समय रणथंभ के किले पर चारों ओर से गोले और बाणों की वर्षा करने की आज्ञा दी । बादशाह की आज्ञा पाते ही मुसलमान सेनानायक महम्मद अली रणथंभ के अजेय दुर्ग को पाने के लिये प्रयत्न करने लगा । इधर से राव रणधीर ने भी किले की बुर्जी पर से अग्निवर्षा करने की आज्ञा दी और आप कुछ सैनिकों सहित मुसलमानी सेना में वह इस प्रकार धँस पड़ा जैसे भेड़ों के समूह में भेड़िया धँसता है । निदान पहली वरणी राव रणधीर और मुहम्मद अली की हुई जिसे राव जी ने एक ही हाथ में दो कर दिया । यह देखकर उसका पीठि-नायक अजमत खाँ राव जी के

संमुख आया। किंतु राव रणधीर ने उसे भी मार गिराया। अजमत खाँ के गिरते ही मुसलमानी सेना के पैर उखड़ गए। इस युद्ध में मुसलमान सेना के अस्सी हजार अस्त्रधारी खेत रहे और राव रणधीर के केवल एक हजार जवान मारे गए। मुहम्मद मीर के मारे जाने पर जब मुसलमानी फौज भागने लगी तब अलाउद्दीन ने वादित खाँ को सेनानायक बनाया। वादित खाँ ने बड़े धैर्य और दृढ़ता से उत्तेजनाजनक वाक्य कहकर, बिखरी हुई फौज को बटोरकर, राजपूत वीर राव रणधीर का सामना किया किंतु अंत में उसे भी भूत सेनानायकों के भाग्य में भाग लेना पड़ा।

वादित खाँ के मरते ही सारी सेना में कुहराम मच गया। अलाउद्दीन स्वयं निस्तेज होकर पोर पैगंबरों को पुकारने लगा। तब वजीर महम्मद खाँ ने कहा कि इस प्रकार संमुख युद्ध करके जय पाना तो कठिन है। इसलिये कुछ सेना यहाँ छोड़कर छाड़गढ़ के किले पर चढ़ाई की जाय। उस किले में राव रणधीर के लोग रहते हैं। निदान अपने परिवार पर भोड़ पड़ी देखकर यदि राव रणधीर शरण में आ जाय तो फिर अपनी जय होने में कोई संदेह नहीं है। निदान वजीर की बात मानकर वादशाह ने वैसा ही किया; किंतु पाँच वर्ष व्यतीत हो गया और छाड़गढ़ का किला हाथ न आया। वरन् इसी में एक नवीन बात यह निकल पड़ी कि दिन भर तो हम्मीर जी युद्ध करते और रात को रणधीर का धावा पड़ता जिससे शाहा सेना अत्यंत व्याकुल हो उठी। बड़े बड़े अमीर उमरा मिट्टी मोल मारे जाने लगे। अधिक क्या, आरंभ से अंत तक जितनी लड़ाइयाँ हुईं उन सब में राजपूत वीरों की ही जय हुई। निदान जब अलाउद्दीन की तरफ के अब्दुलकरीम, करम खाँ, यूसफ जंग इत्यादि बड़े बड़े बुद्धिमान् योद्धा सर्दार मारे गए और राव रणधीर जी तथा हम्मीर जी का बाल भी न बाँका हुआ, तब अलाउद्दीन घबरा उठा और फिर से अमीर उमरावों की सभा करके अपने उद्धार का उचित उपाय विचारने लगा।

इसी समय राव रणधीर जी ने हम्मीर जी से कहा कि यदि चित्तौर से दोनों कुमार बुला लिए जायँ तो अच्छा हो। इसपर राव जी ने भी “अच्छा” कह दिया। तब राव रणधीर ने रणथंभ का सब समाचार लिखकर चित्तौर भेज दिया। उक्त समाचार के पाते ही दोनों राजकुमार तीस हजार राठौर, आठ हजार चहुआन, और पाँच हजार प्रमार राजपूतों की सेना लेकर रणथंभ को चले आए। दोनों राजकुमारों को देखकर राव हम्मीर जी ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें गले लगा लिया और मीर महिमा को शरण देने के कारण अलाउद्दीन से रार बढ़ जाने का हाल भी विधिवत् वर्णन कर सुनाया, जिसे सुनते ही दोनों राजकुमारों का मुख प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठा। उन्होंने वीर रस में उन्मत्त होकर मदांध मृगराज की भाँति भूमते हुए राव जी से कहा कि अब तक आपने परिश्रम किया अब तनिक हमारा भी पराक्रम देख लीजिए। यों कहकर दोनों राजकुमार रनिवास में गए। राव हम्मीर की रानी आसुमती के चरण छूकर वे बोले कि हे माता आप कृपा कर हमारे मस्तक पर मीर बाँधकर हमें युद्ध करने का आशीर्वाद दोजिए। दोनों राजकुमारों के ऐसे वचन सुनकर आसुमती ने भी सुतस्नेह से सने हुए वाक्यों से संबोधन करते हुए उन्हें कलेजे से लगा लिया और अपने हाथों उनके शोश पर मीर बाँधा और केशरी वाना पहिनाकर उन्हें युद्ध में जाने को विदा किया।

जिस समय आसुमती कुमारों का शृंगार कर रही थी उस समय छाड़गढ़ के किले में इस प्रकार घनघोर रव हो रहा था कि जिससे दिशाओं के दिग्पाल चौकन्ने हो रहे थे। यह खरभर देखकर अलाउद्दीन ने अपने मंत्री से पूछा कि आज छाड़गढ़ में यह उत्सव किसलिये हो रहा है। तब एक अमीर ने उत्तर दिया कि राव हम्मीर जी के छोटे भाई के पुत्रों ने स्वयं युद्ध के लिये मिर पर मीर बाँधा है। उसी के उत्सव में यह गान-वाद्य हो रहा है। यह सुनकर बादशाह ने जमाल खाँ को बुलाकर कहा कि तुमने ही पृथ्वीराज की कैद

किया था; आज भी अगर तुम दोनों राजकुमारों को पकड़ लोगे तो मेरी अत्यंत प्रसन्नता के पात्र होंगे। इस प्रकार समझा-बुझाकर उस दिन के युद्ध के लिये अलाउद्दीन ने मीर जमाल को सेनानायक बनाया।

इधर से दोनों राजकुमार केसरिया बाना पहिने, सीस पर मुकुट, हाथों में रणकंकण बाँधे अपने अपने तेज तुरंगों पर सवार सोलह हजार राजपूतों की सेना के बीच में ऐसे भले मालूम देते थे मानों रणबाँकुरे देवताओं के दल में इंद्र और कुबेर सुशोभित हो रहे हों। दोनों वीर सेना सहित उज्ज्वल नेजे और खड्ग चमकाते हुए मुसलमान सेना में इस प्रकार धँस पड़े जैसे काले काले बादलों में बिजली विलीन हो जाती है। इधर अलाउद्दीन से उत्तेजित किए हुए यवन-दल ने उन राजकुमारों को घेर लिया और जमाल खाँ बड़े वेग से उन दोनों राजकुमारों पर दूटा। वे वीर राजकुमार भी बड़ी धीरता से उसका सामना करने लगे। यह देखकर राव हम्मीर जी ने वीर शंखोदर को कुमारों की सहायता के लिये भेजा। इसपर इधर से अरबी फौज का धावा हुआ। राजपूत और मुसलमान सेना में इस प्रकार विकट मार होने लगी कि किसी को अपना बिगाना न सूझता था। इसी समय जमाल खाँ ने अपना हाथी राजकुमारों के सामने बढ़ाया। तब कुमार ने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि एक ही हाथ में लोहे का टोप कटते हुए मीर जमाल की खोपड़ी के दो टुक हो गए। जमाल खाँ को गिरता देखकर वालन्न खाँ ने धावा किया। इधर से वीर शंखोदर ने बढ़कर उसका मुख रोका। निदान सायंकाल तक वरावर लोहा भरता रहा। दोनों कुमार अपनी समस्त सेना के सहित स्वर्गगामी हुए। इस युद्ध में मुसलमानी फौज के ७५००० योधा खेत रहे।

इस प्रकार दोनों राजकुमारों के मारे जाने पर राव रणधीर ने क्रोधित होकर किले पर से आग बरसाना आरंभ कर दिया। तब बादशाह ने कहला भेजा कि, आप क्यों जान-बूझकर जान देने पर उतारू हुए हैं, आपके लड़कर मर जाने से इस भगड़े का अंत न

होगा । यदि आप राव हम्मीर जी को समझाकर मीर महिमा को मेरे पास भेजवा दें तो आप वा राव हम्मीर जी दोनों सुख से राज्य करें और हम दिल्ली चले जायँ । किंतु बादशाह के पत्र का राव रणधीर ने केवल यही उत्तर दिया कि जूत्रियों का यह धर्म नहीं है कि विषय-सुख-भोग की लालसा अथवा मृत्यु के डर से वे अपने धारण किए हुए धर्म को त्याग दें । राव रणधीर की ओर से इस प्रकार कोरा उत्तर पाकर अलाउद्दीन ने अपनी फौज को भी छाड़ के किले पर आक्रमण करने की आज्ञा दी । अलाउद्दीन की आज्ञा पाते ही मुसलमानी फौज ने टिड्डी दल की तरह उमड़कर किले को चारों ओर से घेर लिया और वे किले पर से चलते हुए गोले, गोली, बाण बछ्छों की विषम बौछार की कुछ भी परवाह न करके किले पर चढ़ दौड़े । मुसलमानी सेना जब किले में धँस पड़ी तब राजपूत लोग सर्वथा प्राण का मोह छोड़कर तलवार से काम लेने लगे । दोनों में अग्न्यास्त्रों का संचालन विलकुल बंद हो गया । केवल तबल, तलवार, वरछी, कटार, सेल से काम लिया जाने लगा । इसी रैलापेल में बादशाह के निज पेशकार (बगली) ने राव हम्मीर की तलवार के सामने आने की हिम्मत की किंतु वीर रणधीर के एक ही वार में उसके जीवन का वारा न्यारा हो गया, इसलिये उसके सहकारी रूसी सर्दार ने अपने ५० बलवान् योद्धाओं सहित रणधीर जो को घेर लिया । राव रणधीर ने इन पचासों सिपाहियों को मारकर रूसी सरदार को भी दो टुक कर दिया । इसी प्रकार मार काट होते हुए राव रणधीर सहित जितने राजपूत वीर उस किले में थे सबके सब मारे गए और छाड़गढ़ का किला बादशाह के हाथ आया । इस युद्ध में शाही फौज के दो बड़े बड़े सर्दार और एक लाख रूसी सैनिक खेत रहे और राव रणधीर के साथी ३०००० राजपूत काम आए । यह छाड़गढ़ का अंतिम युद्ध चैत्र सुदी ९ शनिवार को हुआ । बीस हजार केवल राजपूत मारे गए और एक हजार राजपूतनी स्त्रियाँ स्वयं जलकर भस्म हो गईं ।

छाड़गढ़ का किला फतह करके अलाउद्दीन ने अपने लश्कर की बाग रणार्थभ गढ़ की ओर मोड़ी और कुँवार सुदी ९ शनिवार को किले के चारों तरफ घेरा डालकर दूत के हाथ राव हस्मीर जी के पास कहला भेजा कि अब भी यदि महिमाशाह को मेरे पास भेज दो तो मैं बिना किसी रोक टोक के दिल्ली चला जाऊँ। दूत की ऐसी बातें सुनकर राव हस्मीर जी ने कहा—रे मूर्ख दूत, मैं तुमसे क्या कहूँ, तेरे स्वामी अलाउद्दीन का मुझसे बार बार ऐसा कहला भेजना उचित नहीं है। विग्रह का निरधारण किया जाता है तो केवल इसलिये कि जिसमें बंधु बांधवों का रक्तपात न हो किंतु अब मुझे इस बात का सोच बाकी न रहा। राव रणधीर सा चाचा और कुलदीपक दोनों कुमार भी जब इस युद्धाग्नि में अपने प्राण होम कर चुके तब मुझे अब सोच ही किस बात का है। जा तू अपने स्वामी से कह दे कि अब कभी मेरे पास सँदेसा न भेजे। दूत ने वहाँ से आकर राव जी के वचन ज्यों के त्यों बादशाह से कह सुनाए। यह सुनकर अलाउद्दीन ने उसी समय गोलंदाजों को बुलाकर हुक्म दिया कि यहाँ से ऐसा गोला मारो कि किले के बुर्जों पर रखी हुई तोपें ठस होकर शांत हो जायँ। गोलंदाजों ने बादशाह की आज्ञा पालन करने के लिये यथासाध्य चेष्टा की किंतु वह निष्फल हुई। साथ ही किले पर से उतरे हुए गोलों की मार से लश्कर की बहुत सी तोपें ठस होकर चरख पर से गिर पड़ीं। यह देखकर बादशाह की बुद्धि किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। वह नाना प्रकार के तर्क वितर्क करता हुआ अपने कर्तव्य पर पछताने लगा। यह देखकर उसके वजीर ने उसे समझाया और रात्रि को किले की खाई पर पुल बाँधकर किले पर चढ़ जाने का मत पक्का किया, किंतु पानी की बाढ़ अधिक होने के कारण मुसलमान सेना को उससे भी हारना पड़ा। तब तो बादशाह अखंड रूप से डटकर रह गया और किले पर आक्रमण करने के लिये उपयुक्त समय आने की प्रतीक्षा करने लगा।

एक दिन राव हम्मीर जी ने किले के सबसे ऊँचे हिस्से पर सभामंडप सजाया। उस सभामंडप में सगे संबंधियों सहित बैठा हुआ राव हम्मीर ऐसा ज्ञात होता था जैसे देवताओं के बीच में इंद्र शोभित होता है। स्वर्ण सिंहासन पर बैठे हुए राव हम्मीर जी के संमुख चंद्रकला नामक वेश्या नृत्य कर रही थी। चंद्रकला के प्रत्येक गीत से अलाउद्दीन की अपमानसूचक ध्वनि निकलती थी। साथ ही इसके बादशाह की ओर पदाघात करके उसने ऐसा विलक्षण कटाक्ष किया कि जिसे देखकर रावजी की सब सभा में आनंद सूचक एक बड़ी भारी ध्वनि हुई। यह देखकर अलाउद्दीन से न रहा गया। तब उसने कहा कि यदि कोई इस वेश्या को बाण से मारकर राव हम्मीर के रंग में भंग कर दे तो मैं उसे बहुत कुछ पारितोषिक दूँ। यह सुनकर मीर महिमा के भाई मीर गभरू ने कहा कि मैं श्रीमान् की आज्ञा का प्रतिपालन कर सकता हूँ। किंतु स्त्री पर शस्त्र चलाना वीरों का काम नहीं है। इसीलिये उस वेश्या को जीव से न मारकर केवल उसका अहित किए देता हूँ। यों कहकर मीर गभरू ने एक ऐसा बाण मारा कि जिससे उस वेश्या के पांव में ऐसी चोट लगी कि वह तुरत लोट पोट हो गई। वेश्या को गिरते देखकर राव जी आश्चर्य और क्रोध में आकर चारों ओर देखने लगे। तब मीर ने हाथ बाँधकर अर्ज किया कि यह बाण मेरे भाई मीर गभरू का चलाया हुआ है। श्रीमान् इस पर किसी प्रकार का खेद न करें और तनिक मेरा पराक्रम देखें। यह कहकर मीर महिमाशाह ने एक ऐसा बाण मारा कि अलाउद्दीन के सिर पर से उसका मुकुट उड़ गया।

यह देखकर वजीर महरमखाँ ने अलाउद्दीन से कहा कि अब यहाँ ठहरना उचित नहीं है। इस महिमा के संचालन किए हुए बाण से यदि आप वच गए तो यह उसने पहले निमक का निर्वाह किया है। यदि वह हम्मीर का हुक्म पाकर अब की जो लक्ष्य कर के बाण मारे तो आपके प्राण वचने

कठिन हैं, अतएव मेरा तो यही विचार है कि अब यहाँ से दिल्ली को कूच कर जाना ही भला है। वजीर महरमख़ाँ की बात मानकर बादशाह ने उसी समय कूच की तय्यारी करने की आज्ञा दी। इधर जिस समय सारे लश्कर में चला-चल का सामान हो रहा था उसी समय राव हम्मीर जी के सामान के कोषाध्यक्ष सुरजनसिंह ने आकर बादशाह के पैरों पर शिर धर दिया और कहा कि यदि श्रीमान् मुझे छाड़गढ़ का राज्य दे देना स्वीकार करें तो मैं सहज ही मैं रणथंभ के अजेय दुर्ग पर आपकी फतह करवा दूँ। इस पर अलाउद्दीन ने उसे बहुत कुछ ऊँची नीची दिखाकर कहा—सुरजनसिंह यदि मैं रणथंभ पर विजय पा जाऊँ तो छाड़ का राज्य तो दूँगा ही इसके अतिरिक्त तुम्हें इस प्रकार संतुष्ट करूँगा कि जिसमें तुम्हारा मन हर तरह से राजी हो जाय।

बादशाह की बातों में आकर कृतघ्न सुरजन ने रणथंभ को फतह करवाने का बीड़ा उठा लिया। उसने उसी समय राव हम्मीर जी के पास जाकर कहा कि “श्रीमान् रसद वरदास्त और गोली वारूद के खजाने चुक गए हैं, इसलिये किले में रहकर अपने हठ एवं मान मर्यादा की रक्षा होनी कठिन है, इसलिये वचन मानकर महिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेजकर उससे सुलह कर लीजिए।” सुरजन की बात पर राव हम्मीर जी ने विश्वास न किया और आप स्वयं “जौरा भौरा”^१ (खजाने) के पास जाकर जाँच की तो सुरजन का कहना वास्तव में सत्य पाया। तब तो राव जी को अत्यंत शोक और आश्चर्य

१ किंतु “जौरा, भौरा” (खजाने) वास्तव में खाली नहीं हुए थे। उनमें का सब माल सामान नीची तह में ज्यों का त्यों भरा पड़ा था। राव हम्मीर जी को धोखा देने के लिये सुरजन ने ऊपर से सूखा चमड़ा डलवा दिया था जो कि पत्थर डालने पर खड़क उठा।

ने दबा लिया । यह देखकर महिमाशाह ने कहा कि यदि श्रीमान् आज्ञा दें तो अब मैं स्वयं अलाउद्दीन से जा मिलूँ जिससे वह दिल्ली चला जाय । यह सुनते ही राव जी के नेत्रों से आग की चिंगारियाँ निकलने लगीं । उन्होंने कहा—महिमाशाह क्या फिर यह समय आवेगा ? यदि मैं तुम्हें शाह के पास भेजकर रणथंभ का राज भोग करूँ तो संसार मुझे क्या कहेगा ? क्या इस कायर कर्तव्य से मेरा क्षत्रिय कुल सदैव के लिए कलंकित न होगा ? अब तो जो कुछ होना था हो चुका ।

इधर सुरजन ने बादशाह के पास आकर कहा कि मैं एक ऐसा अद्भुत कुचक्र चला चुका हूँ कि इस समय आप जो कुछ कहेंगे राव जी तुरंत स्वीकार कर लेंगे । यह सुनकर अलाउद्दीन ने हम्मीर जी के यहाँ कहला भेजा कि वह अपनी देवल रानी की बेटी चंद्रकला को मुझे देकर मुझसे क्षमाप्रार्थी हो तो मैं उसपर दया कर सकता हूँ । यह सुनते ही राव हम्मीर जी के क्रोध और शोक का ठिकाना न रहा । उन्होंने इसके उत्तर में अलाउद्दीन के पास कहला भेजा कि यदि उसे अपनी जान प्यारी है तो चार पीरों सहित अपनी प्यारी चिमना वेगम को मेरे पास भेजकर आप दिल्ली चले जावें अन्यथा मेरे हठ को हटाने की आशा न करें । हम्मीर जी के यहाँ से इस प्रकार कड़ाचूर उत्तर पाकर बादशाह ने कुपित होकर सुरजन से कहा—क्यों रे भूठे ! तू यही कहता था कि राव हम्मीर अब आजिज आ जायगा । इस अपमान से उस दुष्ट ने कुपित होकर कहा कि अच्छा अब देखिए क्या होता है ।

इधर राव जी बादशाह के दूत को उपर्युक्त उत्तर देकर तन क्षीण मन मलिन शोकातुर एवं व्यग्रचित्त अवस्था में रनवास में गए और रानी जी से उक्त वीतक की वार्ता करने लगे—“हे प्रिये ! अब क्या करूँ ? क्या महिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेजकर ही अपनी प्रजा की रक्षा करूँ ?” रावजी के ऐसे वचन सुनकर रानी ने क्रोध, शोक, लज्जा एवं आश्चर्य से भरे कंठ कहा—“हे राजा,

वीरकुल-शिरोमणि ! आज आपको बादशाह से लड़ते लड़ते १२ वर्ष हो गए । आज आपको यह कुलधर्म के विरुद्ध सलाह देने वाला कौन है ? हे प्राण प्यारे यह संसार सब भूठा है, अतएव इस संसार चक्र से संचालित दुःख और सुख भी अनित्य हैं, परंतु एक मात्र कीर्ति ही ऐसी वस्तु है कि जो इस संसार के अप्रतिहत चक्र से कुचली नहीं जा सकती । हे राजन् ! अपने हाथ से शीश काटकर देनेवाले राजा जगदेव, विद्याविशारद राजा भोज, परदुःखभंजन राजा विक्रमादित्य, दानवीर कर्ण इत्यादि कोई भी इस संसार में अब नहीं हैं परंतु उनके यश की पताका अब तक अक्षय स्वरूप से उड़ रही है और सदा उड़ेगी । महाराज ! धन यौवन सदैव नहीं रहता; मनुष्य ही क्या, आकाश में स्थित सूर्य और चंद्रमा भी एकरस स्थिर नहीं रहते । जीवन, मरण, सुख, दुःख यह सब होनहार ही है तब अपने कर्तव्य से क्यों चूकिए । श्रीमान् आप इस समय अपने पूर्व पुरुष सोमेश्वर, पृथ्वीराज, जैतराव इत्यादि की वीरता और उनकी अक्षय कीर्ति का स्मरण कीजिए और तन धन सब कुछ जाय तो जाय परंतु शरणागत महिमाशाह और अपने धर्म हठ को न जाने दीजिए ।”

रानी की इस प्रकार उच्च उत्तम शिक्षा सुनकर राव जी के मुखारविंद पर प्रसन्नता की झलक पड़ गई । उन्होंने कहा “धन्य प्रिये ! वस मैं इतना ही चाहता था, अब मैं निश्चिततापूर्वक रण में प्राण दे सकता हूँ ।” इस बात के सुनते ही रानी मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी, फिर कुछ सम्हलकर मधुर स्वर से बोली—“स्वामी, आप युद्ध कीजिए मैं आपसे पहले ही शाका करूंगी ।”

रानी जी से इस प्रकार बातें करके राव जी ने दरबार में आकर राज्य कोष को खोलवाकर याचकों को अयाची करने की आज्ञा दी और सब राजपूत सूर सामंतों के सामने “चतुरंग” से कहा कि अब मैं अपना कर्तव्य पालन करने पर उद्यत हूँ, रणथंभ की प्रजा और राजकुमार ‘रतन’ की रक्षा आप कीजिए । उत्तम होगा कि आप

रतन को लेकर चित्तौर चले जायँ । इसपर यद्यपि चतुरंग ने आना-कानी करके अपने को भी राव जी के साथ युद्ध में शामिल रखना चाहा किंतु रावजी के आग्रह करने पर उसे वही मानना पड़ा अर्थात् ५००० सैनिकों सहित 'रतन' को लेकर वह चित्तौर की तरफ गया ।

जब चतुरंग अल्हणपुर तक पहुँच गए तब राव हम्मीर जी ने अपने सब सर्दारों से कहा कि "अब धर्म के लिये प्राण न्यौछावर करने का समय निकट आ गया है अतएव जिनको मृत्यु प्यारी हो वे मेरे साथ रहें और जिन्हें जीवन प्यारा हो वे खुशी से घर चले जायँ । राव हम्मीर जी के इस प्रकार कह चुकने पर मीर महिमा-शाह ने सब सूर वीर सर्दारों की तरफ से प्रतिनिधि स्वरूप हो अर्ज किया—हे राव जी ! ऐसा कौन पुरुष कुलांगार होगा जो आपको इस समय रणथंभ में छोड़कर अपने जीवन का सुख चाहेगा । देवता, मनुष्य, शूरवीर पुरुष किसी का भी जीवन स्थिर नहीं है । एक दिन मरेंगे सब, तब फिर ऐसे सुअवसर की मृत्यु को कौन छोड़े ? मरने से सब डरते हैं, संसार में केवल सती स्त्री और शूर वीर पुरुष ही ऐसे हैं जो मृत्यु को सदैव आलिङ्गन करने के लिये प्रस्तुत रहते हैं एव उन्हें मृत्यु में ही आनंद आता है ।

दूसरे दिन अरुणोदय होते ही राव जी ने शौचादि से निश्चित हो गंगाजल से स्नान कर शरीर में सुगंधित गंधादि लेपन कर केसर सने पीले वस्त्र धारण किए, माथे पर रत्नजटित मुकुट बाँधा और शूर वीरों के छत्तीसों बाने (हरवे) लगाकर प्रसन्नतापूर्वक वे ब्राह्मणों को संमान सहित दान देने लगे । इधर दात की बात में राठौड़, कूरम, गौड़, तोंवर, पड़िहार, पारैच, पुंढीर, चहुआन, यादव, गहिलोत, सेंगर, पँवार इत्यादि जाति के कुलीन शूर वीर राजपूत लोग अपने अपने आते बाने से सजे हुए रणरंग में रत मदमाते गयंद की भाँति आकर राव जी के पास इकट्ठे होने लगे । उन आगत शूर वीर राजपूतों के माथे पर टेढ़ी पगड़ी, ललाट में केशर सौंघे गंध की त्रिपुंड, गले में तुलसी और रुद्राक्ष की माला, सिर पर लोहे के टोप,

शरीर पर भिलम-बक्कर, हाथों में दस्ताने, और यथा अंग छत्तीसों वाने सजे हुए थे। वे वीर योद्धा लोग साक्षात् शिव के गण से सुशोभित होते थे। इधर तो इन सब शूर वीरों सहित राव जी गणेश, शिव, भगवती इत्यादि देवताओं का पूजन और परिक्रमा कर रहे थे उधर राजमहल के द्वार पर मेघ के समान बड़े दुरद दंतारे मतवारे हाथियों और वायु के वेग को उल्लघन करनेवाले घोड़ों का घमासान जम रहा था। सूर्य निकलते निकलते राव हम्मीर जी अपने वीर योद्धाओं सहित इष्टदेव का स्मरण करते हुए राजमहल से बाहर हुए। राव जी के आते ही सब सेना व्यूहबद्ध हो गई। सबसे आगे फड़वाली साक्षात् काल की सी बिकराल कालिका का अवतार तोपें, उनके पीछे हथनार ऊँटनार जंघुर, तिनके पीछे हाथी, तिनके पीछे ऊँट, घड़मवार और फिर तुक्कदार पैदल इत्यादि थे। उस समय बाल सूर्य की सुनहरी किरणों के पड़ने से सब साज बाज में सुसज्जित चंचल घोड़े और गंधमय गंडस्थलवाले मतवाले हाथी बड़े ही भले मालूम होते थे। जिस समय राव जी की सवारी संपूर्ण रूप से सुसज्जित हो गई तो नौबत, नगाड़े, शंख, सहनार्ड, रणतूर, शृंगी, डफ इत्यादि रण-वाद्य बजने लगे, कड़खैत उच्च स्वर में कड़खे गा-गाकर महज कठोरहृदय शूर वीरों के चित्त को उत्कर्ष देने लगे। इधर ये शूर वीर लोग उमंग में भरे हुए आगे बढ़ते जाते थे उधर आकाश में अप्सराओं के वृंद इस समर में शत्रु के संमुख प्राण को परित्याग करनेवाले वीरों को अपने हृदय का हार बनाने के लिये आकाश मार्ग से आ रही थीं। जिस प्रकार ये वीर लोग इधर भिलम, टोप, बख्तर, दस्ताने, कलगी, तुरी, सरपेच, तीर, तुक्क, तेगा, तलवार, तबल, तोमर, तौरा नेत, करछी, बिछुआ, बाँका, छुरी, पिस्तौल, पेश-कब्ज, कटार, परिच, फरसा, दाव इत्यादि अस्त्र शस्त्र से सजे हुए थे उसी प्रकार उस तरफ सर्वांगसुंदरी नवयौवना अप्सराएँ भी सीसफूल, दावनी, आड़, ताटंक, हार, बाजूबंद, जोसन, पहुँची, पाजेब इत्यादि गहने और नाना प्रकार की रंग विरंगी कंचुकी, चोली, चौबंद

इत्यादि वस्त्रों को धारण किए हुए आकाश-मार्ग में स्थित थीं ।

इस प्रकार जंग-रंगराते मदमाते राजपूत इधर से बड़े और उधर से इसी तरह बाणों की बौछार करती हुई मुसलमान सेना भी पहाड़ों की कंदराओं में से टिड्डी सी निकल पड़ी । दोनों सेनाओं में प्रथम तो धुँआधार तोप, तुक्क, भौका, पिस्तौल इत्यादि अग्न्यास्त्रों से वर्षा हुई, परंतु जब वीरत्व के उत्साह से प्रोत्साहित हुई दोनों सेनाएँ समुद्र की तरह उमड़कर एक दूसरे से खिल्लमिल्ल हो गईं उस समय एकदम तेगा, तलवार, तबल, छुरी, बिछुआ, कटार, गुर्ज, फर्सा इत्यादि की मार होने लगी । क्षण मात्र में वह आमोदमय रणभूमि साक्षात् करुणा और वीभत्स रस का समुद्र हो गई । जहाँ तहाँ घायल और मृतक शूर वीर सिपाहियों के शवों के ढेर के ढेर नजर आते थे । मृतक हाथी, घोड़ों के शव जहाँ तहाँ चट्टानों से दीखते थे और बहुतेरे नर-देह-रक्त की नदी में जहाँ तहाँ बहे जाते थे । उन पर बैठकर मांस भक्षण करते हुए कौवे, चील्ह, गिद्ध, कुही, बाज, कुरा और शृगाल इत्यादि जंतु अत्यंत भयानक रव मचाते थे । इस प्रकार कठिन मार मचने पर मुसलमान सेना के पैर उखड़ पड़े । यह देखकर बादशाह ने अपनी सेना को ललकारते हुए वजीर से कहा कि अब क्या किया जाय । तब वजीर ने कहा कि इस समय अपनी सेना की चार अनी करके प्रत्येक का भार दीवान, वाँके बगसी, मैं और आप स्वयं लेकर चार तरफ से आक्रमण करें, तब ठीक होगा । बादशाह ने उसकी संमति मानकर वैसा ही किया । इस वार उपयुक्त व्यूहबद्ध होने के कारण मुसलमान सेना ने बड़ी वीरता दिखाई । बादशाह ने पुकारकर कहा कि मेरा जो उमराव हम्मीर को पकड़कर लावेगा उसको बारह हजार की जागीर और दरबार में सबसे बड़ा मंसब मिलेगा । यह सुनकर अब्दुल नामक एक उमराव अपनी सेना सहित बड़े वेग से आगे बढ़ा । इधर राजपूत सेना ने उसके रोकने का यथासाध्य प्रयत्न किया, इस होड़ हौस में बड़ी कड़ी मार हुई, दोनों ओर के कई क़मंद खड़े हुए । जब राव जी की तरफ

के २०० सवार, तीस हाथी और ६०० वीर जोधा काम आ चुके तब शेख महिमाशाह ने राव हम्मीर को सिर नवाकर कहा कि श्रीमान अब बहुत हुआ। अब जरा मेरा भी पराक्रम देखिए। यह कहता हुआ वह बीच समरभूमि में आ खड़ा हुआ और बादशाह को संबोधन करके बोला—मैं महिमाशाह जो आपका अपराधी हूँ यह खड़ा हूँ अब पकड़ते क्यों नहीं ! अथवा जो कुछ करना हो करते क्यों नहीं ? अब अपनी इच्छा को पूर्ण कीजिए।

महिमाशाह के ऐसे सगर्व वचन सुनकर अलाउद्दीन ने खुरासान खाँ की ओर देखकर कहा कि जो कोई इस शेख को जोड़ित पकड़ लावेगा उसे तीस हजार की जागीर, बारह हजारी मंसब, नौवत निशान और एक तलवार दूँगा। इस पर सद्की फौज के साथ इधर से खुरासान खाँ और राव हम्मीर की जय जयकार बोलते हुए उधर से महिमाशाह ने एक दूसरे पर आक्रमण किया। बादशाह ने अपनी सेना को उत्तेजित करने के लिये कहा इसको शीघ्र पकड़ो। शेख और खुरासान की सेना अती तो एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करने लगी और इधर ये दोनों वीर स्वयं आमने सामने जुटकर एक मात्र खड्ग के सहारे पर खेलने लगे। अंत में महिमाशाह ने खुरासान खाँ को मार गिराया और उसके निशान इत्यादि ले जाकर राव जी को नजर किए। महिमाशाह ने राव हम्मीर जी के संमुख खड़े होकर कहा—हे शरणागत प्रणरत्नक वीर चहुआन, आपको धन्य है। आप राज्य, परिवार, स्त्री और सब राजसी वैभवों को तिलांजलि देकर जो एक मात्र मेरी रक्षा करने के लिये अपने हठ से न हटे यह अचल कीर्ति आपकी इस संसार में सनातन स्थिर रहेगी। उसने आँसू भर कहा—“हाय ! अब वह समय कब आवेगा कि मैं पुनः अपनी माता के गर्भ से जन्म धारण कर आपसे फिर मिलूँ।” यह सुनकर राव जी ने कहा हे वीर भीर, अधीर मत हो। जीवन मरण यह संसार का काम ही है इस विषय का पश्चात्ताप ही क्या ? फिर हम तुम तो एक ही अंश के अवतार हैं तो हम आप अवश्य एक ही

में लीन होंगे अतएव इन निःसार बातों का विचार करना तो बृथा ही है परंतु यह अवश्य है कि मनुष्य देह धारण कर इस प्रकार कीर्ति संपादन करने का समय कठिनता से प्राप्त होता है ।

राव हम्मीर जी के उपर्युक्त वक्तव्य का अंत होते ही वीरोचित उत्कर्ष से भरा हुआ मीर महिमाशाह रणक्षेत्र के मध्य में आ उपस्थित हुआ । उसकी वरनी पर इधर से उसका छोटा भाई मीर गभरू उसके सामने जा जुटा । जिस समय ये दोनों वीर बांधव एक दूसरे पर प्रहार करने को थे कि अलाउद्दीन ने हँसकर कहा “मीर महिमाशाह मैं सच्चे दिल से तेरी तारीफ करता हूँ । जिस वक्त से तूने दिल्ली छोड़ी उस वक्त से आज तक मुझको सिर न झुकाया, बस अब तुम खुशी से मेरे पास चले आओ मैं तुम्हारा कुसूर माफ करता हूँ और यह बेगम भी तुमको देना कबूल करता हूँ । साथ ही इसके गोरखपुर का परगना जागीर में दूँगा ।” इस पर महिमाशाह ने मुस्कराते हुए सहज स्वभाव से उत्तर दिया कि अब आपका यह कहना बृथा है, आप जरा उन बातों का खयाल भी तो कीजिए जो आपने उस समय कही थीं । यदि अब फिर से भी उसी माता की कुक्षि से जन्म लूँ तब भी राव जी को नहीं छोड़नेवाला हूँ ।

मीर महिमाशाह को बादशाह से बातें करते देखकर राव जी ने कुमक भेजी । इधर मीर गभरू ने भी कहा कि हे भाई, अब बृथा की दंत कथाओं के क्रंदन करने से क्या लाभ है, आओ इस सुअवसर पर हम और आप दोनों अपने अपने धर्म को पालन करते हुए स्वर्ग की मोढ़ी पर पैर दें । यह कहते हुए दोनों भाई अपने अपने स्वामियों की जयकार मनाते हुए एक दूसरे से जुट पड़े । मीर गभरू ने अपने बड़े भाई महिमाशाह के पैर छूकर कहा “अब मुझे आज्ञा हो ।” इसके उत्तर में महिमाशाह ने कहा कि “स्वामिधर्म पालन में दोष ही क्या है ?” पहले तो दोनों भाई परस्पर खड़ से लड़ते रहे किंतु जब बहुत देर हो गई तब दोनों अपने अपने घोड़ों पर से उतरकर परस्पर द्वंद्व युद्ध में प्रवृत्त हुए, और दोनों सेनाओं के देखते

ही दोनों वीर भाई स्वर्ग को सिधारे ।

जब महिमाशाह मारा जा चुका तब अलाउद्दीन ने राव हम्मी जी से कहा कि अब आप युद्ध न कीजिए; मैं आपकी अक्षय वीरता से अत्यंत प्रसन्न होकर आपको अपनी तरफ से पाँच परगने और देना स्वीकार करता हूँ और यह भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मैं रहते आप स्वच्छंदतापूर्वक रणथंभ का राज्य कीजिए । इसके उत्तर में हम्मीर जी ने कहा कि अब आपका यह विचार केवल विडंबना है । अब जो कुछ भविष्य में होगा वही होगा, मैं इस क्षणभंगुर जीवन की अभिलाषा वा राज्यसुख के लोभ से अक्षय कीर्ति को त्यागनेवाला नहीं हूँ । रावण, दुर्योधन आदि वीरों ने कीर्ति के लिये ही तन को तिनका सा त्याग दिया, हम तुम दोनों एक ही पद्म ऋषि के अंश से उत्पन्न हैं, अतएव अब यही उचित है कि इस सुअवसर पर समर भूमि में अनित्य शरीर को विसर्जन करके हम आप स्वर्ग में सदैव के लिये सहवास करें ।

राव जी के ऐसे वचन सुनकर अलाउद्दीन ने अपनी सेना को आक्रमण करने की आज्ञा दी । उधर से राजपूत सेना भी प्राण का मोह छोड़कर मदोन्मत्त मातंग की तरह मुसलमानों से जंग करने को वीरत्व के उमंग में भरी हुई उमड़ पड़ी । जिस समय दसों दिग्गजों के हृदय को कंपायमान करनेवाले रणवाद्यों को बजाती हुई दोनों सेनाएँ परस्पर मिल रही थीं उसी समय भोज नामक भीलों के सर्दार ने राव जी से अपने हरावल में होने की आज्ञा माँगी । रावजी ने कहा कि तुम चित्तौर की रक्षा करो । इसपर उसने उत्तर दिया कि मुझे श्रीमान् की आज्ञा मानने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है, परंतु मैंने जो आजन्म श्रीमान् की चरण-सेवा की है वह इसी अवसर के लिये; अतएव अब मुझे आज्ञा हो क्योंकि मैं अपने कर्तव्य के ऋण से उऋण होऊँ । या कहकर भोजराज अपनी भील सेना सहित आगे बढ़ा । उधर से मीर सिकंदर हरावल में हुआ । मुसलमान सेना से तोप की गुरावें छुटती थीं और भील तीरों की वर्षा

करते थे । इसी समय भोजराज और सिकंदर का मुकाबला हुआ ।
 इधर से भोजराज ने सिकंदर पर कटार का वार किया और उसने
 तलवार चलाई, निदान दोनों वीर एक ही समय घराशायी हुए । इस
 युद्ध में भोजराज के साथवाले दो हजार भील और सिकंदर की तरफ
 के तीस हजार कंधारी योद्धा काम आए और शाही सेना भाग उठी ।

उसी समय राव हम्मीर जी ने भोजराज की लाश के पास हाथी
 जा डटाया और उस वार के मृतक शव को देखकर राव जी ने
 आँसुओं से नेत्र डबडवाई हुई अवस्था में कहा—धन्य हो वीरवर !
 तुमने स्वामिसेवा में प्राण देकर अतुलित कीर्ति को संपादन किया ।
 राव जी को रणक्षेत्र के बीच अचल भाव से स्थित देखकर अला-
 उद्दीन ने अपने भागते हुए वीरों से कहा—“रे मूर्ख मनुष्यो, तुमने
 जिस मेरे कारण आजन्म आनंद से जीविका निर्वाह की, अहर्निश
 आनंद आमोद में व्यतीत किए, आज तुम्हें लड़ाई का मैदान छोड़कर
 भागते हुए शरम नहीं आती ।” इतना सुनते ही मुसलमान सेना
 भूखे बाघ या फुफकारते हुए सर्प की तरह लौट पड़ी । यहाँ राजपूत
 तो सदैव प्राण हथेली पर रखे हुए थे, दोनों में इस तरह कड़ाचूर
 मार पड़ी कि रणभूमि में रक्त की नदी बह निकली, उस वेग से
 बहती हुई शोणित सरिता में जहाँ तहाँ पड़े हुए हाथियों के शव
 वास्तविक चट्टानों से भासित होते थे, वीरों के हाथ पाँव जंघा
 इत्यादि कटे हुए अवयव जलचर जीव से तैरते जात होते थे, वीरों
 के सचिवकन केश सिवार और ढाल कच्छप सी प्रतीत होती थी,
 नव युवा वीरों के कटे हुए मस्तक कमल से और उनके आरक्त बड़े
 बड़े नेत्र खंजन से खिलते हुए नजर आते थे । इस पसर में ७५
 हाथी, सवा लाख घोड़े, ७०० निशानवाले और अगणित
 योधा काम आए । सिकंदर शाह, शेर खाँ, मरहम खाँ, मोहब्बत
 खाँ, मुदफ्फर या मुजफ्फर खाँ, नूर खाँ, निजाम खाँ इत्यादि मुसल-
 मान वीर मारे गए और राव जी की तरफ के भी नामी नामी चार
 सौ योद्धा खेत रहे ।

इसी मारामार में राव हम्मीर जी ने अपने हाथी को अलाउद्दीन के संमुख डटाए जाने की आज्ञा दी और कहला भेजा कि अबत वृथा ही रक्त प्रवाह हुआ है अब आइए हमारा आपका द्वंद्व युद्ध और सब द्वंद्व समाप्त हो। राव जी का यह सँदेसा सुनकर अलाउद्दीन ने मंत्री से पूछा कि अब क्या करें। तब मंत्री ने उत्तर दिया कि उस चहुआन के बल प्रताप एवं पराक्रम से आप अपरिचि नहीं हैं अतएव मेरे विचार में तो यही आता है कि अब आप साँ कर लें तो सर्वथा भला है। निदान अलाउद्दीन ने वजीर की वा मानकर हम्मीर जी के पास संधि का प्रस्ताव भेजा परंतु उस वी हम्मीर ने उत्तर दिया कि युद्धस्थल में उपस्थित होकर मित्रता का प्रस्ताव करना भला कौन सी नीति और बुद्धिमत्ता का काम है। श के संमुख विनती करना नितांत कातरता अथवा दंभमय चतुरता का पता देता है।

बादशाह के दूत को इस प्रकार नीतियुक्त उत्तर देकर राव जी ने अपने राजपूत वीरों को आज्ञा दी कि “हे वीरवर योद्धाओ, अब मेरी यही इच्छा है कि आप तोप, वाण, हथनार, चादर, जंवर, बंदूक, तमंचा, बरछा, सेल, साँग इत्यादि हथियारों को त्यागकर केवल तलवार, छुरी, कटारी और विषाण से काम लो अथवा मल्लयुद्ध द्वारा ही अपने पराक्रम का परिचय देते हुए स्वर्ग की सीढ़ पर पैर दो। साथ ही मेरी यह भी आज्ञा है कि बादशाह को न मारना।”

राव जी के इतना कहते ही राजपूत रावत, महावत से हकारे हुए हाथी की तरह अपने अपने उज्ज्वल शस्त्रों को चमकाते हुए चल पड़े। क्षुधित मृगराज की भाँति रणबाँकुरे राजपूतों का वेग मुसल मानी सेना क्षण भर न सह सकी और बड़े बड़े सैनिक अमीर उमरा भेड़ की भाँति भाग उठे। राजपूत सेना ने अलाउद्दीन के हाथी को घेर लिया और उसे रावहम्मीर जी के संमुख ले आए। राव जी ने विवश हुए बादशाह को देखकर अपने सद्दारों से कहा कि यह पृथ्वी-

पति बादशाह है। अदंड्य है। इसलिये आप लोग इसे यों ही छोड़ दीजिए। निदान राजपूत सर्दारों ने राव जी की आज्ञा मानकर अलाउद्दीन को उसकी सेना में पहुँचा दिया और वह भी उसी समय वहाँ से बूचकर दिल्ली को चला आया।

उधर राव हम्मीर जी ने अपने घायलों को उठाकर और बादशाही सेना से छीने हुए निशान लिवाकर निज दुर्ग की तरफ फेरा किया।

राव जी ने भूलवश, अथवा विजय के उत्साहवश, शाही निशानों को आगे चलने की आज्ञा दी, यह देखकर रानी जी ने समझा कि रावजी खेत हार गए और यह किले पर शाही सेना आ रही है। ऐसा विचार कर रानीजी ने अन्यान्य सब परिवार की वीर महिलाओं सहित प्रज्वलित अग्नि में शरीर होम कर शाका किया। जब राव जी ने किले में आकर यह दृश्य देखा तो सब सर्दारों और सैनिकों को आज्ञा दी कि वे चित्तौर में जाकर कुँअर रतनसेन की रक्षा करें और आप शिव के मंदिर में जाकर नाना प्रकार के पूजन अर्चन करके यह वरदान माँगा कि अब जो मैं पुनः जन्म धारण करूँ तो इसी प्रकार वीर क्षत्रिय कुल में। और खड़ खींचकर अपने ही हाथों से कमल के पुष्प के समान अपना माथा उतार शिव जी को चढ़ा दिया।

जब यह समाचार अलाउद्दीन के कर्णगोचर हुआ तो राव जी के कर्तव्य पर पश्चात्ताप करता हुआ वह फौरन फिर आया और राव जी के संमुख खड़ा होकर अद्वय से प्रणाम करता हुआ बोला कि अब मुझे क्या आज्ञा है। यह सुनकर राव जी के मस्तक ने उत्तर दिया कि तुम जाकर समुद्र में शरीर छोड़ो तब हम तुम मिलेंगे। राव जी के शीश के वचन मानकर अलाउद्दीन ने बजौर महरम खाँ को आज्ञा दी कि वह सब लश्कर सहित दिल्ली जाकर “शाहजादा” अलावृत्त को तख्त पर बिठावे और वह आप उसी क्षण रामेश्वर को चला गया। वहाँ पर उसने रामेश्वर जी की पूजा की और उन्हीं का

ध्यान और स्मरण करते हुए समुद्र में वह कूद पड़ा ।

इस प्रकार बादशाह के तन त्यागने पर राव हम्मीर जी और अलाउद्दीन और मीर महिमाशाह परस्पर स्वर्ग में गले मिले और अप्सराओं और देवताओं ने पुष्पवृष्टि की ।

इस प्रकार राव हम्मीर जी का यश-कीर्तन सुनकर राव चंद्रभाजी ने कवि जोधराज को बहुत सा दान दिया, और सब भाँति से प्रसन्न किया ।

चैत्र सुदी तृतीया बृहस्पतिवार संवत् १८८५ को ग्रंथ पूर्ण हुआ । यह जोधराज कृत हम्मीररासो का सारांश हुआ । इसमें दी हुई ऐतिहासिक बातों पर विचार करने के पहले मैं एक दूसरे कवि के लिखी हुई हम्मीर राव की कथा का सारांश देना चाहता हूँ । नयनचंद्र सूरि नामक एक जैन कवि ने हम्मीर महाकाव्य नाम का एक ग्रंथ संस्कृत में लिखा है । नयनचंद्र जयसिंह सूरि का पौत्र था वह ग्रंथ पंद्रहवीं शताब्दी का लिखा हुआ जान पड़ता है । सन् १८७८ में पंडित नीलकंठ जनार्दन ने इस काव्य का एक संस्करण छपाया जिसकी भूमिका में उन्होंने काव्य का सारांश दिया है उससे नीचे लिखा वृत्तांत मैं हिंदी में उद्धृत करता हूँ । यहाँ पर इस ग्रंथ में दिया हुआ हम्मीरदेव के वंश का कुछ वृत्तांत दे देना उचित जान पड़ता है ।

चौहान वंश में दीक्षित वासुदेव नाम का एक पराक्रमी राजा हुआ । इसका पुत्र नरदेव था । इसके अनंतर हम्मीर 'शम' इस प्रकार है—

चंद्रराज

जयपाल

जयराज

सामंतसिंह

गुयक

नंदन

चप्रराज

हरिराज

सिंहराज—इसने हेनिम नाम के मुसलमान सर्दार को मारा ।

भीम—सिंह का भतीजा और उसका दत्तक पुत्र ।

विग्रहराज—गुजरात के मूलराज को मारा ।

गंगदेव

वल्लभराज

राम

चामुंडराज—हेजमुदीन को मारा ।

दुर्लभराज—शहाबुद्दीन को जीता ।

दुशल—कर्णदेव को मारा ।

वीसलदेव—शहाबुद्दीन को मारा ।

पृथ्वीराज—प्रथम

अल्हण

अनल—अजमेर में तालाब खुदवाया ।

जगदेव

वीशल

जयपाल

गंगपाल

सोमेश्वर—कर्पूरादेवी से विवाह किया ।

पृथ्वीराज—द्वितीय

हरिराज

गोविंद

बाल्हण—प्रल्हाद और वाग्भट्ट दो पुत्र हुए ।

प्रल्हाद

वीरनारायण—प्रल्हाद का पुत्र ।

वाग्भट्ट—बाल्हण का पुत्र ।

वाग्भट्ट के उत्तराधिकारी उनके पुत्र जैत्रसिंह हुए । उनकी रानी

का नाम हीरादेवी था जो बहुत रूपवती और सर्वथा अपने उच्च पद के योग्य थी। कुछ काल में हीरादेवी गर्भवती हुई। उसकी इस अवस्था की वासनाओं से गर्भस्थित जीव की प्रवृत्ति और उसके महत्त्व का आभास मिलता था। कभी कभी उन्हें मुसलमानों के रक्त से स्नान करने की इच्छा होती। उसके पति उसकी अभिलाषाओं को पूरा करते; अंत में, शुभ घड़ी में, उसको एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पृथ्वी की चारों दिशाओं ने सुंदर शोभा धारण की; सुखद समीर बहने लगा; आकाश निर्मल हो गया; सूर्य मृदुलता से चमकने लगा; राजा ने अपना आनंद ब्राह्मणों पर सुवर्ण बरसाकर और देवताओं की वंदना करके प्रगट किया। ज्योतिषियों ने बालक के मुहूर्तस्थान में पड़े हुए नक्षत्रों के शुभ योग का विचार करके भविष्यद्वाणी की कि कुमार समस्त पृथ्वी को अपने देश के शत्रु मुसलमानों के रक्त से आर्द्र करेगा। बालक का नाम हम्मीर रखा गया। हम्मीर बढ़कर एक सुंदर और बलिष्ठ बालक हुआ उसने सब कलाओं को सीख लिया और शीघ्र ही वह युद्ध-विद्या में भी निपुण हो गया !

जैत्रसिंह के सुरत्राण और विराम दो और पुत्र थे, जो बड़े योद्धा थे। यह देखकर कि उनके पुत्र अब उनको राज्य के भार से मुक्त करने योग्य हो गए, जैत्रसिंह ने एक दिन हम्मीर से इस विषय में बातचीत की, और उन्हें किस रीति से चलना चाहिए इस विषय में उत्तम उपदेश देने के उपरांत, राज्य उनके (हम्मीर के) हवाले कर दिया, और वे आप वनवास करने चले गए। यह बात संवत् १३३३ (१२-३ ई०) में हुई।^१

छः गुणों और तीन शक्तियों से संपन्न होकर हम्मीर ने युद्ध के

१-ततश्च सवन्नववह्नि वह्निभूहायने माघवलक्षपक्षे।

पौष्यां तिथौ हेलिदिने सपुष्ये दैवज्ञनिर्दिष्टवलेऽलिलग्ने ॥

—सर्ग ८, श्लोक ५६।

हेतु प्रस्थान करने का संकल्प किया। पहले वह राजा अर्जुन की राजधानी सरसपुर में गया। यहाँ एक युद्ध हुआ जिसमें अर्जुन पराजित होकर अधीन हुआ। इसके अनंतर राजा ने गढ़मंडले पर बढ़ाई की, जिसने कर देकर अपनी रक्षा की। गढ़मंडले से हम्मीर शर की ओर बढ़ा। यहाँ एक राजा भोज राज्य करता था जो वनामधारी विख्यात राजा भोज के समान ही कवियों का मित्र था। भोज को पराजित करके सेना उज्जैन में आई जहाँ हाथी, घोड़े और मनुष्य क्षिप्रा के निर्मल जल में नहाए। राजा ने भी नदी में स्नान किया और महाकाल के मंदिर में जाकर पूजा की। बड़े समारोह के साथ वे उस प्राचीन नगरी के प्रधान मार्गों से होकर निकले। उज्जैन से हम्मीर चित्रकोट (चित्तौर) की ओर बढ़ा और मेढ़वार (मेवाड़) का उजाड़ करता हुआ आवू पर्वत पर गया।

वेद के अनुयायी होकर भी यहाँ हम्मीर ने मंदिर में ऋषभदेव की पूजा की, क्योंकि बड़े लोग विरोधसूचक भेदभाव नहीं रखते। वस्तुपाल के स्तुति-पाठ के समय भी राजा प्रस्तुत थे। वे कई दिन तक वशिष्ठ की कुटी में रहे, और मंदाकिनी में स्नान करके उन्होंने अचलेश्वर की आराधना की। यहाँ अर्जुन की कृतियों को देखकर वे बहुत ही आश्चर्यित हुए।

आवू का राजा एक प्रसिद्ध योद्धा था, किंतु उसके बल ने इस अवसरपर कुछ काम न किया और उसे हम्मीर के अधीन होना पड़ा।

आवू छाड़कर राजा वर्द्धनपुर आए और उस नगर को उन्होंने लूटा तथा नष्ट किया। चंगा की भी यही दशा हुई। यहाँ से अजमेर की राह से हम्मीर पुष्कर को गए जहाँ उन्होंने आदिवाराह की आराधना की। पुष्कर से राजा शाकंभरी को गए। मार्ग में मरहटा^१, खंडिल्ला, चमड़ा और काँकरोली लूटे गए। काँकरोली में

१-इस नाम का एक स्थान जोधपुर राज्य में है। जोधपुर राज्य में नाडोल नाम का एक गाँव है जहाँ वासापुरा देवी का स्थान है। रणथंभ से यदि नाडोल जाया जाय तो नेड़ता बीच में पड़ेगा।

त्रिभुवनेंद्र उनसे मिलने आए और अपने साथ बहुत सी अमूल्य भेंट लाए।

इन विशाद कार्यों को पूरा करके हम्मीर अपनी राजधानी को लौट आए। राजा के आगमन से वहाँ बड़ी धूम हुई। राज्य के सब से बड़े कर्मचारी धर्मसिंह के साथ दल बाँधकर अपने विजयी राजा की अगवानी के लिये बाहर आए। मार्ग के दोनों ओर प्रेमी प्रजा अपने राजा के दर्शन के हेतु उत्सुक खड़ी थी।

इसके कुछ दिन पीछे हम्मीर ने अपने गुरु विश्वरूप से कोटियज्ञ का फल पूछा और उनसे यह उत्तर पाकर कि इस यज्ञ के पूरा करने से स्वर्ग लोक प्राप्त होता है राजा ने आज्ञा दी कि कोटियज्ञ की तयारी की जाय। चट देश के सब भागों से विद्वान् ब्राह्मण बुलाए गए, और यज्ञ पवित्र शास्त्रों में लिखे विधानों के अनुसार समाप्त किया गया। ब्रह्मणों को खूब भोजन कराकर उन्हें भरपूर दक्षिणा दी गई। इसके उपरान्त राजा ने एक महीने तक के लिये मुनिव्रत ठाना।

जब कि रणथंभौर में ये सब बातें हो रही थीं, दिल्ली में, जहाँ अलाउद्दीन राज्य करता था, कई परिवर्तन हुए। रणथंभौर में जो कुछ हो रहा था उसका समाचार पाकर उसने अपने छोटे भाई उलुगखाँ^१ को सेना लेकर चौहान प्रदेश पर चढ़ाई करने और उसको उजाड़ देने की आज्ञा दी। उसने कहा “जैत्रसिंह हम लोगों को कर देता था; पर यह उसका बेटा न कि केवल कर ही नहीं देता, वरन् हम लोगों के प्रति अपनी घृणा दिखाने के लिये प्रत्येक अवसर ताकता रहता है। यह उसकी शक्ति को नष्ट करने का अच्छा अवसर है।” ऐसी आज्ञा पाकर उलुगखाँ ने ८०००० सवार लेकर रणथंभौर प्रदेश पर चढ़ाई की। जब यह सेना वर्णनाशा नदी पर पहुँची तब उसने देखा कि सड़कें, जो शत्रु के प्रदेश को गई हैं, सवारों के चलने योग्य नहीं हैं। इससे वह कई दिन वहाँ टिका रहा; इस बीच में उसने आस पास के गाँवों को जलाया और नष्ट किया।

१-मालिक मुईजुद्दीन उलुगखाँ। त्रिग्रस ने अपने फिरिस्ता के अनुवाद में इसको “अलफखाँ” लिखा है।

यहाँ रणथंभौर में मुनिव्रत पूरा न होने के कारण राजा स्वयं युद्धक्षेत्र में न जा सकते थे। अतएव उन्होंने भीमसिंह और धर्मसिंह अपने सेनापतियों को आक्रमणकारियों को भगाने के लिये भेजा। राजा की सेना वर्णनाशानदी के किनारे एक स्थान पर आक्रमणकारियों पर दूट पड़ी और उसने शत्रुओं को, जिनके बहुत से लोग मारे गए, परास्त किया। इस जयलाभ से संतुष्ट होकर भीमसिंह रणथंभौर की ओर लौटने लगा, और उलुगखाँ अपनी सेना का प्रधान अंग साथ लिए छिपकर उसके पीछे पीछे बढ़ने लगा। अब यह हुआ कि भीमसिंह के सिपाही, जिन्होंने लूट में बहुत सा धन पाया था, उसको रक्षापूर्वक अपने अपने घर ले जाने को व्यग्र थे, और इसी व्यग्रता में उन्होंने अपने नायक को पीछे छोड़ दिया जिसके साथ केवल अनुचरों की एक छोटी सी मंडली रह गई। जब इस प्रकार भीमसिंह हिंदावत घाटी के बीचोबीच पहुँचा तब उसने विजय के अभिमान में उन नगाड़ों और बाजों को जोर से बजाने की आज्ञा दी जिनको उसने शत्रु से छीना था। इस कार्य का फल अचिंत्यपूर्व और आपत्तिजनक हुआ। उलुगखाँ ने अपनी सेना को छोटे छोटे दलों में भीमसिंह का पीछा करने की आज्ञा दे रखी थी और बाजा बजाते ही उसे शत्रु के ऊपर जयलाभ की सूचना समझ, उसपर दूट पड़ने का आदेश दे रखा था। अतः जब मुसलमानों के पृथक् पृथक् दलों ने नगाड़ों का शब्द सुना तब वे चारों ओर से घाटी में आ पहुँचे, और उलुगखाँ भी एक ओर से आकर भीमसिंह से युद्ध करने लगा। हिंदू सेनापति कुछ काल तक यह वेजोड़ की लड़ाई लड़ता रहा, पर अंत में घायल हुआ और मारा गया। शत्रु के ऊपर यह जयलाभ पाकर उलुगखाँ दिल्ली लौट गया।

यज्ञ पूरा होने के उपरान्त हम्मीर ने युद्ध का वृत्तांत और अपने सेनापति भीमसिंह की मृत्यु का समाचार सुना। उन्होंने धर्मसिंह को भीमसिंह का साथ छोड़ने के लिये धिक्कारा, उसको अंधा कहा क्योंकि वह यह न देख सका कि उलुगखाँ सेना के पीछे पीछे था।

उन्होंने उसको क्लीब भी कहा क्योंकि, वह भीमसिंह की रक्षा के लिये नहीं दौड़ा। इस प्रकार धर्मसिंह को धिक्कारकर ही संतुष्ट न होकर राजा ने उस दोषी सेनापति को अंधा करने और उसको क्लीब करने की आज्ञा दी। सेनानायक के पद पर भी धर्मसिंह के स्थान पर भोजदेव हुए, जो राजा के एक प्रकार से भाई होते थे और धर्मसिंह को देश निकालने का दंड भी सुनाया जा चुका था पर भोजदेव के बीच में पड़ने से उसका बर्ताव नहीं हुआ।

धर्मसिंह इस प्रकार अवयवभग्न और अपमानित होकर राजा के इस व्यवहार से अत्यंत दुःखित हुआ, और उसने बदला लेने का संकल्प किया। अपने संकल्पसाधन के हेतु उसने राधादेवी नाम की एक वेश्या से, जिसका दरबार में बहुत मान था, गहरी मित्रता की। राधादेवी नित्य प्रति जो कुछ दरबार में होता उसकी रत्ती रत्ती सूचना अपने अंधे मित्र को देती। एक दिन ऐसा हुआ कि राधादेवी बिलकुल उदास और मलिन घर लौटी, और जब उसके अंधे मित्र ने उसकी उदासी का कारण पूछा तब उसने उत्तर दिया कि आज राजा के बहुत से घोड़े वैधरोग से मर गए इससे उन्होंने मेरे नाचने और गाने की ओर बहुत थोड़ा ध्यान दिया, और जान पड़ता है कि बहुत दिन तक यही दशा रहेगी। अंधे पुरुष ने उसे प्रसन्न होने को कहा क्योंकि थोड़े ही दिनों में सब फिर ठीक हो जायगा। उसे केवल राजा से यह जताने का अवसर देखते रहना चाहिए कि यदि धर्मसिंह अपने पहले पद पर फिर हो जाय तो वह राजा को जितने घोड़े हाल में मरे हैं उनसे दूने भेंट करे। राधादेवी ने अपना काम सफाई से किया, और राजा ने लोभ के वश में होकर धर्मसिंह को उसके पहले पद पर फिर आरुढ़ कर दिया।

धर्मसिंह इस प्रकार फिर से नियुक्त होकर बदले ही का विचार करने लगा। राजा का लोभ बढ़ाता गया और उसने अपने अत्याचार और लूट से प्रजा की ऐसी हीन दशा कर दी कि वह राजा से घृणा करने लगी। वह किसी को, जिससे कुछ—घोड़ा, रुपया, कोई भी रखने

योग्य पदार्थ—मिल सकता था, न छोड़ता । राजा, जिसका कोष वह भरता था, अपने अंधे मंत्री से बहुत प्रसन्न रहता जिसने, सफलता से फूलकर भोजदेव से उसके विभाग का लेखा माँगा । भोज जानता था कि वह उसके पद से कुढ़ता है, अतः उसने राजा के पास जाकर धर्मसिंह के समस्त षड्यंत्र की बात कही और मंत्री के अत्याचार से रक्षा पाने के लिये उनसे प्रार्थना की । किंतु हम्मीर ने भोज की बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और कहा कि धर्मसिंह को पूरा अधिकार सौंपा गया है, वह जो उचित समझे कर सकता है, इसलिये यह आवश्यक है कि और लोग उसकी आज्ञा मानें । भोज ने जब देखा कि राजा का चित्त उसकी ओर से फिर गया है तब उसने अपनी संपत्ति जप्त होने दी और धर्मसिंह के आज्ञानुसार उसे लाकर राजा के भांडार में रखा । पर कर्नाव्य के अनुरोध से वह अपने नायक के साथ अब भी जहाँ कहीं वे जाते जाता रहता था । एक दिन राजा वैजनाथ के मंदिर में पूजन के हेतु गए और भोज को अपने दल में देखकर उन्होंने एक सभासद से, जो पास खड़ा था, व्यंग्यपूर्वक कहा कि 'पृथ्वी अधम जनों से भरी है; किंतु पृथ्वा पर सबसे अधम जीव कौआ है, जो क्रुद्ध उल्लू से अपने पर नोचवाकर भी अपने पुराने पेड़ों पर के घोंसले में पड़ा रहता है ।' भोज ने इस व्यंग्य का अर्थ समझा और यह भी जाना कि यह उसी पर छोड़ा गया है । अत्यंत दुखी होकर वह घर लौट गया और उसने अपने अपमान की बात अपने छोटे भाई पीतम से कही । दोनों भाइयों ने अब देश छोड़ने का संकल्प किया, और दूसरे दिन भोज हम्मीर के पास गया और उसने बड़ी नम्रता से तीर्थाटन के हेतु काशी जाने की अनुमति माँगी । राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और कहा कि काशी क्या जाँ चाहे तो तुम और आगे जा सकते हो—तुम्हारे कारण नगर उजड़ जाने का भय नहीं है ।' इस अविनीत वचन का उत्तर भोज ने कुछ न दिया । वह प्रणाम करके चला गया और उसने तुरंत काशी के हेतु प्रधान कर दिया । राजा भोजदेव के चले जाने से प्रसन्न हुआ और उसने

कोतवाल का पद, जो (उसके जाने से) खाली हुआ, रतिपाल को प्रदान किया।

जब भोज शिरसा पहुँचा तब उसने अपने दिन के फेर पर विचार किया और संकल्प किया कि इन अपमानों का बिना बदला लिए न रहना चाहिए। चित्त की इसी अवस्था में वह अपने भाई पीतम के साथ योगिनीपुर गया और वहाँ अलाउद्दीन से मिला। मुसलमान सरदार अपने दरबार में भोज के आ जाने से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बड़े आदर से उसके साथ व्यवहार किया और जगरा का नगर तथा इलाका उसे जागीर में दिया। अब से पीतम तथा भोज के परिवार के और लोग यहाँ रहने लगे और वह आप (भोज) दरबार में रहने लगा। अलाउद्दीन का अभिप्राय हम्मीर का वृत्त जानने का था इस लिये भेंट और पुरस्कार से दिन दिन भोज की प्रतिष्ठा बढ़ाने लगा और वह भी धीरे धीरे अपने नए स्वामी के हित-साधन में तत्पर हुआ।

भोज को अपने पक्ष में समझ अलाउद्दीन ने एक दिन उससे अकेले में पूछा कि हम्मीर को दवाने का कोई सुगम उपाय है। भोज ने उत्तर दिया कि हम्मीर ऐसे राजा पर विजय पाना कोई सहज काम नहीं है। जिससे कुतल, मध्यदेश, अंग और कांची तक के राजा भयभीत रहते हैं, जो छः गुणों और तीन शक्तियों से संपन्न, एक विशाल और प्रबल सेना का नायक है, जिसकी और समस्त राजा शर्का करते और आज्ञा मानते हैं, कई राजाओं को दमन करनेवाला पराक्रमी विराम जिसका भाई है, जिसकी सेवा में महिमासाह तथा और दूसरे निःशंक मोगल सदाँर रहते हैं, जिसने उसके भाई को हराकर स्वयं अलाउद्दीन को छकाया। भोज ने कहा कि न केवल हम्मीर के पास योग्य सेनापति ही हैं वरन् वे सबके सब उससे स्नेह रखते हैं। एक ओर के सिवाय और कहीं लोभ दिखाना असंभव है। हम्मीर की सभा में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा है जो अपने को बेच सकता है। जैसे दीपक के लिये वायु का झोंका, कमल के लिये मेघ, सूर्य

के लिये रात्रि, यती के लिये स्त्रियों का संग, दूसरे गुणों के लिये लोभ वैसे ही हम्मीर के लिये अप्रतिष्ठा और नाश का कारण यह एक व्यक्ति है। भोज ने कहा कि वह समय भी हम्मीर के विरुद्ध चढ़ाई करने के लिये अनुपयुक्त नहीं है। इस वर्ष चौहान प्रदेश में खूब अन्न हुआ है। यदि किसी प्रकार अलाउद्दीन उसे रखने के पहले ही किसानों से छीन सके तो वे जो कि अंधे व्यक्ति के अत्याचार से पहले ही से पीड़ित हैं, हम्मीर का पक्ष छोड़ने पर सम्मत हो सकते हैं।

अलाउद्दीन को भोज का विचार पसंद आया और उसने तुरंत उलुगखाँ को एक लाख सवारों की सेना लेकर हम्मीर के देश पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। उलुगखाँ की सेना एक प्रबल धारा के समान जिन प्रदेशों से होकर निकलती उनके अधिपतियों को नरकट के समान नवाती चली जाती। सेना इसी ढंग से हिंदावत पहुँच गई। तब उसके आने का समाचार हम्मीर तक पहुँचाया गया। इस पर उस हिंदू राजा ने एकसभा की और विचार किया कि किन उपायों का अवलंबन करना अच्छा होगा। यह निश्चय हुआ कि वीरम और राज्य का शेष आठ बड़े पदाधिकारी शत्रु से युद्ध करने जायँ। तुरंत राजा के सेनानायकों ने सेना को आठ भागों में विभक्त किया और आठों दिशाओं से आकर वे मुसलमानों पर टूट पड़े। वीरम पूर्व से आया और महिमासाह पश्चिम से। जाजदेव दक्षिण से और गर्भारूक उत्तर की ओर से बढ़ा। रतिपाल अग्रिकोण से आया और तिचर मोगल ने वायुकोण से आक्रमण किया। रणमल ईशानकोण से आया और वैचर ने नैऋत्य की ओर से आकर आक्रमण किया। राजपूत लोग बड़े पराक्रम के साथ अपने कार्य में तत्पर हुए। उनमें से कई एक ने शत्रु की खाईयों को मिट्टी और कूड़े करकट से भर दिया, कई एक ने मुसलमानों के लकड़ी के घेरों में आग लगा दी। कुछ लोगों ने उनके डेरों (खेमों) की रस्सियों को काट डाला। मुसलमान लोग शत्रु

लेकर खड़े थे और डींग हाँककर कहते थे कि हम राजपूतों को घास के समान काट डालेंगे। दोनों दल साहसपूर्वक जी खोलकर लड़े, किंतु राजपूतों के लगातार आक्रमण के आगे मुसल्मानों को हटना पड़ा। अतएव उनमें से बहुतों ने रणक्षेत्र त्याग दिया और वे अपना प्राण लेकर भागे। कुछ काल पीछे समस्त मुसल्मानी सेना ने इसी रीति का अनुसरण किया और वह कायरता से युद्धक्षेत्र से भागी; राजपूतों की पूरी विजय हुई।

जब युद्ध समाप्त हो गया तब सीधे सादे राजपूत लोग युद्धस्थल में अपने मरे और घायल लोगों को उठाने आए। इस खोज में उन्होंने बहुत सा धन, शस्त्र, हाथी और घोड़े पाए। शत्रु की बहुत सी स्त्रियाँ उनके हाथ आईं। रतिपाल ने आते हुए प्रत्येक नगर में उनसे सट्टा बेचवाया।

हम्मीर शत्रु के ऊपर अपने सेनापतियों की इस विजयप्राप्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए। इस घटना के उपलक्ष्य में उन्होंने एक बड़ा दरबार किया। दरबार में राजा ने रतिपाल को सोने का सिकरी पहनाई, और उसकी तुलना युद्ध के हाथी से की जो सुवर्ण के पट्टे का अधिकारी होता है। दूसरे सरदार और सिपाही लोग भी अपनी योग्यता के अनुसार पुरस्कृत किए गए और अनुग्रहपूर्वक उन्हें अपने अपने घर जाने की आज्ञा मिली।

मोगल सरदारों के सिवाय और सब लोग चले गए। हम्मीर ने यह बात देखी और कृपापूर्वक उनसे रह जाने का कारण पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि कृतघ्न भोज को, जो जगरा में जागीर भोग रहा है, दंड देने के पहले हम तलवार न्याय में करना और अपने घर जाना बुरा समझते हैं। उन्होंने कहा कि राजा के संबंध के कारण ही हम लोगों ने उसे अब तक जीता छोड़ा है; किंतु अब वह इस सहनशीलता के योग्य नहीं रहा क्योंकि उसी की प्रेरणा से शत्रु ने रणथंभौर प्रदेश पर चढ़ाई की थी। अतएव उन्होंने जगरा पर चढ़ाई करके भोज पर आक्रमण करने की अनुमति माँगी। राजा ने

प्रार्थना स्वीकार की और दोनों मोगलों ने तुरंत जगरा की ओर प्रस्थान किया। उन्होंने नगर को घेरकर ले लिया और पीतम को कई और मनुष्यों के साथ बंदी बनाकर वे उसे फिर रणथंभौर ले आए।

उलुगखाँ पराजय के पीछे तुरंत दिल्ली लौट गया और जो कुछ हुआ था अपने भाई से उसने सब कह सुनाया। उसके भाई ने उस पर कायरता का दोष लगाया; अपने भागने का दोष उसने यह कहकर मिटाया कि उस अवस्था में मेरे लिये केवल एक यही उपाय था जिससे इस संसार में एक बेर फिर मैं आपका दर्शन करता और चौहान से लड़ने के लिये दूसरा अवसर पाता। उलुगखाँ ने बात गढ़ कर छुट्टी भी न पाई थी कि क्रोध से लाल भोज भीतर आया। उसने अपने उपवस्त्र को पृथ्वी पर बिछा दिया और उसपर इस प्रकार लोटने और अंडबंड बकने लगा जैसे उस पर प्रेत चढ़ा हो। अला-उद्दीन को उसका यह विलक्षण आचरण कुछ कम बुरा नहीं लगा; उसने उसका कारण पूछा। भोज ने उत्तर दिया कि मेरे लिये इस विपत्ति को कभी भूलना कठिन है जो आज मुझपर पड़ी है; क्योंकि महिमासाह ने जगरा में जाकर मुझ पर आक्रमण किया और मेरे भाई पीतम को बंदी करके हम्मीर के पास ले गया। भोज ने कहा—लोग घृणा से मेरी ओर उँगली दिखाकर अब यही कहेंगे कि यह एक ऐसा मनुष्य है जिसने अधिक पाने के लालच से अपना सर्वस्व खो दिया। असहाय और अनाथ होकर मैं पृथ्वी पर अब भी देखटके नहीं लेट सकता क्योंकि वह समस्त पृथ्वी हम्मीर की है; इसीलिये मैंने अपना वस्त्र बिछा दिया है जिसमें उसी पर मैं उस शोक में छटपटाऊँ जिसने मुझमें खड़े रहने की शक्ति भी नहीं रहने दी है।

अपने भाई की सहायता की कथा से अलाउद्दीन के हृदय में क्रोध की अग्नि पहले ही से जल उठी थी अब भोज की ये बातें उस अग्नि में आहुति के समान हुईं। हृदय के आवेग में अपनी पगड़ी को पृथ्वी पर पटककर उसने कहा कि हम्मीर की मूर्खता उस मनुष्य

की सी है जो समझता है कि मैं सिंह के कपाल पर पैर रख सकूँ, और प्रतिज्ञा की कि मैं चौहानों की समस्त जाति ही को नष्ट कर डालूँगा। उसने तुरंत अनेक देशों के राजाओं के पास पत्र भेजे और हम्मीर के विरुद्ध लड़ाई में योग देने के लिये उन्हें बुलाया। अंग, तैलंग, मगध, मैसूर, कलिंग, वंग, भोट, मेड़पाट, पंचाल, बंगाल, थमिम, भिल्ल, नेपाल तथा दाहल के राजा और कुछ हिमालय के सरदार अपना अपना दल आक्रमणकारी सेना में भरने को लाए। इस बहुरंगिनी सेना में कुछ लोग ऐसे थे जो युद्ध की देवी के प्रेम से आए थे, और कुछ ऐसे थे जो लूट की चाह से आक्रमणकारियों के दल में भरती हुए थे। कुछ लोग केवल उस घमासान युद्ध के दर्शक ही होने के हेतु आए थे जो होनेवाला था। हाथी, घोड़ों, रथों और मनुष्यों की इतनी कसामस थी कि भीड़ में कहीं तिल रखने की जगह नहीं थी। इस भारी समारोह के साथ दोनों भाई नसरतख़ाँ और उलुगख़ाँ रणथंभौर प्रदेश की ओर चले।

अलाउद्दीन छोटे से दल के साथ इस अभिप्राय से पीछे रह गया जिसमें राजपूतों को यह भय बना रहे कि अभी बादशाह के पास सेना बची है।

सेना की संख्या इतनी अधिक थी कि मार्ग में नदियों का जल चुक जाता था इससे यह आवश्यक हुआ कि सेना किसी एक स्थान पर कुछ घंटों से अधिक न ठहरे। कूच पर कूच बोलते दोनों सेनापति रणथंभौर प्रदेश की सीमा पर पहुँच गए। इससे आक्रमणकारियों के हृदयों में भिन्न भिन्न भाव उत्पन्न हुए। वे लोग जो पहली लड़ाई में संमिलित नहीं हुए थे कहते थे कि विजय पाना निश्चित है क्योंकि राजपूतों के लिये ऐसी सेना का सामना करना असंभव है। किंतु पहली लड़ाई के योद्धा लोग ऐसा नहीं समझते थे और अपने साथियों से कहते थे कि याद रखना हम्मीर की सेना से सामना करना है अतएव युद्ध के अंत तक डींग हाँकना बंद रखना चाहिए।

जब सेना उस घाटी में पहुँची जहाँ उलुगख़ाँ की पराजय और

दुर्गति हुई थी तब उसने अपने भाई को शिक्षा दी कि अपनी शक्ति ही पर बहुत भरोसा न करना चाहिए, वरन, चूँकि स्थान विकट और हम्मीर की सेना बली और निपुण है, इससे यह चाल चलनी चाहिए कि किसी को हम्मीर की सभा में भेज दें जो दो चार दिन तक संधि की बातचीत में उन्हें बहलाए रहे; और इस बीच में सेना कुशलपूर्वक पर्वतों को पार करे और अपनी स्थिति दृढ़ कर ले। नसरतखाँ ने अपने भाई की इस अनुभवपूर्ण बात को माना, और मोल्हणदेव उन बातों का प्रस्ताव करने के लिये भेजा गया जिनसे मुसल्मान लोग हम्मीर के साथ संधि कर सकते थे। बातचीत होने तक हम्मीर के लोगों ने आक्रमणकारी सेना को उस भयानक घाटी को बे-रोक टोक पार करने दिया। अब खाँ ने अपने भाई को तो उस मार्ग के एक पार्श्व में स्थित किया जो मंडी पथ कहलाता था और उसने स्वयं श्रीमंडप के दुर्ग को छेँका। साथी राजाओं के दल जैत्रसागर के चारों ओर टिकाए गए।

दोनों पक्ष अपनी अपनी घात में थे। मुसल्मानों ने समझा कि हम आक्रमण आरंभ करने के लिये धूर्तता से उत्तम स्थिति पा गए हैं; उधर राजपूतों ने विचारा कि शत्रु अंतर्भाग में इतनी दूर बढ़ आए हैं कि वे अब हमसे किसी प्रकार भाग नहीं सकते।

रणथंभौर में खाँ के दूत ने राजा की आज्ञा से दुर्ग में प्रवेश पाया; जो कुछ उसने वहाँ देखा उससे उसपर राजा के प्रताप का आतंक छा गया। उसके हेतु जो दरवार हुआ उसमें वह गया, और आवश्यक शिष्टाचार के उपरांत उसने साहसपूर्वक उस सँदेसे को कहा जो लेकर वह आया था। उसने कहा 'मैं विख्यात अलाउद्दीन के भाई उलुगखाँ और नसरतखाँ का दूत होकर राजा के दरबार में आया हूँ; मैं राजा के हृदय में, यदि संभव हो, तो यह घात जमाने के लिये आया हूँ कि अलाउद्दीन ऐसे महाविजयी का सामना करना कैसा निष्फल है और उन्हें अपने सरदार से संधि कर लेने की संनति देने आया हूँ।' उसने हम्मीर से संधि के लिये यह चंद्र शर्तें

बतलाई—“चाहे आप मेरे सरदार को एक लाख मोहर, चार हाथ और तीन सौ घोड़े भेंट करें और अपनी बेटी अलाउद्दीन को व्या दें, अथवा उन चार विद्रोही मोगल सरदारों को मेरे हवाले कर दें जो अपने स्वामी के कोपभाजन होकर अब आप की शरण में रह रहे हैं।” दूत ने फिर कहा “यदि आप अपने राज्य और प्रताप को शांति पूर्वक भोगना चाहते हों तो इन दो में से किसी शर्त को मानकर अपना अभिप्राय सिद्ध करने के लिये आपको अच्छा अवसर मिला है; इससे आपको शत्रुओं का नाश करनेवाले बादशाह अलाउद्दीन की कृपा और सहायता प्राप्त होगी जिसके पास असंख्य दृढ़ दुर्ग, सुसज्जित शस्त्रागार और मेगजीन हैं, जिसने देवगढ़ ऐसे ऐसे अगणित अजेय दुर्गों पर अधिकार करके महादेव को भी लज्जित किया क्योंकि उनकी (महादेव की) ख्याति तो अकेले त्रिपुर के गढ़ को सफलतापूर्वक अधिकृत करने से हुई है।”

हम्मीर जो दूत के वचन अधीर होकर सुनता रहा इस अपमानकारी सँदेसे से बहुत ही क्रुद्ध हुआ और उसने श्री मोल्हणदेव से कहा कि यदि तुम भेजे हुए दूत न होते तो जिस जीभ से तुमने ये अपमान-सूचक बातें कही हैं वह काट ली गई होती। हम्मीर ने न केवल इन शर्तों में से किसी को मानना अस्वीकार ही किया वरन् अपनी ओर से उतने खड्ग के आघात स्वीकार करने के लिये अलाउद्दीन से प्रस्ताव किया जितनी मुहर हाथी और घोड़े माँगने का उसने साहस किया, और दूत से यह भी कहा कि मुसलमान सरदार का इस रणभिक्षा को अस्वीकार करना सूअर खाने के बराबर होगा। बिना और किसी शिष्टाचार के दूत सामने से हटा दिया गया।

रणभौर की सेना युद्ध के लिये सुसज्जित होने लगी। बड़ी योग्यता और पराक्रम के सेनापति भिन्न भिन्न स्थानों की रक्षा के हेतु नियुक्त हुए। दुर्ग की दीवारों पर रक्षकों को धूप से बचाने के लिये इधर उधर ढेर गाड़े गए। कई स्थानों पर उबलता हुआ तेल

और राल रखी गई कि यदि आक्रमणकारियों में से कोई निकट आने का साहस करे तो उसके शरीर पर वह छोड़ दी जाय, उपयुक्त स्थानों पर तोपें चढ़ा दी गईं। अंत में मुसलमानी सेना भी रण-थंभौर दुर्ग के सामने आई। कई दिन तक घमासान युद्ध होता रहा। नसरतखाँ अचानक एक गोली के लगने से मर गया और बरसात के आ जाने पर उलुगखाँ को लड़ाई बंद करनी पड़ी। वह दुर्ग से कुछ दूर हट गया और उसने अलाउद्दीन के पास अपनी भयानक स्थिति का समाचार भेजा। उसने नसरत खाँ का शव भी समाधिस्थ करने के निमित्त उसके पास भेज दिया। अलाउद्दीन ने यह समाचार पाकर तुरंत रणथंभौर की ओर प्रस्थान किया। यहाँ पहुँचकर उसने तुरंत अपनी सेना को दुर्ग के द्वार की ओर बढ़ाया और उसे छेँक लिया।

हम्मीर ने इन कार्यों की तुच्छता सूचित करने के लिये दुर्ग की दीवारों पर कई जगह सूप के भंडे गड़वा दिए। इससे यह अभिप्राय झलकता था कि दुर्ग के संमुख अलाउद्दीन के आगमन से राजपूतों को कुछ भी बोझ वा कष्ट नहीं मालूम होता था। मुसलमान सरदार ने देखा कि उससे साधारण धैर्य और साहस के मनुष्यों से पाला नहीं पड़ा है, और उसने हम्मीर के पास सँदेसा भेजकर यह कहलाया कि मैं तुम्हारी वीरता से बहुत प्रसन्न हूँ, और ऐसा पराक्रमी शत्रु चाहे जिस बात की प्रार्थना करे उसे मानने में मैं प्रसन्न हूँ। हम्मीर ने उत्तर दिया कि यदि अलाउद्दीन जो मैं चाहूँ उसे देने में प्रसन्न है तो मेरे लिये इससे बढ़कर संतोष की बात और कोई नहीं होगी कि वह दो दिन मेरे साथ युद्ध करे, और मुझे आशा है कि मेरी यह प्रार्थना स्वीकृत होगी। मुसलमान सरदार ने इस उत्तर की यह कहकर बड़ी प्रशंसा की कि वह सर्वथा उसके प्रतिद्वंद्वी के साहस के योग्य है और उससे दूसरे दिन युद्ध रोपने का वचन दिया। इसके अनंतर अत्यंत भीषण और कराल युद्ध हुआ। इन दो दिनों में मुसलमानों के कम से कम ८५००० आदमी मारे गए। दोनों योद्धाओं के बीच कुछ दिन विश्राम

करना निश्चित होने पर लड़ाई कुछ काल के लिये बंद हुई ।

इस बीच में एक दिन राजा ने दुर्ग के प्राचीर पर राधादेवी का नाच कराया; उनके चारों ओर बड़ा जमाव था । यह स्त्री क्रम-क्रमः क्षण-क्षण पर घूमती हुई, जिसे संगीत जाननेवाले ही अच्छी तरह समझ सकते थे, जान-बूझकर अपनी पीठ अलाउद्दीन की ओर फेर लेती थी जो किले से थोड़ी दूर नीचे अपने डेरे में बैठा यह देख रहा था । कोई अश्र्वर्य नहीं कि वह इस आचरण से रुष्ट हुआ, और को-कोरके अपने पास के लोगों से उनसे कहा कि क्या मेरे असंख्य साथियों में कोई ऐसा है जो इस स्त्री को इतनी दूर से एक तीर से मारकर गिरा सकता है । एक सरदार ने उत्तर दिया कि मैं केवल एक आदम को जानता हूँ जो यह काम कर सकता है, वह उद्धानसिंह है जिसे बादशाह ने कैद कर रखा है । कैदी तुरंत छोड़ दिया गया और अलाउद्दीन के पास लाया गया जिसने उसे उस सुंदर लक्ष्य पर अपनी कौशल दिखाने की आज्ञा दी । उद्धानसिंह ने आज्ञानुसार वैसा ही किया, और एक क्षण में उस वीरांगना की सुंदर देह वाण से विधर कर दुर्ग की दीवार पर से सिर के बल नीचे गिरी ।

इस घटना से महिमासाह को बहुत क्रोध हुआ और उसने राजा से अलाउद्दीन के साथ भी वही व्यवहार करने की अनुमति माँगी जो उसने बेचारी राधादेवी के साथ किया था । राजा ने उत्तर दिया कि मुझे तुम्हारी धनुर्विद्या का असाधारण कौशल विदित है, कि मैं नहीं चाहता कि अलाउद्दीन इस रीति से मारा जाय क्योंकि उसकी मृत्यु से मेरे साथ शत्रु ग्रहण करनेवाला कोई पराक्रमी शत्रु न रह जायगा । महिमासाह ने तब प्रत्यंचा चढ़े हुए वाण को उद्धानसिंह पर छोड़ा और उसे मार गिराया । महिमासाह के इस कौशल ने अलाउद्दीन को इतना सशंकित कर दिया कि वह तुरंत अपने डेरे को किले के पूर्वोप-पार्श्व से हटाकर पश्चिम की ओर ले गया जहाँ ऐसी आक्रमणों से अधिक रक्षा हो सकती थी । जब डेरा हटाया गया तब राजपूतों ने देखा कि शत्रु ने नीचे नीचे सुरंग तैयार कर ली है, और

खाई के एक भाग पर मिट्टी से ढका हुआ लकड़ी और घास का पुल बाँधने का यत्न किया है। राजपूतों ने इस पुल को तोपों से नष्ट कर दिया, और सुरंग में खौलता हुआ तेल ढालकर उन लोगों को मार डाला जो भीतर काम कर रहे थे। इस प्रकार अलाउद्दीन का गढ़ लेने का सब यत्न निष्फल हुआ। उसी समय वर्षा से भी उसे बहुत कष्ट होने लगा जो मूसलाधार होती थी। अतएव उसने हम्मीर के पास सँदेसा भेजा कि कृपा करके रतिपाल को मेरे डेरे में भेज दीजिए क्योंकि मुझे उनसे इस अभिप्राय से बातचीत करने की इच्छा है कि जिसमें हमारे और आपके बीच का झगड़ा शांतिपूर्वक तै हो जाय।

राजा ने रतिपाल को जाकर अलाउद्दीन की बात सुनने की आज्ञा दी। रणमल रतिपाल के प्रभाव से कुढ़ता था और नहीं चाहता था कि वह इस काम के लिये चुना जाय।

अलाउद्दीन रतिपाल से बड़े ही आदर के साथ मिला। उसके दरबार के डेरे में प्रवेश करने पर मुसलमान सरदार अपने स्थान पर से उठा और उसे आलिंगन करके उसने अपनी गद्दी पर बैठाया और वह आप उसके बगल में बैठ गया। उसने अमूल्य भेंट उसके सामने रखवाई तथा और भा पुरस्कार देने का वचन दिया। रतिपाल इस सुंदर व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुआ। उस धूर्त मुसलमान ने यह देखकर और लोगों का वहाँ से हट जाने की आज्ञा दी। जब वे सब चले गए तब उसने रतिपाल से बातचीत आरंभ की। उसने कहा—“मैं अलाउद्दीन मुसलमानों का बादशाह हूँ, और मैंने अब तक सैकड़ों दुर्ग ढहाए और लिए हैं। किंतु शत्रु के बल से रणथंभौर को लेना मेरे लिये असंभव है। इस दुर्ग को घेरने से मेरा अभिप्राय केवल उसके अधिकार की ख्याति पाना है। मैं आशा करता हूँ (जब कि आपने मुझसे मिलना स्वीकार किया है) कि मैं अपना मनोरथ सिद्ध करूँगा और अपनी इच्छा पूरी करने में मुझे आपसे कुछ सहायता पाने का भरोसा है। मैं अपने लिये और अधिक राज्य और किले नहीं चाहता। जब मैं इस गढ़ को लूँगा तब इसके सिवाय और क्या

कर सकता हूँ कि उसे आप ऐसे मित्र को दे दूँ ? मुझे तो उसके प्रा करने की ख्याति हीं से प्रसन्नता होगी ।” ऐसी ऐसी फुसलाहटों रतिपाल का मन फिर गया और उसने इस बात का अलाउद्दीन निश्चय भी करा दिया । इस पर, अलाउद्दीन अपने लक्ष्य को और दृढ़ करने के लिये रतिपाल को अपने हरम में ले गया और व उसने उसे अपनी सब से छोटी बहिन के साथ खान पान करने लिये एकांत में छोड़ दिया । यह हो चुकने पर रतिपाल मुसलमानों डेरे से निकलकर दुर्ग को लौट आया ।

रतिपाल इस प्रकार अलाउद्दीन के पक्ष में हो गया । अतएव जब वह राजा के पास आया तब उसने जो कुछ मुसलमानों के डेरे में देखा था और जो कुछ अलाउद्दीन ने उससे कहा था, उसका सच्चा वृत्ति नहीं कहा । यह न कहकर कि अलाउद्दीन का बल राजपूतों के लगतार आक्रमण से बिल्कुल टूट गया है और वह गढ़ लेने का ना मात्र करके लौटना चाहता है, उसने कहा कि वह न केवल राजा दीनतापूर्वक अधीनता स्वीकार कराने ही पर उतारू है वरंच उस अपनी धमकियों को सच्चा कर दिखाने की सामर्थ्य है । रतिपाल कहा कि अलाउद्दीन इस बात को मानता है कि राजपूतों ने उस कुछ सिपाहियों को मारा है किंतु इसकी उसे कुछ परवा नहीं, “गोज की एक टाँग टूटने से वह लँगड़ा नहीं कहा जा सकता ।” उसने हम्मी को संमति दी कि ऐसी दशा में आपको स्वयं इसी रात को रणम से मिलना चाहिए और उसे आक्रमणकारियों को हटाने पर उद्य करना चाहिए, देश-द्रोही रतिपाल ने कहा कि रणमल एक असाध रण योद्धा है किंतु वह शत्रुओं को हटाने का पूरा पूरा उद्योग ना करता है क्योंकि वह राजा से किसी न किसी बात के लिये दुखी है रतिपाल बोला कि राजा के मिलने से सब बातें ठीक हो जायेंगी ।

राजा से मिलने के उपरांत रतिपाल रणमल से मिलने गया और वहाँ जाकर मानों अपने पुराने मित्र को सर्वनाश से बचाने निमित्त उसने कहा कि न जाने क्यों राजा का चित्त तुम्हारी ओर

फेर गया है। इनसे युद्ध के पहले ही हल्ले में तुम शत्रु की ओर हो जाना। उनसे कहा कि हम्मीर इसी रात को तुम्हें बंदी बनाना चाहता है। उसने उससे वह घड़ी भी बतलाई जब राजा उसके पास इस अभिप्राय से आवेंगे। यह सब करके रतिपाल चुपचाप अपनी इस शठता का परिणाम देखने की प्रतीक्षा करने लगा।

जब रतिपाल हम्मीर से मिलने गया था तब उनके पास उनका भाई वीरम भी था। उसने अपने भाई से यह विश्वास प्रगट किया कि रतिपाल ने जो कुछ कहा है वह सत्य नहीं है। शत्रुओं ने उसे अपनी ओर मिला लिया है। उसने कहा कि बोलते समय रतिपाल के मुँह से मद्य की गंध आती थी, और मद्यप का विश्वास करना उचित नहीं। कुल का अभिमान, शील, विवेक, लज्जा, स्वामिभक्ति, सत्य और शौच ये ऐसे गुण हैं जो मद्यपों में नहीं पाए जा सकते। अपनी प्रजा में राजद्रोह का प्रचार रोकने के लिये वीरम ने अपने भाई को रतिपाल के वध का संमति दी। किंतु राजा ने इस प्रस्ताव को यह कहकर अस्वीकार किया कि मेरा दुर्ग इतना दृढ़ है कि वह शत्रु को किसी दशा में भी रोक सकता है; किंतु यदि कहीं संयोगवश रतिपाल के वध के अनंतर यह गढ़ शत्रुओं के हाथ में पड़ जायगा तो लोगों को यह कहने को हो जायगा कि एक निर्दोष मनुष्य के वध के दुष्कर्म के कारण उनका पतन हुआ।

इस बीच में रतिपाल ने राजा के निवास में यह खबर फैलाई कि अलाउद्दीन केवल राजा की कन्या से विवाह करना चाहता है और यदि उसकी यह इच्छा पूरी हो जाय तो वह संधि करने के लिये प्रस्तुत है, क्योंकि वह और कुछ नहीं चाहता। इस पर रानियों ने राजकन्या से राजा के पास जाकर यह कहने को कहा कि मैं अलाउद्दीन से विवाह करने में सहमत हूँ। वह कन्या वहाँ गई जहाँ उसके पिता बैठे थे और उसने उनसे अपने राज्य और शरीर की रक्षा के हेतु अपने को मुसलमान को दे डालने की प्रार्थना की। उस (कन्या) ने कहा “हे पिता मैं एक व्यथ काँच के टुकड़े के समान

हूँ और आपका राज्य और प्राण चिंतामणि वा पारस पत्थर के समान है; मैं बिनती करती हूँ कि आप उनको रखने के लिये मुझको फेंक दीजिए ।”

जब वह भोली भाली लड़की इस प्रकार हाथ जोड़कर बोली तब राजा का जी भर आया । उन्होंने उससे कहा, “तुम अभी बालिका हो इससे जो कुछ तुम्हें सिखाया गया है उसके कहने में तुम्हारा कोई दोष नहीं । किंतु मैं नहीं कह सकता कि आपको क्या दंड मिलना चाहिए जिन्होंने तुम्हारे हृदय में ऐसे ख्याल भर दिए हैं । स्त्रियों का अंग भंग करना राजपूतों का काम नहीं, नहीं तो उनकी जीभ काट ली जाती जिन्होंने ऐसी कुत्सित बात मेरी कन्या के कान में कही ।” हम्मीर ने फिर कहा “पुत्री ! तुम अभी इन बातों को समझने के लिये बहुत छोटी हो इससे तुम्हें बतलाना व्यर्थ है । किंतु तुम्हें म्लेच्छ मुसलमान को देकर सुख भोगना मेरे लिये ऐसा ही है जैसा अपना ही मांस खाकर जीवन काटना । ऐसे संबंध से मेरे कुल में कलंक लगेगा, मुक्ति की आशा नष्ट होगी, इस संसार में हमारे अंतिम दिन कड़ुए हो जायेंगे । मैं ऐसे कलंकित जीवन की अपेक्षा दस हजार बार मरना अच्छा समझता हूँ ।” अब वे चुप हुए और दृढ़ता तथा स्नेह पूर्वक अपनी कन्या को चले जाने को उन्होंने कहा ।

राजा, रतिपाल की संमति के अनुसार संध्या के समय अपनी शंकाओं को मिटाने के लिये रणमल के ढेर पर जाने को तैयार हुए, साथ में उन्होंने बहुत थोड़े आदमी लिए । जब वे रणमल के ढेर के निकट पहुँचे तब उसको (रणमल को) रतिपाल की बात याद आई । वह यह समझकर कि यदि मैं यहाँ ठहरूँगा तो मेरा बंदी होना निश्चय है, अपने दल के सहित गढ़ से भाग निकला और अलाउद्दीन की ओर जा मिला; यह देखकर रतिपाल ने भी वैसा ही किया ।

राजा इस प्रकार ठगे और घबड़ाए हुए कोट में लौट आए उन्होंने भंडारी को बुलाकर भंडार की दशा पूछी कि कितने दिन तक सामान चल सकता है । भंडारी ने सच्ची बात कहने में अपने प्रभाव की

हानि सभ्य कहा कि सामान बहुत दिन तक के लिये काफी है । किंतु ज्योंही यह कहकर वह फिरा त्योंही विदित हुआ कि राजभांडार में कुछ भी अन्न नहीं है । राजा ने यह समाचार पाकर वीरम को उसके मारने और उसकी समस्त संपत्ति पद्मसागर में फेंक देने की आज्ञा दी ।

उस दिन की अनेक आपत्तियाँ को भेलकर, राजा शिथिलता से अपनी शय्या पर जा पड़े । किंतु उनकी आँखों में उस भयावनी रात को नींद नहीं आई । जिन लोगों के साथ वे भाई से बढ़कर स्नेह का व्यवहार करते थे उनका उन्हें ऐसी दशा में अकेले छोड़कर एक एक करके चल खड़े होना उनको असह्य जान पड़ता था । जब सबेरा हुआ तब उन्होंने नित्य-क्रिया की और दरबार में बैठकर वे उस समय का दशा पर विचार करने लगे । उन्होंने सोचा कि जब हमारे राजपूतों ही ने हमें छोड़ दिया तब महिमासाह का क्या विश्वास, जा मुसलमान और विजातीय है । इसी दशा में उन्होंने महिमासाह को बुला भेजा और उससे कहा “सच्चा राजपूत होकर मेरा यह धर्म है कि देश की रक्षा में मैं अपना प्राण त्याग दूँ, किंतु मेरे विचार में यह अनुचित है कि वे लोग जो मेरी जाति के नहीं, मेरे हेतु युद्ध में अपने प्राण खोवें, इससे मेरी इच्छा है कि तुम कोई रक्षा का ऐसा स्थान बतलाओ जहाँ कि तुम सपरिवार जा सकते हो जिससे मैं तुम्हें कुशलपूर्वक वहाँ पहुँचवा दूँ ।”

राजा के इस शील से संकुचित होकर, महिमासाह बिना कुछ उत्तर दिए, अपने घर लौट गया, और वहाँ तलवार लेकर उसने अपने जनाने के सब लोगों को काट डाला और हम्मीर के पास आकर कहा कि मेरी स्त्री और मेरे लड़के जाने को तैयार हैं किंतु मेरी स्त्री एक बेर अपने राजा का मुँह देखना चाहती है जिसकी कृपा से उसने इतने दिनों तक सुख किया । राजा ने यह प्रार्थना अंगीकार की और अपने भाई वीरम के साथ वे महिमासाह के घर गए । किंतु वहाँ जाने पर यह हत्याकांड देखें उनके आश्चर्य और शोक का ठिकाना न रहा । राजा, महिमासाह को हृदय से लगाकर

बच्चे के समान रोने लगे। उन्होंने उससे चले जाने को कहने के कारण अपने को दोषा ठहराया और कहा कि ऐसी अलौकिक स्वामिभक्ति का बदला नहीं हो सकता। अतः धीरे धीरे, वे कोट में लौट आए और प्रत्येक वस्तु को गई हुई समझ, उन्होंने अपने लोगों से कहा कि तुम लोग जो उचित समझो वह करो, मैं तो शत्रु के बीच लड़कर प्राण देने को उद्यत हूँ। इसकी तैयारी में, उनके परिवार की स्त्रियाँ रंगदेवी के साथ चिता पर जलकर भस्म हो गईं। जब राजा की कन्या चिता पर चढ़ने लगी तब राजा शोक के वशीभूत हुए। वे उसे हृदय से लगाकर छोड़ते ही न थे। किंतु उसने अपने को पिता की गोद से छुड़ाकर अग्नि में विसर्जन कर दिया। जब चौहानों की सती साध्वी ललनाओं की राख के ढेर के अतिरिक्त और कुछ न रह गया तब हस्मीर ने मृतक संस्कार किया और तिलांजलि देकर उनकी आत्माओं को शांत किया। इसके अनंतर वे अपनी बची हुई स्वामिभक्त सेना को लेकर गढ़ के बाहर निकले और शत्रुओं पर दूट पड़े। भीषण संमुख युद्ध उपस्थित हुआ। पहले वीरम युद्ध की कसामस के बीच लड़ते हुए गिरे, फिर महिमासाह के हृदय में गोली लगी। इसके पीछे जाज, गंगाधर, ताक और क्षेत्रसिंह परमार ने उनका साथ दिया। सबके अंत में महापराक्रमी हस्मीर सैकड़ों भालों से बिधे हुए गिरे। प्राण का लेश रहते भी शत्रु के हाथ में पड़ना घुरा समझ उन्होंने एक ही बार में अपने हाथों से सिर को धड़ से जुदा कर दिया और इस प्रकार अपने जीवन को शेष किया। इस प्रकार चौहानों के अंतिम राजा हस्मीर का पतन हुआ ! यह शोचनीय घटना उनके राज्य के अठारहवें वर्ष में श्रावण के महीने में हुई।

यहाँ पर यह कथा समाप्त होती है। दोनों के मिलान करने पर मुख्य मुख्य बातों में आकाश-पाताल का अंतर जान पड़ता है। किस में कहाँ तक सत्यता है इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है। दोनों कथाओं में हस्मीर के पिता का नाम क्षेत्रसिंह लिखा है अतएव इस संबंध में कोई संदेह की बात नहीं जान पड़ती। हस्मीररासी

में लिखा है कि कि हम्मीर का जन्म विक्रम संवत् ११४१
 शाके १००८ में हुआ। साथ ही यह भी लिखा है कि अलाउद्दीन
 का जन्म भी इसी दिन हुआ। इस हिसाब से हम्मीर और
 अलाउद्दीन का जन्म १०८४ ई० में हुआ। पर अन्य ऐतिहासिक
 ग्रंथों से यह बात ठीक नहीं जान पड़ती। हम्मीर महाकाव्य में
 हम्मीर के गद्दी पर बैठने का संवत् १३३० (सन् १२८३ ई०) दिया
 है। यह ठीक जान पड़ता है। फिर हम्मीर महाकाव्य में लिखा है
 कि चौहानराज की मृत्यु उनके राज्य के अठारहवें वर्ष में अर्थात्
 संवत् १३४८ (सन् १३०१ ई०) में हुई। अमोर खुशक की तारीख
 आलाई में यह तिथि तीसरी जीलकदः ७०० हिजरी (जुलाई १३०१
 ई०) दी है। मुसलमानी इतिहासों से विदित है कि सन् १२९६ में
 सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मदशाह अपने चाचा जलालुद्दीन फीरोज-
 शाह को मारकर गद्दी पर बैठा, और सन् १३१६ ई० तक राज्य
 करता रहा। इस अवस्था में हम्मीररासो में दिए हुए संवत् ठीक नहीं
 हो सकते। कदाचित् यहाँ यह कह देना भी अनुचित न होगा कि
 हम्मीररासो में हम्मीर की जो जन्म कुंडली दी है वह भी ठीक नहीं है।

दूसरी बात जो इस काव्य के संबंध में विचार करने की है वह
 यह है कि हम्मीर की अलाउद्दीन से लड़ाई क्यों हुई। हम्मीररासो
 तथा ऐसे ही अन्य हिंदी काव्यों में मीर महिमाशाह की रक्षा के लिये
 युद्ध का होना लिखा गया है और इसमें कोई संदेह नहीं कि इस
 अद्भुत कथा से हम्मीर का गौरव बहुत कुछ बढ़ जाता है और कथा
 में भी एक अद्भुत रस का संचार हो आता है। पर हम्मीर महाकाव्य
 में इसका कहीं नाम भी नहीं है और न कहीं किसी पुराने इतिहास
 में इसका वर्णन मिलता है। पर महिमाशाह का हम्मीर के यहाँ
 रहना निश्चित है तथा उसके अपने वाल वन्चों को मारकर लड़ाई
 में हम्मीर का साथ देने की बात भी ठीक है। यह अवस्था तभी हो
 सकती है जब महिमाशाह अपने को हम्मीर का किसी बड़े उपकार
 के लिये ऋणी मानता हो। अलाउद्दीन का साथ न देकर हम्मीर का

साथ देना एक मुसलमान सर्दार के लिये निस्संदेह बड़े आश्चर्य की बात है। हिंदी काव्यों में जिन घटनाओं का उल्लेख है उनका होना तो को असंभव बात है ही नहीं। भारतवर्ष में जितने बड़े युद्ध हुए हैं सब स्त्रियों ही कारण हुए हैं। पृथ्वीराज के समय में तो माना इसकी पराकाष्ठा हो गई थी। पर मुसलमानों के लिये यह निन्दा की बात थी। इस लिये मुसलमान इतिहासकारों का इस घटना को छोड़कर युद्ध का कुछ दूसरा ही कारण बताना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। नयनचंद्र सूरि का कुछ न कहना अवश्य संदेह उत्पन्न करता है अलाउद्दीन ने जिस नीचता से रतिपाल को मिला लिया इसका तो यह कवि पूरा पूरा वर्णन करता है। यहाँ के कुछ श्लोक उद्धृत कर देना उचित जान पड़ता है—

अंतरंतःपुरं नीत्वा शकेशस्तमभोजयत् ।

अपीप्यत्तद्भगिन्या च प्रतीत्यै मदिरामपि ॥ ८१ ॥

प्रतिश्रुत्य शकेशोक्तं ततः सर्वं स दुर्मतिः ।

विरोधोद्बोधिनीर्वाचो गत्वा राज्ञे न्यरूपयत् ॥ ८२ ॥

[सर्ग १३]

इनसे यह स्पष्ट विदित होता है कि नयनचंद्र कुछ मुसलमानों का पक्षपाती नहीं था। कुछ लोग कह सकते हैं कि जैनी होने से उसका विरोधी होना असंभव नहीं है। मेरा अनुमान तो यह है कि उस मुसलमानी इतिहासों के आधार पर अपना काव्य लिखा है क्योंकि उसमें कथित घटनाएँ और सन्-संवत् सब मुसलमानी इतिहासों में मिलते हैं। जो कुछ हो, इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐतिहासिक दृष्टि से नयनचंद्र सूरि का काव्य जोधराज के रासो से अधिक प्रामाणिक है।

तीसरी घटना, जिसपर विचार करना आवश्यक है, वह हम्मीर की मृत्यु है। दोनों काव्यों से यह सिद्ध होता है कि हम्मीर ने आत्महत्या की। हम्मीररासो में इसका कारण कुछ और ही लिखा है और हम्मीर महाकाव्य में कुछ और है। जोधराज के अनुसार हम्मीर का

विजय प्राप्त हुई और विजय के उत्साह में उसने मुसलमानी भंडे-
 निशानों को आगे करके अपने गढ़ की ओर पयान किया जिसपर
 रानियों और रनिवास की अन्य महिलाओं ने यह समझा कि हम्मीर
 की हार हुई और मुसलमानी सेना गढ़ को लेने के लिये आ रही है।
 इसपर अपने सतीत्व की रक्षा के निमित्त उन्होंने अग्नि में अपने
 प्राण दे दिए। इस पर हम्मीर को ऐसी ग्लानि हुई कि उसने भी
 अपने प्राण देकर अपने संताप को शांत किया। नयनचंद्र के अनु-
 सार रणमल और रतिपाल के विश्वासघात पर विजय की सब आशा
 जाती रही और हम्मीर ने पहले राजमहिलाओं को अग्निदेव के
 अर्पण कर रण में वीरोचित मृत्यु से मरना विचारा। अंत में जब
 उसका शरीर रणक्षेत्र में विधकर गिर पड़ा तो उसे आशंका हुई कि
 कहीं मुसलमानों के हाथ से मेरे प्राण न जायँ। इसलिये वहीं उसने
 अपने मस्तक को अपने हाथ से काटकर इस आशंकित अपमान से
 अपनी रक्षा की। दोनों बातों में राजमहिलाओं का अग्नि में आत्म-
 समर्पण करना और हम्मीर का आत्महत्या करना मिलता है और
 इन घटनाओं के संघटित होने में भी कोई संदेह या आश्चर्य की बात
 नहीं है। जो कथा इस संबंध में दोनों काव्यों में दी है वह युक्तिसंगत
 जान पड़ती है। कौन कहाँ तक सत्य है, इसका निर्णय करना तो बड़ा
 कठिन है, विशेष करके ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में तो इस
 संबंध में कुछ करना व्यर्थ है। जोधराज का यह लिखना कि अला-
 उद्दीन ने समुद्र में कूदकर अपने प्राण दे दिए, निस्संदेह असत्य जान
 पड़ता है। इस युद्ध के १५ वर्ष पीछे तक वह जीता रहा, इसके अनेक
 प्रमाण मिलते हैं।

जो कुछ हो, ऐतिहासिक अंश में गढ़बढ़ रहने पर भी हम्मीर की
 कथा बड़ी अद्भुत है और भारतवर्ष के गौरव को बढ़ानेवाली है। कौन
 ऐसा स्वदेशाभिमानी होगा जो राजमहिलाओं के जौहर और हम्मीर
 की वीरता तथा उसके साहस का वृत्तांत पढ़कर अपने को धन्य न
 मानता हो और जिसका हृदय देशगौरव से न भर जाता हो। धन्य

है वह देश जहाँ ऐसे ऐसे वीर हो गए हैं। धन्य हैं वे स्त्रियाँ जो अपने सतीत्व की रक्षा के लिये बिना कुछ सोचे विचारे इस क्षणभंगु शरीर को नष्ट कर डालती थीं और धन्य हैं वे लोग जो उनके वृत्तान्तों को पढ़कर आनंदित और प्रफुल्लित होते हों और जिन्हें अपने देश के गौरव की रक्षा का उत्साह होता हो।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि दो हम्मीर हो गए हैं। एक के विषय में तो मैंने इतना कुछ मसाला इकट्ठा कर दिया है। मेवाड़ के हम्मीर के विषय में भी कुछ कह देना आवश्यक जानकर ठाकुर हनुवंत सिंह लिखित मेवाड़ के इतिहास से इनका वृत्तान्त उद्धृत कर देता हूँ। वा इस प्रकार है—

“लखमसी जी के पीछे मुसलमानों से बैर लेनेवाला अब केवल उनका लड़का अजयसिंह था जो कि केलवाड़े में रहता था। यह केलवाड़ा अर्वाली पर्वत के उच्च प्रदेश में है। वहाँ उसकी रक्षा करने वाले भोल लोग थे। अजयसिंह जी के बड़े भाई अरसी जी के कुँव हम्मीरसिंह को अपने पीछे गद्दी पर बिठलाने का वचन लखमसी जी ने अजयसिंह से ले लिया था। इससे तथा अजयसिंह के पुत्र हम्मीरसिंह के समान पराक्रमी न होने से उनके उत्तराधिकारी हम्मीरसिंह ही थे। इनकी माता के विषय में यह कथा प्रसिद्ध है कि एक दिन अरसी जी युवराजत्व अवस्था में ऊदवा गाँव के जंगल में आखेट को गए थे। वहाँ जब एक सूअर के पीछे इन्होंने घोड़ा दिया तो वह भागकर ज्वार के खेत में घुस गया। ज्योंही अरसी जी सूअर के पीछे खेत में जाने लगे त्योंही एक कन्या ने, जो उस खेत में चौकसी कर रही थी, इनको भीतर जाने से रोका और कहा कि ठहरो सूअर को मैं बाहर निकाले देती हूँ। फिर उस लड़की ने ज्वार के पेड़ को उखाड़ सूअर को दो चार सपाटा लगाकर उसे उनको आखदेड़ दिया। उस लड़की को निर्भयता का देख आखेटकों को बड़ा आश्चर्य हुआ। पीछे जब कि वे एक नाले पर विश्राम करने के लिए ठहरे हुए थे तो मनसनाता हुआ दूर से एक पत्थर का टुकड़ा आया और

घोड़े की टाँग में ऐसे जोर से लगा कि उसका पैर टूट गया। बहुत ही श्रुते से पत्थर के टुकड़े से घोड़े का पैर टूटा हुआ देख खोजा गया तो उसकी मारनेवाली भी वही खेत की रखवालिन कन्या निकली। रक्षियों के उड़ाने को उसने गोफन में रख कर गिल्ला फेंका था परंतु वियोग से वह घोड़े को आ लगा। जब उसने यह सुना कि घोड़े को चोट लग गई है तो अरसी जी के पास जाकर अपने बिना जाने अपराध की क्षमा बड़ी नम्रता से माँगी। संध्या को लौटते समय अरसी जी को फिर वही कन्या अपने घर को जाती हुई राह में मिली। यह लड़की माथे पर दूध का मटका रखे और दोनों हाथों में दो पड़रे (भैंस के बच्चे) लिए हुए जा रही थी, उस समय अरसी जी के साथियों में से एक ने हँसी में उसके दूध को गिरा देने का विचार किया और वह मनुष्य घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास होकर निकला। इससे यह लड़की कुछ भी न बचवाई और अपने हाथ में का एक पड़रा घोड़े के पिछले पैरों में ऐसा मारा कि घोड़ा और सवार दोनों धरती पर गिर पड़े और हँसी के बदले उलटी अपनी हानि कर ली। अरसी जी ने घर जाकर निश्चय कराया तो वह कन्या चंदाना वंश (चहुवानों की एक शाखा है) के एक राजपूत की पुत्री निकली। अरसी जी ने उसके बाप को बुलवाकर उससे अपने विवाह करने के लिये वह लड़की माँगी, परंतु उस राजपूत ने निषेध कर दिया। घर पहुँचकर जब अपनी स्त्री से उसने सब वृत्तांत कहा तो वह पति के इस कार्य से बहुत अप्रसन्न हुई और लग्न स्वीकार करने के लिये अपने पति को फिर अरसी जी के पास उसने लौटाया। अंत में अरसी जी का उस कन्या के साथ विवाह हुआ, जिसके पेट से अति पराक्रमी हम्मीरसिंह ने जन्म लिया। सिंहनी के पेट में तो सिंह ही जन्म लेता है। हम्मीरसिंह जी बचपन में अपनी ननसाल में रहकर बड़े हुए थे।

“हम्मीरसिंह के काका अजयसिंह जब केलवाड़े में रहते थे तो उनकी मुसलमानों के सिवाय पहाड़ियों में रहनेवाले राजपूत सदाँरों

के साथ भी बड़ी लड़ाई रही। इन पहाड़ियों का मुखिया बालेछा जाति का मूँजा नामी एक राजपूत था जिसके साथ लड़ाई करने में एक बार अजयसिंह बहुत घायल हुए। इस समय अजयसिंह के दो पुत्र सजनसी और अजीतसी भी थे जिनकी आयु अनुमान १५ वर्ष की थी परंतु वे कुछ भी वीरता लड़ाई में न दिखा सके। इससे उन्होंने अपने भतीजे हम्मीरसिंह को बुला लिया और उनको सब वृत्तांत कह सुनाया। हम्मीरसिंह अपने दोनों चचेरे भाइयों से बड़े न थे परंतु तो भी उन्होंने मूँजा बालेछा का सिर काट लाना ऐसा विचार निश्चय करके वे निकले। थोड़े दिनों में उन्होंने मूँजा का सिर काट लाकर अपने काका को भेंट किया। अजयसिंह इस बात से बहुत प्रसन्न हुए, और मूँजा के ही रुधिर से तिलक करके अपने पीछे हम्मीरसिंह को राज्य का अधिकारी ठहराया। जब अजयसिंह मरे तो उनसे पहले ही अजमाल मर चुके थे। सजनसी गद्दी के लिये हम्मीरसिंह को अधिकारी नियत हुआ देख दक्षिण में चले गए, जिनके वंश में एक ऐसा वीर पुरुष जन्मा कि जिसने मुसलमानों से पूरा बदला ही न लिया किंतु अपने असामान्य पराक्रम और साहस से मुसलमानी राज्य का मूलोच्छेदन ही कर दिया। यह पुरुष मरहठों के राज्य की नाँव जमानेवाला सितारे का राजा शिव जी था जो समस्त भारतवर्ष में विख्यात है। सजनसी से चारहवीं पीढ़ी में यह हिंदू धर्मरक्षक और अतुलित पराक्रमी वीर पुरुष शिव जी हुआ है। सजनसी जी से पीछे दुलीपजी, सीओजी, भोराजी, देवराज, उग्रसेन, माहुल जी, खेलुजी जनकोजी, संतोजी, शाहजी और शिव जी हुए। अजयसिंह के पीछे हम्मीरसिंह सं० १३०१ ई० में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। उस समय मेवाड़ की गिरती दशा होने से आस-पास के राजा लोगों ने मेवाड़ के राणाओं को अपना शिरोमणि मानना छोड़ दिया था। हम्मीरसिंह ने अपने पहाड़ी साथियों को इकट्ठा करके जिन जिन राजाओं ने इनको अधिष्ठाता मानना छोड़ दिया था उन सभी को परास्त करके अपने अधीन किया। इस प्रकार

गोड़े दिनों में हीं हम्मीरसिंह ने अपना गौरव आस पास के राजाओं पर जमा लिया । अब चित्तौर को किस विधि लूँ इस विचार में हम्मीरसिंह पड़े ।

“हम्मीरसिंह ने चित्तौर के आस-पास का सारा देश लूटकर उजाड़ डाला, अकेला चित्तौर ही मुसलमानों के अधीन रह गया था । किसी प्रकार उसे लूँ, यही हम्मीरसिंह का दृढ़ विचार था । एक दिन उन्होंने अपने सब मनुष्यों को बुलाकर कहा कि “भाइयो ! जिसे जीने की इच्छा हो, जिसे संसार के इन क्षणिक सुखों के बदले स्वर्ग का सुख छोड़ देना हो, जिसे अपनी प्रतिष्ठा की अपेक्षा प्राण प्यारे हों, जिसे अपने उग्र वैरी मुसलमानों का डर हो, जिसे अपनी गई हुई भूमाता को तुर्कों के हाथ में से निकाल लेने की हौस न हो और जिसको इस अर्वली पर्वत की झाड़ी जंगलों में सदा पड़े रहने की इच्छा हो, वह भले ही सुख से इस अर्वली की विकट गुहा गुफाओं में रहे, यह मेरी आज्ञा है । जो मेरी भुजा में बल होगा तो तुम्हारे चले जाने पर भी अपने कुलदेवता की सहायता से अकेला भी चित्तौर को लूँगा । तुम लोग सुख से जाओ और जो ईश्वर-इच्छा से मैं चित्तौर को जल्दी ले सका तो तुमको पाछे बुला लूँगा, उस समय आ जाना ।” हम्मीरसिंह के मनुष्यों में राजपूत भी थे परंतु अधिक तो आसपास के भील लोग थे । उन लोगों ने बालकपन से ही हम्मीरसिंह का पराक्रम देख रखा था और निरंतर उनके साथ रहने से वे भी राजपूतों के समान ही साहसी और पराक्रमी हो गए थे और हम्मीरसिंह के चाल-चलन तथा व्यवहार से ही वे लोग ऐसे प्रसन्न थे कि यदि वे कहते तो प्राण देने को वे लोग उद्यत हो जाते । हम्मीरसिंह के उपरोक्त वचनों का उत्तर उन लोगों ने इस प्रकार दिया—“हम मरेंगे अथवा शत्रुओं को मारेंगे परंतु अपने राजा को छोड़कर कभी पीछे न हटेंगे, हम अपने कुल को कलंकित न करेंगे, हम अपने शत्रुओं के हाथ में से अपनी भूमाता को छुड़ाने के लिये अपने प्राण देंगे और इस जगत् के क्षणस्थायी सुखों को छोड़ स्वर्ग

का सदैव सुख भोगेंगे।” इस प्रकार वे एक स्वर होकर बोले कि मानो एक साथ मेघ की गर्जना हुई। हम्मीरसिंह ने इन वीर राजपूतों के ऊपर पुष्पों की वृष्टि करके कहा “धन्य हो मेरे प्यारे ! धन्य हो ! धन्य हो क्षत्रिय-पुत्रो ! धन्य हो ! ऐसे ही उत्तर की मैं आशा रखता था और सोही अंत को मिला। तुम लोगों की शुभचिंतकता से मैं अपनी भूमाता को छुड़ा सकूँगा। तुम्हारी राजभक्ति और तुम्हारी एकता देख, तुम्हारा साहस और पराक्रम देख हमारे कुलदेवता हमारे सहायक होंगे। और मुझे निश्चय है कि हमारा मनोरथ सिद्ध होगा; इसलिये प्यारे वीर पुरुषो, तैयार हो जाओ। अपने बाल-बच्चों को इस पहाड़ की सुरक्षित गुफा में छोड़ आओ और उनकी सब प्रकार रक्षा होती रहे इसके लिये पाँच सहस्र वीर भीलों को नियत कर चलो।” हम्मीरसिंह के इन वाक्यों को सुनकर सर्वत्र जय जयकार होने लगी। उक्त प्रकार के प्रबंध करके वे सब चित्तौर के लिये पहाड़ों से उतर पड़े।

“इस समय हम्मीरसिंह के पास पाँच हजार से कुछ अधिक मनुष्य थे तथापि, ‘एक मराऊ सौ को मारे’ इस कहावत के अनुसार वे पाँच लाख के समान थे। उन्होंने चित्तौर के चारों ओर का देश लूट लिया, ग्राम जला दिए, मुसलमानों को पकड़ लिया। चारों ओर अशांति रहने से व्यापारी व्यापार से और किसान खेती करने से रुक गए। मुसलमान लोग अपनी प्रजा का रक्षण न कर सके। इससे प्रजा का समूह हम्मीरसिंह के अधीन हो बसने लगा। इस समय हम्मीरसिंह की रहन सहन अर्वली पर्वत का चोटियों पर केलवाड़े में थी। वहाँ जाने का मार्ग बड़ा बेड़ा था। शत्रुओं के अधिकार कर लेने योग्य कदापि न था। अर्वली पर्वत के भीतरी गुप्त स्थलों को वहाँ से भाग जाने का मार्ग पृथक् था। ये गुप्त स्थल पहाड़ों की घनी झाड़ियों में होने से बड़े विकट थे। वहाँ इतने फलादि खाने योग्य पदार्थ उपलब्ध होते थे कि वर्षों तक सहस्रों मनुष्यों का निर्वाह हो सकता था। केलवाड़े से पश्चिम ओर का मार्ग खुला था जहाँ

होकर गुजरात और मारवाड़ का माल व्यापारी लाते थे तथा मित्रता रखनेवाले भोलों से भोजन की बड़ी सहायता मिलती थी। बाल वच्चों की रक्षा के लिये जो पाँच सहस्र भील नियत थे वे आवश्यकतानुसार रसद पहुँचा जाते थे। अच्छी तरह सोच समझ के और चतुराई से हम्मीरसिंह ने अपने लिये निर्भय स्थान ढूँढ़ा था। परंतु हम्मीरसिंह की बुद्धि को भला उनका दुर्दांत शत्रु अलाउद्दीन कैसे सह सकता था। वह सैन्य लेकर स्वयं आया और उसने अर्बली का पूर्व भाग जीत लिया। परंतु इससे हम्मीर की कुछ भी हानि न हुई। बादशाह ने अर्बली का पूर्वी भाग जीत लिया तो वे दक्षिण भाग में धूम मचाने लगे। अंत में अलाउद्दीन थक गया और हम्मीरसिंह को अधीन करने का काम चित्तौर के सूबेदार मालदेव को सौंप आप दिल्ली को लौट गया।

मालदेव अपने बल से तो हम्मीरसिंह को वश में कर न सका, छल से उनको वश में लाने तथा उनके अपमान करने का विचार कर अपनी पुत्री के विवाह कर देने के बहाने से उसने हम्मीरसिंह के पास नारियल भेजा। हम्मीरसिंह ने अपने संपूर्ण राजपूत लोगों तथा साथियों से इस विषय में संमति ली तो उन सभी ने इस संबंध के स्वीकार करने का निषेध किया, परंतु हम्मीरसिंह ने कहा कि "भाइयो मेरी समझ में तो यही आता है कि तुम सब भूल रहे हो। तुम लोग जो भय बतलाते हो उससे मैं अजान नहीं हूँ परंतु राजपूत होकर किसी के डर से अपना निश्चय किया हुआ कार्य छोड़ देना यह बड़ी कायरता है। यह राजपूत का नहीं किंतु दासीपुत्र का काम है। राजपूतों को तो सदा दुःख के समय के लिये कटिबद्ध रहना चाहिए। राजपूतों को तो एक बार घायल होकर घर भी छोड़ना पड़ता है, और एक बार बाजे गाजे के साथ गद्दी पर भी बैठना पड़ता है। जो भेजा हुआ यह टीका न स्वीकार करूँ तो मेरी माँ की कोख कलंकित होवे। मेरे शूर वीर भाइयो ! मैं यह जानता हूँ कि तुम लोग अपने प्राणों की अपेक्षा मेरे प्राणों की अधिक चिंता

रखते हो परंतु इसमें तुम्हारी भूल है। घर में बैठे बैठे सवा मन रुई के गद्दे पर सोते सोते और बातें करते करते सैकड़ों मनुष्य मर जाते हैं, यह हम सभी से छिपा नहीं है। क्या यह तुम समझते हो कि जो इस संसार का मारने वा जिलानेवाला है वह हमको जो डर-का घर में छिप जावेंगे तो न मारेगा। और जो उसे जीवित रखना होगा तो हमारा नाम मिटानेवाला कौन है ? इसलिये घर में निकम्मे पड़े पड़े मर जाने से तो शत्रु को मारते मारते मरना ही श्रेष्ठ है, नहीं तो जीना भी किस काम का है। भला इस वहाने से जिन स्थानों में मेरे बाप दादे रहते थे, जिन किलों के ऊपर मेरे बाप दादों के झंडे फहराते थे, जिन जंगलों में मेरे बाप दादों के शरीर का रुधिर बह चुका है, वे स्थल, वे गढ़ और राजमहल तो देखने को मिलेंगे। मेरे बाप दादे जिन स्थानों में मरे हैं वहीं मैं भी मरूँगा, उनके साथ मैं भी स्वर्गधाम पाऊँगा। कहीं हमारे कुल देवताओं ने ही अथवा हमारी भूमाता ने ही इस वहाने से मुझे वहाँ बुलवाया हो। कदाचित् उनकी इच्छा यही हो कि मैं वहाँ जाऊँ, इसलिये वहाँ जाने से वे भी हमारी सहायता अवश्य करेंगी। भाइयो ! मेरी इच्छा है कि नारियल को स्वीकार करना चाहिए। उनके वचन सुनते ही सब लोगों में वीर-रस उमड़ आया और यह बात सबने स्वीकार कर ली और हम्मीरसिंह ने पाँच सौ सवार लेकर चित्तौर जाने का विचार कर लिया। हम्मीरसिंह अपने छँटे छँटाए पाँच सौ सवार लेकर चित्तौर के निकट पहुँचे, उस समय मालदेव के पाँच लड़के उनकी अगवानी को आए। द्वार पर तोरण बँधा हुआ न देखा, तथा नगर में कोई धूमधाम और विवाह की तैयारी न देखी, इससे उन्होंने मालदेव के पुत्रों से पूछा कि क्यों क्या बात है, विवाह की कुछ धूमधाम नहीं दीखती। वे कुछ उत्तर न दे सके। इससे हम्मीरसिंह क्रोध में भरे हुए चित्तौर में जाकर द्वार में बैठ गए। हम्मीरसिंह का क्रोध और उनके मनुष्यों के लाल मुख देख मालदेव के देवता कूँच कर गए। उनके पकड़ लेने की तो सामर्थ्य कहाँ थी। पाँच सौ

वीर नंगी तलवारें लिए अडिग जमे हुए थे, वहाँ किसकी सामर्थ्य थी जो हम्मीरसिंह की ओर देख सके। हम्मीरसिंह अकेले भी मालदेव और उसके पाँच पुत्र के लिये काफी थे। मालदेव ने डरकर अपनी पुत्री के साथ हम्मीरसिंह का पाणिग्रहण कर दिया। उस लड़की ने हम्मीरसिंह को चित्तौर लेने की यह युक्ति बतलाई कि आपको जिस समय दहेज दिया जाय, उस समय आप उस वृद्ध महता को जो मेरे पिता का बड़ा चतुर सेवक है अपने लिये माँग लेना। निदान यही हुआ। इस भाँति विवाह करके हम्मीरसिंह अपने घर को लौटे। केलवाड़े में लोग बड़े अधीर हो रहे थे परंतु हम्मीरसिंह को कुशलपूर्वक लौट आया देख लोग आनंद में मग्न हो गए।

“इस रानी से हम्मीरसिंह के खेतसा नामक पुत्र जन्मा। जब खेतसी एक वर्ष का हुआ तो उसकी माता ने अपने बाप को लिखा कि मुझे अपने क्षेत्रपाल देवता के पगों लगना है, इसलिये मुझे वहाँ बुला लो। मालदेव उस समय मेर लोगों के साथ लड़ने को गया हुआ था, इससे उसके भाइयों ने अपनी बहिन को बुला लिया। इस प्रकार हम्मीरसिंह की खो, उनका पुत्र और कुछ मनुष्य चित्तौर में प्रविष्ट हुए। उसी बूढ़े महता के यत्न से जो कि मालदेव के यहाँ सेना का अध्यक्ष रह चुका था, और अब हम्मीरसिंह के यहाँ रहता था यह परिणाम निकला कि चित्तौर की संपूर्ण राजपूत सेना हम्मीरसिंह के पक्ष में हो गई। हम्मीरसिंह को गद्दा पर बिठाने के समाचार भेजे गए। हम्मीरसिंह आगे से ही सावधान होकर आस पास फिरते रहते थे। यह समाचार पाते ही आ निकले, परंतु इतने ही में शत्रु की सेना भी लड़ने को आ गई। इस समय हम्मीरसिंह के पास थोड़े और शत्रु के पास बहुत से मनुष्य थे परंतु बड़े पराक्रम के साथ अपनी तलवार का स्वाद चखाते हुए हम्मीरसिंह सबको परास्त करके विजय प्राप्तकर चित्तौर में आ गद्दा पर बैठ गए।

“अलाउद्दीन उस समय मर गया था और मुहम्मद तुगलक उस समय बादशाह था। मालदेव यह देखकर कि चित्तौर छिन गया

और बिना बादशाही मदद के फिर मिलना कठिन है, दिल्ली को भाग गया।

“चित्तौर के गढ़ पर राणा जी का भंडा फहराता हुआ देख पहाड़ों में से आसपास के ग्रामों में से तथा गुप्त स्थानों में से निकल निकलकर टिड्डी दल की भाँति लोग चित्तौर में घुसने लगे। चित्तौर में से मुसलमानों का राज्य उठ गया और राजपूतों का आ गया, यह सुनकर लोग आनंद मग्न हो गए और दूर दूर से वहाँ आने लगे। छोटे और बड़े सब ही लोग मुसलमानों से बदला लेने की उमंग के साथ आ एकत्रित हुए। जो इस समय मुसलमानों की सेना चित्तौर लेने को आवे तो उसे कुचल डालो ऐसा वचन सबके मुख से निकलने लगा। हम्मीरसिंह को सेना की कमी न रही। मुसलमानों से युद्ध करने की उमंग में चित्तौर में झुंड के झुंड सहस्रों मनुष्य फिरने लगे। सब कहने लगे कि जो मुसलमानी सेना ऐसे समय में लड़ने को आ जावे तो उसकी अच्छी दुर्गति हो और वे जो कह रहे थे सो ही हुआ। मुहम्मद अपने छिने हुए राज्य को लौटाने को आया। हम्मीरसिंह के पास बिना बुलाए सहस्रों मनुष्य मुसलमानों के प्राण लेने को आ उपस्थित हुए और उनके उत्साह को देख राणाजी तत्काल चित्तौर से बाहर लड़ने के लिये निकले। सिंगोली स्थान के निकट बड़ा संग्राम हुआ। सारांश यह है कि राजपूतों ने इस उत्कटता से युद्ध किया कि मुसलमानों का एक भी मनुष्य दिहली को लौटकर न जाने दिया।

“इस लड़ाई में स्वयं मुहम्मद पकड़ा गया। मालदेव का पुत्र हरीसिंह हम्मीरसिंह के साथ द्वंद्व युद्ध करता हुआ मारा गया। मुहम्मद को तीन महीने तक हम्मीरसिंह ने बँधुआ बनाकर रखा। पीछे मुहम्मद ने अजमेर, रणथंभौर, नागौर आदि परगन सौ हाथी और पचास लाख रुपया देकर छुटकारा पाया।

“हम्मीरसिंह का बड़ा साला बनवीरसिंह उनके पास नौकरी के लिये आया। राणा जी ने उसे सत्कारपूर्वक अपने पास रखा और

उसके निर्वाह के लिये नीमच, जीरण, रतनपुर और कीरार ये पर्वने जागीर में दिए। जागीर देते समय राणा जी ने उससे कहा कि 'यह जागीर भोगो और प्रामाणिक रीति से चाकरी देते रहो। तुम एक समय तुरकों के पादसेवी थे परंतु अब तो अपनी ही जाति के, स्वधर्मवाले के तथा अपने सगे संबंधी के नौकर हो। जिस भूमि के लिये मेरे बाप दादों तथा सहस्रों शुभचिंतक पुरुषों ने अपना रुधिर बहाया था उस भूमि को फिर लौटा लेने का मेरे ऊपर ऋण था सो मैंने कुलदेवताओं की कृपा से लौटा लिया। तुम अब से तुर्क के नौकर न रहकर राजपूत के हुए सो ईमानदारी से काम करना।' वनवीर भी वैसा ही ईमानदार निकला। उसने मरते समय तक शुद्ध चित्त से सेवा की और चंबल नदी के ऊपर का भीनौर ग्राम जीतकर मेवाड़ में मिलाया।

“जब से चित्तौर को मुसलमानों ने ले लिया था तभी से मेवाड़ के राणाओं की प्रतिष्ठा घट गई थी। भरतखंड के समस्त देशी राज्यों में मेवाड़ के राणा शिरोमणि गिने जाते थे परंतु चित्तौर के निकल जाते ही इसमें बाधा पड़ गई थी। जो राजा कर देनेवाले थे उन्होंने कर तथा गद्दी पर बैठते समय भेंट, और आवश्यकता के समय पर सेना द्वारा सहायता करना आदि सब बंद कर दिया था। उस समय संपूर्ण क्षत्रिय राज्य निर्बल थे। उनको किसी के आश्रय की आवश्यकता थी। जब तक चित्तौर में राणा रहे वे लोग उनके आश्रय में रहे परंतु चित्तौर निकल जाने से वे दिल्ली के बादशाहों के अधीन हो गये, परन्तु राणा हस्मीर सिंह जी ने फिर से इस प्रवाह को फेरा। उन्होंने चित्तौर को मुसलमानों से छीनकर उन फेरफारों को फिर ज्यों का त्यों कर दिया जिन्हें कि मुसलमानों ने अपने राज्य समय में कर डाला था। देश के संपूर्ण क्षत्रिय राजा मुसलमानों की अपेक्षा चित्तौर के राणाओं के अधीन रहने से प्रसन्न हुए। ज्यों ही हस्मीरसिंह जी ने चित्तौर ले लिया और मुहम्मद को हराया कि संपूर्ण आर्य वंश के राजा एक के पोछे एक भेंट ले लेकर आए, कर

देने लगे और यथासमय सेना द्वारा युद्ध में सहायता करने लगे। इस भाँति मारवाड़, जयपुर, बूँदी, ग्वालियर, चंदेरी, राजौड़, राय-सेन, सीकरी, कालपी और आवू आदि ठिकानों के राजा हम्मीरसिंह जी के आज्ञाकारी हुए। हम्मीरसिंह जी भरतखंड के समस्त राजपूत राज्यों में महाराजाधिराज बन गए। मुसलमानों के आने से पहले इस देश में मेवाड़ के राजाओं की शक्ति अधिक थी, मुसलमानों के आते ही वह दिन दिन घटने लगी। हम्मीरसिंह जी ने इस अवनति को केवल रोका ही नहीं किंतु मुसलमानों के आने से पहले मेवाड़ की जो उत्तम दशा थी फिर उसी पर उसे पहुँचा दिया। मुहम्मद के पीछे किसी भी बादशाह ने चित्तौर के लेने का साहस न किया, इसका एकमात्र हेतु हम्मीरसिंह जी के पराक्रम का भय था। इसी से हम्मीरसिंह के राज्यशासन के पिछले पचास वर्षों में मेवाड़ में अटल शांति रही और इस दीर्घकाल की शांति ने मेवाड़ देश को व्यापार, धन, विद्या, सभ्यता, तथा शूर पुरुषों से परिपूर्ण कर दिया। हम्मीरसिंह जी जैसे बलवान् थे वैसे ही राज्य चलाने में, न्याय करने में, कला-कौशल को उन्नति देने में प्रवीण थे। उनके राज्य में यह कहावत पूर्णतया चरितार्थ हो गई थी कि “बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं”; शांति बढ़ने से संपूर्ण व्यापारी, किसान और कारीगर अपने अपने धंधों में लग गए, इससे देश में संपत्ति बढ़ी जिससे राज्य की आय में अधिकता हुई। इन्होंने उत्तम उत्तम स्थान बनाकर कारीगरी की उन्नति की और प्रजा का न्याय यथोचित करके तथा पुत्रवत् पालन करके सबसे आशीर्वाद प्राप्त किया। इस भाँति चौंसठ वर्ष राज्य भोगकर अति वृद्धावस्था में सन् १३६५ ई० में हम्मीरसिंह जी ने वैकुण्ठधाम का मार्ग लिया। परम बुद्धिमान् और पराक्रमी महाराणा हम्मीरसिंह जी अपने पुत्र खेतसी जी के लिये शांति-संपन्न और विस्तीर्ण राज्य छोड़ गए। मेवाड़पति महाराणा हम्मीरसिंह जी अपनी अक्षय कीर्ति छोड़कर मरे। वहाँ के लोग उन्हें अब तक सराहते हैं।”

इन हम्मीर के विषय में विशेष कुछ लिखना अथवा इनके संबंध की घटनाओं पर विचार करना मैं आवश्यक नहीं समझता । एक तो इनका इस रासो काव्य से कोई संबंध नहीं है, दूसरे यह भूमिका योंही इतनी बड़ी हो गई है कि अब इसे और बढ़ाना अनुचित जान पड़ता है । केवल कथाभाग मैंने इसलिये दे दिया है कि जिसमें पाठकों को इसके जानने का यहीं अवसर प्राप्त हो जाय और वे स्वयं इसके विषय में और जानने का उद्योग करें । जिन महाशयों को हम्मीर के विषय में कुछ लिखने का अवसर प्राप्त हो उन्हें उचित है कि वे दोनों हम्मीरों को अलग अलग मानकर इनके संबंध की घटनाओं का उल्लेख करें ।

बस अब मुझे हिंदी के प्रेमियों से क्षमा माँगनी है कि एक तो इस भूमिका के लिखने में इतना विलंब हो गया, दूसरे यह भूमिका इतनी बड़ी हो गई । आशा है कि पहले अपराध का मार्जन दूसरे से हो जाय ।

इस भूमिका को समाप्त करने के पहले मैं कुँवर कन्हैया जू और पंडित रामचंद्र शुक्ल को अनेक धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इसके कई अंशों के लिखने में मुझे बड़ी सहायता दी । साथ ही मैं कुँवर कृष्णसिंह वर्मा को भी धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता । उन्हीं के द्वारा मुझे यह काव्य प्राप्त हुआ । ठाकुर विजयसिंह जी ने इस काव्य को प्राप्त करने और कुँवर कृष्णसिंह जी की सहायता करने में जो कष्ट उठाया उसके लिये मैं उनका भी उपकार मानता हूँ । आशा है कि ये सब महाशय इसी प्रकार मुझपर कृपा बनाए रहेंगे जिससे मैं अन्य अन्य ऐसे काव्यों के संपादन करने में समर्थ होऊँ ।

काशी,
६ फरवरी १९०८ }

श्यामसुंदर दास

हम्मीररासो

दोहा

सिंधुर बदन अमंद दुति, बुद्धि सिद्धि वरदाय ।
सुमिरत पद-पंकज तुरत, विघ्न अनेक विलाय ॥ १ ॥

छप्पय

दुरद* बदन बुधि-सदन चंद्र लल्लाट विराजै ।
भुजा च्यारि आयुद्ध तेज फरसो+ कर राजै^१ ॥
इक दंत छवि-धाम अरुण सिंदुरमय सोहै ।
मनो प्रात रवि उदित कहन उपमा कवि को है ॥
कर-कमल माल मोदक लिये उर उदार उपवीत वर ।
सिव सिवा सुवन गणराज तुम देहु सदा वरदान वर^२ ॥२॥
पुंडरीक सुत सुता तासु पद-कमल मनाऊँ ॥
विसद÷ वरण^३ वर वसन विसद भूपन हिय ध्याऊँ ॥
विसद जंत्र सुर सुद्ध तंत्र तुंवरजुत सोहै ।
विसद ताल इक भुजा द्वितिय पुस्तक मन मोहै ॥
गति राजहंस हंसह चढ़ां रटी सुरन कोरति विमल ।
जय मात विमल^४ वरदायिनी देहु सदा वरदान बल ॥३॥

१ वर राजै । २ वरदायक वरदान वर । ३ वसन । ४ नटा ।

* दुरद=द्विरद । + फरसी=परशु । ÷ विसद=विमल, तुंदर ।

छंद पद्धरी

जय विन्नराज गणईसदेव ।

जय जगदंब जननी सएव^१ * ॥

गुरु - पाद - पद्म वंदन सुकीन ।

सब सज्जन पद मन^२ लीन कीन ॥ ४ ॥

प्रथिराज राज जग भौ प्रसिद्ध ।

भृगु वंस मध्य प्रगटे सुसिद्ध ॥

नृप चंद्रभाँन तिहिं वंस मध्य ।

किरवाँन⁺ दाँन दोऊ प्रसिद्ध ॥ ५ ॥

पिच निंवराण जग ग्राम नाँम ।

जुत वर्णास्त्रम निज धर्म धाँम ॥

जय कीरति भुवमंडल उदार ।

अरु तेज प्रतापी बल अपार ॥ ६ ॥

सब कहै राठ कौ पातस्याह ।

जस स्तवन सुनन को सदा चाह ॥

द्विजराज गौड़कुल जग - प्रसिद्ध ।

बिद्या - विनीत हरि - धर्म - बृद्ध ॥ ७ ॥

सब दया दाँन उदार वीर ।

गुण - सागर नागर परम धीर ॥

कुल पंच वृत्त कै मूल जान ।

द्विज आदि गौड़^३ जानत जहाँ^४ ॥ ८ ॥

सौ चौदह सै चालीस च्यार ।

जन - सासन-सागर अति उदार ॥

अब सब को किकर मोहिं जानि ।

१ सहेव । २ हुलसन । ३ सोइ आदि गोर । ४ जानि ।

+ सएव (सहेव) = स्वामिनी । * किरवाँन (किरपान) = कृपाण ।

ऋषि अत्रि गोत्र मैं जन्म मानि ॥ ६ ॥

डिडवरिया राव कहि बिरद ताहिं ।

सुभ राठ देस मैं उदित आहि ॥

तिहिं नाम ग्राम भल बीजवार ।

सब प्रजा सुखी जुत बरण च्यार ॥ १० ॥

जहँ बालकृष्ण सुत जोधराज ।

गुन जोतिष पंडित कवि समाज^१ ॥

नृप करी कृपा तिहिं पर अपार ।

धन धरा बाजि^२ गृह वसन सार ॥११॥

बाहन अनेक सतकार भूरि ।

सब भाँति अजाची कियौ मूरि ॥

नृप एक^३ समय दरवार माहिं ।

रासो हमोर कहि^४ सुन्यौ नाहिं ॥१२॥

नृप प्रश्न^५ करिय यह उभे बात ।

सब कहो वंस उत्पति सुतात ॥

अरु कहो साहि हम्मीर वैर ।

किहिं भाँति^६ कंक[#] बड्ढ्यौ सु फेर ॥१३॥

तब कही प्रथम यह कल्प आदि ।

जल सेष सैन जब है अनादि ॥

नहिं धरणि चंद्र सूरज अकास ।

नहिं देव दनुज नर वर प्रकास ॥१४॥

सब बीज वृक्ष^७ हरि संग मेलि ।

करि आप जोग निद्रा सकेलि ॥

करि सैन अंत निज सक्ति जानि ।

१ उदार । २ वास । ३ इफ । ४ कश्यौ । ५ प्रश्न । ६ वत्त । ७ कुक्ष ।

#कंक=क्षत्रिय ।

ऊरण* सु तंत्र करि सूत्र मानि ॥१५॥
 ह माया ईश्वर उमै नाम ।
 करि महत्तत्त्व† गुण‡ प्रगट जाँम+ ॥
 यह धरि चरित्र¹ लीला अपार ।
 हरि नाभिकोस पंकज प्रचार² ॥१६॥
 तिहिं प्रगट भए ब्रह्मा सु आदि ।
 वाराहकल्प यह कहि अनादि ॥
 बहु काल ब्रह्म-चिन्ता सु कीन ।
 मैं कौन, करों का, कर्म कीन³ ॥१७॥
 अध उद्ध० भ्रम्यौ बहु कमलि-नाल ।
 नहिं पार लख्यौ तदपि मुहाल⁴ ॥
 करि ध्याँन स्वयंभू लख्यौ आप ।
 तप कर्यौ सृष्टि उपजै अमाप ॥१८॥
 तप कर्यौ स्वयंभू अति प्रचंड ।
 तब भयउ प्रजापति विधि अखंड ॥
 मानसी सृष्टि कीनी उदार ।
 सब वृक्ष बीज किन्ने अपार ॥१९॥
 जल गगन तेज भुव वायु मानि ।

१ धरी चित्त । २ ब्रह्म्यौ पंकज अपार प्रसार । ३ कर्मचीन, कर्महीन । ४ मुआय ।

* ऊरण (ऊर्ण)=ऊन । † महत्तत्त्व (महत्तत्त्व)—सांख्य के मतानुसार प्रकृति का प्रथम विकार, बुद्धि । ‡ गुण—सांख्य के मतानुसार सत्त्व, रज तथा तम गुण । इस शास्त्र में इन गुणों की साम्यावस्था को प्रकृति कहा गया है । इसी प्रकृति से सृष्टि का विकास होता है ।
 + जाम=प्रहर, काल । ० उद्ध (ऊर्ध्व)=ऊपर ।

सनकादि भए सुत च्यारि आनि^१ ॥
 तप-पुंज भये नहिं सृष्टि भोग ।
 तहाँ मध्य भए तव रुद्र जोग ॥२०॥
 मन तैं मरीचि भय तव सु आय ।
 उपजे पुलस्त ऋषि खवण पाय ॥
 इमि भए नाभि तैं पुलह और ।
 कृत भए ब्रह्म कर तैं जु मौर ॥२१॥
 भृगु भए स्वयंभू त्वचा थाँन ।
 भय प्राण नात बासिष्ट माँन ॥
 अंगुष्ठ दक्ष उपजे सु ब्रह्म ।
 नारद जु भए उतसंग* अह्म ॥२२॥
 भय छाया तैं करदम ऋषीस ।
 अरु भए प्रष्टि† अद्वरस दीस ॥
 अरु हृदय भए कामा उदार ।
 करदन तैं भौ धरमावतार ॥२३॥
 भय लोम अधर^२ तैं अति वलिष्ट ।
 बानी जु विमल मुख तैं प्रतिष्ट ॥
 पद निरत मिँड^३† तैं सिंधु जानि ।
 यहिं विधि जु प्रजापति ब्रह्म मानि ॥२४॥
 अव सुनहु वंस तिनकै अपार ।
 यह भइय सृष्टि चहुँ खाँ (चहुँधा?) निवार ॥
 सिव कै जु सती त्रिय विन प्रसृत ।
 दिय दक्ष श्राप तातैं न पूत ॥२५॥
 इक कला नाम त्रिय धर मरीच ।

१ मानि । २ अधर । ३ मीँड, मिँड ।

*उतसंग (उत्संग)=गोद । †प्रष्टि (पृष्ट)=पीठ । ‡मिँड (मीँड)=मूत्र ।

द्वै पुत्र भए ताकै जु बीच ॥
 इक भए प्रथम कस्यप सुजाँन ।
 फिर उपजि धरम जहँ पूर्णमाँन ॥२६॥
 भय कस्यप कै सूरज सु आय ।
 सो भयौ वंस सूरज सुगाय ॥
 अरु सुनो अत्रि कै पुत्र तीन ।
 इक दत्त सोम जान्यौ प्रवीन ॥२७॥
 ऋषि भए अपर दुरवास नाँम ।
 सोइ^१ सुनो स्रवण तिहि वंस जाँम ॥
 सुत भयौ सोम कै बुद्ध आय ।
 पुरुरवा पुत्र ताकै सुभाय ॥२८॥
 षट पुत्र भए ताकै प्रसिद्ध ।
 भए सोम वस तिनकै जु सिद्ध ॥
 भृगु वंस सुनो अतिसै उदार ।
 चहुवाँन भए तिनतैं अपार ॥२९॥
 इक ख्यात नाँम तिय अति अनूप ।
 भय उमै पुत्र ताकै जु भूप ॥
 इक कह्यौ प्रथम धाता जु नाँम ।
 फिर भए विधाता घर्म-धाँम ॥३०॥
 इक^२ अपर प्रिया भृगु कै कनिष्ठ ।
 ए पुत्र भए ताकै प्रतिष्ठ ॥
 भय सुक जेष्ठ गुरु असुर जानि ।
 तिहि अनुज चिमन^३ तप-पुंज मानि ॥३१॥
 भृगु कै जु भए जग अति विख्यात ।
 जिहि सुक नाम बल तेज तात ॥

तिनकै रिचीक भए पुत्र आय ।

जमदग्नि भए तिनकै सुभाय ॥३२॥

ऋषि जामदग्नि सुत परसराँम ।

हनि क्षत्रि सकल द्विज तेजधाम ॥३३॥

दोहरा छंद

ब्रह्मा कै सुत भृगु भए, भार्गव भृगु कै गेह ।

ऋषि रिचिचक ताकै भए, तेज - पुंज तप - देह ॥३४॥

जामदग्नि तिनकै भए, परसराँम सुत जाहिं ।

क्षत्रि मेदि विप्रन दइय, मुंमि किती वर ताहिं ॥३५॥

कमलासन कुल मै प्रकट, परसराँम रणधीर ।

सहस्रारजुन वैर तैं, हने जु क्षत्री वीर ॥३६॥

वार इकीस जुद्धि जिन, दित्रौ^१ उवीराज ।

वच्यौ न क्षत्रो जगत तव, आए तप कै काज^२ ॥३७॥

छंद मुक्तादाम

हने क्षिति कै सब वीर अपार ।

भरे बहु कुंड जु स्नोणित धार ॥

करे तिहिं पितृन तरपन नौर ।

भए सब हरणित पित्र सधीर ॥३८॥

दए तव आसिप प्रेम समेत ।

चले ऋषिराज तपःकृत हेत ॥

रह्यौ नहिं क्षत्रिय जाति विसेप ।

भए निरमूल जु क्षत्रि असेप^३ ॥३९॥

वचे कछु दीन मलीन सुवेस ।

कहूँ तिनकै अव रूप असेप ॥

१ दीनौ । २ अप्य (आप) गए तप काज । ३ विसेप ।

धरे तृणदंत^१ कि दीन वयन्न^२ ।

क्रिये नियरूप लखे जु नयन्न ॥४०॥

नपुंसक बालक वृद्ध सु दीन ।

धरे मुख नकख सुवैन सहीन ॥

तजे तिन आयुध पिढि दिखाय ।

गहे तिन आय सुभाय सुपाय ॥४१॥

मिले सब पित्र सु^३ दीन असीष ।

भए सुअ निरभय पित्र जगीस ॥

तजो अब उग^४ असेष सुभाव ।

करो सब^५ उपर क्षोभ सु चाव ॥४२॥

तजे तब क्रोध भए सु दयाल ।

चले पद बंदि पिता पद^६ हाल ॥

भई कछु काल क्षत्री बिन भुंमि ।

नहीं जग रक्त रह्यौ सोइ पुंमि^७ ॥४३॥

वदे^८ रजनीचर वृंद अनेक ।

मिटे जप तप्प जु वेद विवेक ॥

करे उतपात सुघात अपार ।

तजे कुल-धर्म सु आत्म च्यार^९ ॥४४॥

मिटी मरजाद रहे सब भीत ।

तबै ऋषिराजन बड्ढत^{१०} चीत ॥

जुरे ऋषि-वृंद सु अरबुद आय ।

जहाँ ऋषि चाय बसैं सत भाय ॥४५॥

सुर नर नाग मिले सह आय ।

१ तनदंत । २ नयन्न । ३ जु । ४ अनिरिय । ५ उग्र । ६ वन ।
७ पदु, पट्ट । ८ नहीं जग रच्छिक यो जग पूमि । ९ वचे । १० चार ।
११ बाढत, बाढन ।

रचे रजनीचर मेदि उपाय^१ ॥

मिले कमलासन और वसिष्ठ ।

कियौ^२ सुचि कुंड अनल्ल^३ सुइष्ट ॥४६॥

दोहरा छंद

चाय आय अरबुद सुनग^४, मिलिय^५ सकल ऋषिराय ।
तव आराधिय संभु तिन, दिन्नौ दरसन आय^६ ॥ ४७ ॥
जटा मुकट बिम्भूति अंग, सीस गंग अहि अंग^७ ।
भूत संग अनभंग मन, हरषित अधिक उमंग ॥ ४८ ॥
ऋषिसमूह अस्तुति करत^८, करव (करो)^९ अचल नग^{१०} आय ।
वास करो तिहिं पर अचल, यज्ञ करें तव पाय ॥ ४९ ॥

छप्पय छंद

तव भव भये^{११} प्रसन्न वास अरबुद सिर किन्निव ।
कियव यज्ञ आरंभ विप्र सम्मूह^{१२} सुलिन्निव ॥
द्वैपायन, वासिष्ठ, लोम, दालिभ,^{१३} सत्र आए ।
जैमिनि हरषन, धौम्य, भृगू, घटयोनि^{१४}, सुभाए ॥
कौसिकह +, वत्स, मुद्रल मिलिउ, उदालीक, मातंग, भनि ।
स्वर मिलिय स्वयंभुव संभुजुत लगे करन मख मुदित मन ॥ ५० ॥
पुलह, अत्रि, गौतम्म, गरग, सांड्यलि महामुनि ।
भरद्वाज, जात्रालि, मारकंडेय, इष्ट गुनि ॥

१ मेदन पाय । २ किये । ३ अनिल । ४ गन । ५ मिले । ६ घाय ।
७ संग । ८ करिव, करधव । ९ करत । १० मन । ११ भयउ । १२ सम्मुह
सुइ लिन्निव । १३ दालिभ सु । १४ जोनि ।

+ पुलह अत्रि गौतमहिं गरग सांड्यल्ल महामुनि । भरद्वाज
जात्रालि मारकंडेय उध्म (उदम) गुनि । ये दो चरण एक प्रति में
अधिक हैं सो दूसरी प्रति में दूसरे छप्पय में आए हैं ।

जरतकार जाजुल्लिय परासुर परम पुनीतव ।
 चिमन^१ चाइसुर आइ, पिप्पलायनहिं, सुरचि^२ सब ॥
 वोटा अनेक वरनूँ किते, पंचसिखा पिक्खिय प्रगट ।
 तप तेज पुंज भलहलत तहँ, दरसन तैं पातक सुघट ॥५१॥
 सिद्धि औषधिय सकल, सकल^३ तीरथ जल आनिव ।
 जिते यज्ञ कै योग्य तिते, द्रव^४ सब मन मानिव ॥
 जजन^५ जानि^६ अध्याय होम ध्वनि होम सु उठे ।
 सकल वेद कै मंत्र विप्र मुख सुर जुत जुठे^७ ॥
 ध्वनि सुनत असुर आए तुरत करन यज्ञ उच्छिष्ट थल ।
 उत्पात अमित किन्ने^८ तवै तहाँ वृष्टि किन्निय^९ सबल ॥५२॥
 पवन चलत परचंड घोर घन बारि सु बु(ड)ठे ।
 रुहिर^{१०} माँस त्रण पत्र अग्नि^{११} रज देखत उठे ॥
 गए तहाँ वासिष्ट यज्ञ बहु विघ्न सुनायौ ।
 करै^{१२} प्रथम बध असुर होय तव यज्ञ सुभायौ ॥
 वासिष्ट कुंड किन्नौ सुरुचि करन असुर निमूल तव ।
 धरि ध्यान होम-बेदी विमल वेद मंत्र आहूति जव ॥५३॥
 दोहरा छंद
 ऋषि वसीष्ठ वेदिय विमल, साम वेद स्वर साधि ।
 प्रगट कियउ क्षत्रिय पहुभि, वेदमंत्र आराधि ॥५४॥
 तीन पुरुष उपजे तहाँ, चालुक प्रथम पँवार ।
 दूजै तीजै ऊपजे, क्षत्र^{१३} जाति पण्हार^{१४} ॥५५॥
 कियउ^{१५} जुद्ध अतुलित तिनहिं, नहिं खल जीते मूरि ।

१ च्यवन । २ सुरन्धिय । ३ सकल तीर्थनु जल आन्यौ, तित्योदक
 आन्यौ । ४ द्रव्य तितने मत मानिव, द्रव्य जितनै मन मान्यौ । ५ यजन ।
 ६ जाप । ७ बुठे । ८ कीने । ९ कीनी । १० रुहिर । ११ अग्नि ।
 १२ करो । १३ चतुरजाति १४ पारिहार । १५ कियौ ।

तव चतुरानन जज्ञ थल, कियौ तुरत वह दूरि ॥ ५६ ॥
 आवू गिरि अग्नेव दिसि, चायस्थल सब आय ।
 आराधे तिहिं फरस धरि, आए सीध सुभाय ॥ ५७ ॥
 कमलासन ब्रह्मा भए, होता भृगु मुनि कीन ।
 आचारज वासिष्ठ भौ, ऋत्वज बत्स प्रवीन ॥ ५८ ॥
 परसराँम जजमाँन करि, होम करन मुनि लाग ।
 महासक्ति आराधि करि, अनलकुंड पटि^१ जाग ॥ ५९ ॥

छंद पद्धरी

विधि करी^२ परसधर, बोलि ठौर ।

जजमाँन कियउ भृगुकुल सुमौर ॥

वरदेव सक्ति आराधि ताँम ।

चहुँ वेद वदन उचार जाँम ॥ ६० ॥

निज बारि कमंडल अग्नि सींच ।

रज संख पानि होमे स बीच ॥

चहुँ^३ वेद मंत्र-बल सक्ति पाय ।

तव अग्नि रूप प्रगटे सुभाय ॥ ६१ ॥

उत्तांग अंग सुचि तेज-धाँम ।

भलहलत कांति तन प्रभा काँम ॥

भलहलत मुकट भृकुटी करूर* ।

पलहलत नेत्र आरक्त मूर ॥ ६२ ॥

हलहलत दनुज वह त्रास मानि ।

भुज च्यारि दिग्ध* आयुध सजानि^५ ॥

जम जज्ञ पुरुष प्रगटे अजोनि ।

१ पटि । २ करे फरसधर । ३ चउ । ४ दीर्घ । ५ मान जान—
 अंत्यानुप्रास ।

*करूर (सं० कुरूल)—मस्तक पर बिखरी बाल की लट ।

कर खड्ग^१ धनुष कटि लसै तोनि ॥ ६३ ॥
कर जोरि ब्रह्म सों कह्यौ धाय ।

मैं करूँ कहा लोकेस आय ॥
जब कह्यौ कमलभू सुनहु तात ।

भृगुनाथ कहै सुइ करो बात ॥ ६४ ॥
भृगुनाथ कही खल हनूँ धायं ।

सँग सक्ति दइय नृप कै सहाय ॥
दसबाहु उग्र आयुध बिसाल ।

आरुहु सिंह उर^२ कमल माल ॥ ६५ ॥
मुनिदेव मिले अभिसेष कीन ।

नृप अनल नाम कह तासु दीन ॥
नृप कियौ जुद्ध तिनतैं अखंड ।

हनि जंत्रकेत करि खंड खंड ॥ ६६ ॥
हनि धूम्रकेत जो सक्ति आय ।

नृप हरष सहित परसे सुपाय ॥
बहु दैत्य नृपति मारे अपार ।

उठि चली खेत तैं रुहिर^३ धार ॥ ६७ ॥
उबरे सु गए पाताललोक ।

भय दनुजहीन सब मृत्युलोक^४ ॥ ६८ ॥
दोहरा छंद

आसा पूरण सबन की, करी सक्ति तिहिं बार ।
याही तैं आसापुरा, धर्यौ नाम निरधार ॥ ६९ ॥

चहुवाँनन^५ कै वंस मैं, परम इष्ट कुलदेवि ।
सकल मनोरथ सिधि तहाँ, पूजत पावैं सेवि^६ ॥ ७० ॥

१ खड्ग । २ गला । ३ रुधिर धार । ४ मृत्युलोक । ५ चहुव्याँन ।
६ देव, सेव—अंत्यानुप्रास ।

परसराँम अवतार भौ^१, हरन सकल भुव-भार ।
जैत राव तिहिं वंस में, जन्म्यौ परम उदार ॥ ७१ ॥

छप्पय छंद

जैत राव चहुवाँन सकल विद्याजुत सोहै ।
दाँन कृपाँन विधान अखिल भूपति मन मोहै ॥
अमित थाट रजपूत वंस छत्तीस अमानो ।
सूर वीर उदार^२ विरद वंदी जु वखानो ॥
दिन प्रत्ति तेज बडिँढय^३ नृपति, सत्रु संक निसि दिन रहै ।
विस्सलह^४ भूप अवतंस भुव, अरथिन् मिलि दारिद दहै ॥ ७२ ॥
इक्क समय आखेट, राव खेलन वन आए^५ ।
सकल सुभट थट संग, वीर वानै जु वनाए ॥
लखव^६ इक्क वाराह, बाजि पिच्छै नृप दिन्निव ।
रहे^७ संग तैं दूरि, सध्य विन राव सु किन्निव ॥
वन विषम वंक भूधर विरह, सुथल पदम भव तप करत ।
मृग त्यागि भागि मिल्ले सुकृषि, बंदि चरण सवा धरत ॥ ७३ ॥

छंद लघुनाराच

करे प्रणाम रावयं, सुदिन पदं पावयं ।
उभै सुपाणि जोरि कै, विनै सु कीन कोरि कै ॥ ७४ ॥
खुले सुभाग्य मोरयं, लखौ दरस्स तोरयं ।
अखंड जोग भूपयं, नमः सजीव मोखयं ॥ ७५ ॥
त्रिकाल ज्ञान धौंसयं, रटंत नाँन राँमयं ।
समस्त योग धौंसयं, त्रिलोक पूर काँमयं ॥ ७६ ॥

१ भयौ । २ उदार । ३ बढ़तो, बडिँढिग । ४ वीसलह । ५ आयउ, वनायउ । ६ लखिव । ७ रखउ ।

* मोखयं—मोक्ष ।

समीप स्वामि रुंकरं, गणेशयं सुधं करं ।
धरौ सुसीस हृथयं, प्रभू^१ सदा समध्ययं ॥ ७७ ॥

दोहरा छंद

प्रसन भए ऋषि पद्म तव, अस्तुति सुनत प्रमाँन^२ ।
जैत राज यहिँ थल करो, राव राखि सिव ध्याँन ॥ ७८ ॥
हर प्रसन्न भय राव पहुँ, मुनिवर पद्म प्रसाद ।
मिले भील-कुल सकल तहँ, हरषित मिटे बिषाद ॥ ७९ ॥

छंद पद्धरी

ऋषिराज पद्म आज्ञा सुपाय ।
नृप जैत मित्र मंत्रिय बुलाय ॥
बड़ वणिक गणक कोविद सुजाँन ।
तिन पुच्छि मंत्र वास्तव प्रमाँन ॥ ८० ॥
सुभ दिष्ट मुहूरत नीव हेत ।
रणथंभ नाँस औ गढ़ समेत ॥
सब ग्यारह सै दस वरष और ।
सुइ संवत बिक्रम कहत मौर ॥ ८१ ॥
इषु अर्द्ध अरंगा को प्रसिद्ध ।
रवि अयन सोम्य जान्यौ प्रसिद्ध ॥
सब कला पाँच जानो सुइष्ट ।
त्रिय पुरुष लग्न गढ़ कीन इष्ट ॥ ८२ ॥
गत इक अंस वृषभाँनु जानि ।
ससि वेद सार्द्ध मिथुनेस मानि ॥
तन अंस वृश्चिक कै इलानंद ।
ससि बीस^३ नंद अज अंस मंद ॥ ८३ ॥

जप* रासि जानि नव अंस सुद्ध ।
 तम तीन अंस मूरति समुद्ध × ॥
 त्रिय धूमकेतु गुण अंस जानि ।
 भृगु सप्त गुरु^१ सत्रा सु मानि ॥ ८४ ॥
 तन लग्न उभै जानो सु जानि ।
 फल कह्यौ वरष सत आयु मानि ॥
 पय भाव भाँन तिहिं भवनहीन ।
 कछु घटे वरष तिन मै प्रवीन ॥ ८५ ॥
 तिहिं समय अटल थूणी सथप्प ।
 गणनाथ पूजि सुभ मंत्र जप्प ॥
 करि होम देव पुज्जे अपार ।
 गो भुंमि रत्न हाटक सुठार ॥ ८६ ॥
 दिय दान द्विजिन बहु विधि अनेक ।
 नृप जैत सकल पुज्जे विवेक ॥
 तिय करत गाँन मंगल सरूप ।
 धुनि दुंदभि वज्जत अति अनूप ॥ ८७ ॥
 सब करहिं हरष नर नारि वृंद ।
 यहि भाँति नीम रचना सुछंद ॥ ८८ ॥
 दंहरा छंद
 ग्यारा सइ दस अगरो, संवत मांथव मास ।
 सुक्र तीज शनिवार कै, चंद्र रक्ष अनयास ॥ ८९ ॥
 थूणीगढ़ राणथंभ की, रोपी पदम् प्रताप ।
 सुमरि गणेश गिरीस कौ, नगर वसायौ आप^२ ॥ ९० ॥

१ सप्तम गुरु । २ आय ।

* जप (भूय) = मीन (राशि) × समुद्ध = समुद्ध ।

ध्वजा तोरणं सर्व कै गेह छाए ॥

कपाटं सिरीखंड हाटक ÷ सोहैं ।

सवै चित्र सा चित्र सूचित मोहैं ॥ ९३ ॥

वितानं छए फल्लरी सोभसाँनी ।

सवै ठौर सोहैं मनो कामरानी ॥

गृहं द्वार गोखा झरोखा सुहाए ।

सुगंधं चुवा इत्र महकंत भाए । ९४ ॥

यसो नग्र रम्यं रचौ भूप केरो ।

किते चारु चौकंत भावंत हेरो ॥

बसैं वर्ण च्यारचौ जथासंखि वासं ।

चहूँ आश्रमं औ तजं लोभ आसं ॥ ९५ ॥

सवै आय आयं रहै धर्म माहीं ।

छिमासील दाँन वृतं नीत १ आहीं ॥ ९६ ॥

छप्पय छंद

महा वंक गढ़ दड्ढ गुरजि^२ कंगुर वर सोहैं ।

चहूँ कोढ़^३ अग अगम चारु दरवाजे मोहैं ॥

घाटी चतुरासीति^४ विषम अति^५ पच्छि न पावैं ।

वनचर वंकट वेश पाय लति यों सुत^६ गावैं ॥

तुम नाथ हमारे^७ कृपाकरि^८ गढ़ लज्जा यह^९ धारिये ।

परवेस मनहुँ रवि को प्रकट यह गढ़ हम प्रति पारिये ॥ ९७ ॥

दोहरा छंद

च्यारि दरा चहुँ^{१०} ग्राम वस्ति, घाटो किली जु और ।

चहूँ ओर पर्वत अगम, विचरण थंभ सु जोर ॥ ९८ ॥

१ नित्य । २ सुदृढ़ गुरजि । ३ कोव । ४ घाटी चोइलवाति ।

५ अति, गति । ६ मुख । ७ हमार । ८ करी । ९ हम । १० चउ ।

÷ हाटक (हाटक) = तोना ।

अथ पद्मऋषि तनपात प्रसंग

छप्पय

रणतभँवर ऋषिपद्म उग्रतप तेज कराए^१ ।

इंद्रासन डिगमगिय^२ देवपति^३ संका खाए ॥

तब कामादिक बोलि सक्र ऋषि पास पठाए ।

करो बिघ्न तब जाय भंग पर काज नमाए^४ ।

तब चलयव मार निज सेन जुत^५ ऋतु बसंत प्रगटिय तुरत ।

बह त्रिविध पवन अद्भुत महा करहिं^६ गान रंभा सुरति ॥९९॥

बसंत ऋतु वर्णन

छंद पद्धरी

तिहिं समय काम प्रेरयौ सुरिंद्र ।

जुहारि इंद्र उठि पाव वंदि ॥ ^X

सब परिकर बोले^७ चढ़ि सुमार ।

ऋतु छहूँ संग धनु सुमन हार ॥ १०० ॥

रति परम प्रिया ऋतुराज जानि ।

नित रहत निरंतर रूप मानि ॥

बहु किन्नर गावत देवनारि ।

गंधर्व संग अति बल उदार ॥ १०१ ॥

संगीत भाव गावैं अनंत ।

सुर नर सुनंत वसि होत मंत ॥

वन उपवन फुल्लहिं अति कठौर ।

रहे जौँर मौँर रस अंबमौर ॥ १०२ ॥

१ करायौ । २ डगमग्यौ । ३ इन्द्र मन माहिं (माँझि) डरायौ ।

४ नठाए । ५ जुति । ६ करति । ७ बुल्ले ।

कल कूजत कोकिल ऋतु वसंत ।
 सुनि मोहत जहँ तहँ सकल जंत ॥
 नर नारि भए कामंध अंध ।
 तजि लाज काज परि काम-फंद ॥ १०३ ॥
 पहुँचे सुमारि ऋषि निकट आय ।
 प्रेर्यौ सु परम भट अग जाय ॥
 ऋषि लखे सुभट सेना सुकाम ।
 ऋषि कह्यौ कहा करिहै सुवाम ॥ १०४ ॥
 करि कठिन आप लाई समाधि ।
 तिहिं रहत काम क्रोधारि व्याधि ॥

ग्रीष्म ऋतु वर्णन

ऋतु ग्रीष्म कौ आज्ञा सु दिन्न ।
 तिहिं अति प्रताप जाज्वल्लि किन्न ॥ १०५ ॥
 रवि तपै विषम अति किरन धूप ।
 रवि नैऋत खल्लि दिक्खिय अनूप ॥
 बट इक्क महा गह्वर सुजानि ।
 तिहिं निकट सरोवर सुरस मानि ॥ १०६ ॥
 इक आलस सुंदर अति अनूप ।
 तिय गान करत सुंदर सरूप ॥
 सौरभ अपार मिलि मंद पौन ।
 मृगमद कपूर मिलि करत गौन ॥ १०७ ॥
 स्त्रीखंड *मेद* केसर उसीर ।
 तिहिं परसि ताप मिदृत सरीर ॥

१ मेर ।

* मेद=कस्तूरी ।

नर नारि लखैं उर प्रीति पगी ॥ ११६ ॥
 ऋषि पास त्रिया सर न्हान रच्यौ ।
 जल केलि अनेक^१ प्रकार मच्यौ ॥
 बिन चीर अधीर लखै नर वै ।
 कुच पीन नितंब सुकाँम तवै ॥ १२० ॥
 कबरी छुटि नागनि सी दरसै ।
 सुर संग भ्रमै रस सों सरसै ॥
 ऋषिराज महा उर धीर अयं ।
 रितु सारद हारि सुजात रयं ॥ १२१ ॥

दोहरा छंद

हारि मानि सारद गइय, उठि हेमंत सकोपि ।
 महासीत प्रगटिय जगत, सबै लाज तजि लोपि ॥ १२२ ॥

हेमंत ऋतु वर्णन

छप्पय छंद

तब सुहेम करि कोप सीत अति जगत प्रकास्यौ ।
 बिषम तुषार अपार मार उपचार सुभास्यौ^२ ॥
 कंपत^३ चैतन रूप कहा जर जरत समूरे ।
 तिय हिय लागि लागि बचन चरत मुख सैन सरुरे ॥
 तिहिं समय जीव सब जगत के भए इक नर नारि सब ।
 उरबसी आय ऋषि निकट^४ तक्र हिये लाय मोहिं सरन^५ अब ॥ १२३ ॥

दोहरा छंद

खुली न कठिन समाधि ऋषि, चली हिमंत सुहारि ।
 सिसिर परस मन बरनि करि, उठी सुकाँम जुहारि ॥ १२४ ॥

१ अपुब्ब । २ सुभाष्यौ । ३ नवै । ४ तैं, लौं । ५ मुहिं । ६ सरनि ।

शिशिर ऋतु वर्णन

छंद मोतीदाम

कियौ तब मार हुकम्म सु हेरि ।
 उठी सिसिरौ^१ तब आयसु फेरि ॥
 किये नव पल्लव जे तरु बृंद ।
 प्रफुल्लित अंब कदंब स्वछंद ॥ १२५ ॥
 बहै बहु भाँति त्रिविद्धि समीर ।
 रहै नहिं धीरज होत अधीर ॥
 लता तरु भेंटत^२ संकुल भूरि ।
 भए त्रण गुल्म हरे जड़ मूरि ॥ १२६ ॥
 मिटै जग सीत न ताप न तोय ।
 सबै सुखदायक जोवन सोय ॥
 भुके फल फूल लता वर भार ।
 भ्रमै बहु भृंग जगावत मार ॥ १२७ ॥
 लगी लखि वायु सबै तिहिं वार ।
 सुने डफ लाज तजै नर नार ॥
 वजावत गावत नाचत^३ संग ।
 अवीर गुलालरु केसरि रंग ॥ १२८ ॥
 भए मतवार सु खेलत^४ फाग ।
 महा सुख संग सँजोगनि^५ भाग ॥
 वियोगनि जारत मारत मार ।
 अनेक सुगंध अनेक विहार ॥ १२९ ॥

१ ससियौ । २ भिंटत । ३ नचहिं । ४ खिलत । ५ सँजुगनि ।

वसंत ऋतु वर्णन

छंद लघुनाराच

असंत संत मोहियं, वसंत खोलि जोहियं ।
 वजंत^१ वीन वाँसरी, मृदंग संग आँसुरी ॥ १३० ॥
 लियं सुवाल बृंदयं, जगत्त काँम द्वंदयं ।
 अनेक रूप सुंदरी, मनोज राव की छरी ॥ १३१ ॥
 स्ववेस केस पासयं, मनो कि मैन फाँसयं ।
 गुही त्रिविद्धि बैनियं, कि मोह किन्न^२ सैनयं ॥ १३२ ॥
 महा सुषट् पट्टियं, सुँगार भूमि फट्टियं ।
 बिचै सुमंद^३ रेखयं, महा विसुद्ध देखयं ॥ १३३ ॥
 बिसाल भाल सोमियं, छपा सु नाथ लोभियं^४ ।
 सु मध्य सीस फूलयं, दिनेस तेज तूलयं^५ ॥ १३४ ॥
 भरी सु मुक्त मंगयं, मनो नछत्र संगयं ।
 बिसाल लाल बिंदयं, मिले सु भोम चंदयं ॥ १३५ ॥
 जराव आड भाइयं^६, मनो मिलन्न आइयं ।
 दिनेस भोम बुद्धयं, ससि गृहे सु सुद्धयं ॥ १३६ ॥
 कपोल गोल आहसं, कि भौंह भौर साहसं ।
 प्रफुल्ल कंज लोचनं, मृगाखिल^७ गर्व मोचनं ॥ १३७ ॥
 त्रिविद्ध रंग गातयं, सु स्याँम स्वेत राजयं^८ ।
 बनी कि कीर नासिका, सु गन्ध नन्ध भासिका ॥ १३८ ॥
 मनो सु काँम ओपयं^९, दयौ सुचक्र^{१०} कोपयं ।
 करन्न फूल राजयं, उभै कि भाँन साजयं ॥ १३९ ॥

१ सुदंग ताल खंजरी । उपंग संग अंसुरी । २ कीन । ३ सुमंग,
 माँग । ४ लोपियं । ५ तुल्यं । ६ भालयं । ७ मृगासि । ८ रातयं ।
 ९ वोपयं । १० चक्र ।

सुहंत स्याँम अल्लकं, भ्रमत्त भौर वल्लकं ।
 अरुन्न रेख बेसयं, पियूष कोस देखयं ॥ १४० ॥
 अनार दंत कुंदयं, लसंत वज्र दंतयं^१ ।
 बुलंत बाणि कोकिला, बिपंच की सुरं मिला ॥ १४१ ॥
 कपोति पोति कंठयं, सुढार हार कंठयं^२ ।

छप्पय छंद

कुच कंचन घट प्रगट, नाभि सरवर वर सोहै ।
 त्रिवली पापहँ ललित, रोम राजी मन मोहै ॥
 पंचानन मधि देस, रहत सोभा हियहारी ।
 मनहुँ काँम के चक्र, उलटि दुंदुभि दोउ डारी^३ ॥
 दोउ^४ जंघ रंभ कंचन दिपत^५, घरी कमल हाटक^६ तनै ।
 गति हंस लखत मोहत जगत, सुर नर मुनि धीरज हनै ॥ १४२ ॥
 जिती उव्वसी संग, सकल सम्मूह मिलिय वर ।
 विचि सु मैन सह सैन गए, ऋषि निकट मरुकर ॥
 गावत विविधि प्रकार, करत लीला मन भाइय ।
 हाव भाव परभाव, करत आत्मम मैं आइय ॥
 ऋषि निकट आय होरिय रची, वर्पत रंग अनंग गति ।
 नन^७ चलै चित्त ज्यों ज्यों^८ अचल, करत कृया त्यों त्यों अमित ॥ १४३ ॥

दोहरा छंद

करि विचार त्रिय कृत कृया, कुसुम कुंद गहि^९ लीन ।
 लीला ललित सु विथ्यरिय,^{१०} चंचल वयसु नवीन ॥ १४४ ॥
 ससि मुख वृंद^{११} स्वछंद मिलि, रति सम रूप अनूप ।
 ऋषि समीप क्रीड़ा करत, हरत धीर मुनि भूप ॥ १४५ ॥

१ द्वंदयं । २ तंठयं । ३ निस्सौन सुधारी । ४ दुहुँ । ५ उलटि ।
 ६ हाटक । ७ चन । ८ भौ । ९ कहि । १० विस्तरी । ११ वेद ।

चौपाई छंद

वर्षत रंग अनंग सु बाला ।
 मनहुँ^१ अनेक कमल की माला ॥
 चंचल नैन चलै चहुँ आसा ।
 रूप सिंधु मनु मीन सु पासा ॥१४६॥
 घूँघट ओट दुरत प्रगटत यों ।
 मनोँ ससि घटा दबत उघटत ज्यों ॥
 बिलुलित बसन अंग दुति सोहै ।
 निरखत सुर नर मुनि मन मोहै ॥१४७॥
 अलक सलक^२ अतिसै चटकारी ।
 अमी पियत^३ ससि नागनि कारी ॥
 छुटै गुलाल मुठी मृदु मुसकै ।
 चूवै अधर^४ बिंब रस चमकै ॥१४८॥
 करै गान पसु पच्छी^५ मोहै ।
 कहो जगत इन पटतर को है ॥
 लै लै गैद परसपर मेलै ।
 बाल बृंद मिलि मिलि सुख भेलै ॥१४९॥
 अध ऊरध^६ चहुँ ओर सुमारै^७ ।
 लजति खिजति लगि^८ प्रेम प्रहारै ॥
 मंद पवन लगि चीर परयो धर ।
 कुच अंकुर^९ उर मनहुँ उभै हर ॥१५०॥
 दमकति दिपति सलोंनी दीपति ।
 कामलता बिहरै मनु गज गति^{१०} ॥

१ मनोँ । २ चिलक । ३ पीवत, पवत । ४ अधर बिंब रसकै चसकै ।
 ५ पच्छिय, पक्षी । ६ अद्ध उद्ध । ७ मिलि । ८ अंबर । ९ भीन लंक अंग
 भलकत बर । नाभि गँभीर त्रिबलि अति सुंदर ।

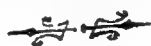
लगत गैद कंषित उर भागी ।
 मंद मुसुकि ऋषि निकट सुपागी^१ ॥ १५१ ॥
 सुमन वृंद सौरभ उठि भारी ।
 भ्रमर पुनीत^२ गुँजार^३ उचारी^४ ॥
 सरद उन्मद^५ संधौन सु किन्नौ ।
 अति रिसि तानि स्रवन उर दिन्नौ ॥ १५२ ॥
 छुटि समाधि ऋषि नैन उधारे ।
 अति सकोपि सम्मर उर मारे ॥
 चहुँदिसिचितै^६ चक्रित ऋषि भयऊ ।
 लखि तिय वृंद अनंद सु भयऊ ॥ १५३ ॥
 लीला गैद फागु मिसि^७ दौरी ।
 हो हो करत उठी बर जोरी^८ ॥
 वन अकेलि तिय पुरुष न कोऊ ।
 लीला अमित देखि दृग दोऊ ॥ १५४ ॥
 रंग अपार डारि ऋषि ऊपर ।
 कल कल हंस बजत पद नूपर ॥
 करै^९ कटाक्ष अनेक सु वाला ।
 नैन सैन सर लागि चित चाला ॥ १५५ ॥
 अंग अंग गहि फाग^{१०} सु मगै ।
 परसि गात तव काम सु जगै^{११} ॥

१ सुनि बादित्र गाँन कल लीला । काम कोपि सर धनुष सुमीला ।
 २ पुनिच । ३ गुँजार । ४ त्रिविधि समीर सुशवन जानी । प्रकुलित नूत
 बैठि धनु पानी । ५ उन्माद । ६ चित । ७ मिलि । ८ फंदुऊ केलि
 और मिसि होरी । भारी निपट लेत चित चोरी । डारि मोहिनिव मोहि
 चाला । माया बसि भौ ऋषि तिहि काला । ९ करत । १० फाग सुमगै ।
 ११ जागै ।

निज प्रथम अंग पंचांग होम ।
 जित रही बासना सरस धोम × ॥
 ऋषि मुद्रल गोती सिखाहीन ।
 वहि तिलक हृदय आयौ नवीन ॥१६६॥
 सिर भयौ पृथ्वीपति जवन ईस ।
 जिहिं राज्य करचौ^१ पूरण दिलीस ॥
 वह रह्यौ तिलक दिय परि अनूप ।
 तहँ भौ^२ हमीर चहुवाँन भूप ॥१७०॥
 दोउ बाद कर्म किन्नौ सु चाहि ।
 दोउ भए भीर महिमा सु साहि ॥
 अरु लग्न उर्वसी चरन संग ।
 यह भए पंच ऋषि पद्म अंग ॥१७१॥

(वचनिका) वार्तिक

ऋषि पद्म उर्वसी को विरह तन त्याग्यौ । माह सुक १२
 द्वादसी सोमवार आद्रा नक्षत्र प्रीति योग बवकर्ण, सूर्य २८
 अष्टाईस, चंद्रमा मिथुन को तेरा १३ अंस, मीन लग्न में देह
 होमी । पाँच अंग होम्याँ जितनी बासना जितनी जायगा हुई ।
 तहाँ सों पाँच स्वरूप एक सरीर का हुवा ॥



अथ राव हम्मीर को जन्म^३ वर्णन

दोहरा छंद

ससि वेद रुद्र संवत गिनो, अंग खाभ्र पित साक ।
 दक्षिण अयन सु सरत ऋतु, उपजे गए न नाक ॥१७२॥

१ करयंड । २ भयौ । ३ जन्म समयो, जन्म समयो ।

× भोम=धूम्र ।

गजनी गौरी साह सुत, भय अलावदी साय ।
 ताहीं दिन रणथंभ गढ़, जन्म हमीर सु आय ॥१७३॥
 यह हमीर नृप जैत कै, अमर करण आचार ।
 मीणा भारू बंधु दोउ भई नारि तिहि^१ बार ॥१७४॥

छंद पद्धरी

ससि रुद्र वेद संवत सुजाँन ।
 षट सहस इक्क साको प्रमाँन ॥
 रवि जाँम अयन दक्षण सुगोल ।
 ऋतु सरद सुभ्र सुंदर अमोल ॥ १७५ ॥
 तिथि भाँन उज्जं वल पच्छि जानि ।
 रवि घटो तीस अरु दोय मानि ॥
 हिर वुज्ज वेद घटि घटिय साठ ।
 व्याघात योग मुनि घटी आठ ॥ १७६ ॥
 बालव्व नाम सोइ कहत कर्ण ।
 यहि भाँति कल्लउ पंचांग वर्ण ॥
 रवि उदय इष्ट घटिका छतीस ।
 पल सून्य पंच जान्यूँ, सदीस ॥ १७७ ॥
 पल षोडस अष्टावीस दंड ।
 दिनमाँन जाँन तिहिं दिन सुमंड ॥
 इकतीस चवाली रात्रि मानि ।
 सव घटिय साठि दिन राति जानि^२ ॥१७८॥
 भौ^३ जन्म लग्न मिथुनेस आय ।
 द्वादसह अस गत भए वत्ताय ॥
 तुलभाँन सप्तदस अंस मानि ।
 सरि रुद्र^३ अंस ऋतु रासि मानि^४ ॥१७९॥

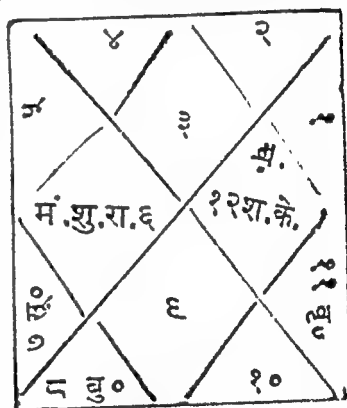
मंगल सुवाल धरि एक अंस ।
 बुध बारह वृश्चिक मैं प्रसंस ॥
 घटि जीव एक अंसह सुसुद्ध ।
 शृगु कन्या विद्या सुभग जद्ध ॥१८०॥
 ससि मीन तीस कटि एक अंस ।
 तिय रासि कछौ सुरभानुतंस ॥
 सोइ कहे अंस चौबीस पूर ।
 यह जन्म लग्न हम्मीर सूर ॥१८१॥
 सुनि राव जैत मन हर्ष किन्त ।
 भंडार अमित सब खोलि दिन्त ॥
 गुरु बिप्र मंत्र मंत्री सु बोलि ।
 बड़ भीर भइय नृप आय पौलि ॥१८२॥
 क्रिय स्नाद्ध नंदि मुख वेद वृद्धि^१ ।
 सब जात कर्म किन्नौ सु सुद्धि ॥
 गो भुग्मि अन्न कंचन सु दिन्त ।
 द्विजराज सकल संतुष्ट किन्न ॥१८३॥
 लिय बोलि सकल जाचक सु बृंद ।
 हय हेम सुखासन दीन बंद ॥
 बहु भूषन बाहन विविध रग ।
 जिहिं चाह लही सो दियौ संग ॥१८४॥
 दधि दूब हरद भरि कनक थाल ।
 बहु गाँन करत प्रबिसंत वाल ॥
 दुंदुभि बजंत घर घरन बार ।
 ध्वज कनक पताकां द्वार द्वार ॥१८५॥
 औछाह राजमंदिर अनूप ।

आनंदमग्न नर नारि भूप ॥
 सब दौन देत घर घर उछाह ।
 सब भय अजाचि जाचत सु ताह ॥१८६॥
 बहु मंगल गावत अति अनूप ।
 जय जयति कहत चहुवान भूप ॥१८७॥

वचनिका

राव जैत कै गढ़ रणथंभवर तहाँ जैत घर हम्मीर जन्म्यो
 संवत ११४१ साकौ १००६ दक्षिणायन सरद ऋतु कार्तिक
 सुक्ला १२ द्वादसी रविवार घटी ३२ उत्तरा भाद्रपद घटी ६
 पल ५६ । कछु घर को धरचौ पायौ । एक सेवक लोह पत्र

पाथर सों घस्यौ तहाँ लोह सोनो
 (सुवर्ण) भयौ राव जैत कौ आणि
 दयौ व्याघात योग घटी १६ पं०
 वालव कर्ण घटी २८ इष्ट घटी २६
 पल ५ दिनमाँन घटी २८ पल १६
 रात्रिमाँन घटी ३१ पल ४४ तुला
 संक्रांति गतांस १७ भोगांस १३
 चंद्रमा मीन को ११ अंस मंगल



कन्या को १ अंस बुध वृश्चिक को १२ अंस बृहस्पति कुंभ को
 १ अंस सुक्र कन्या को १४ अंस सनि मीन को २६ अंस राहु
 कन्या को २४ अंस राव हम्मीर असी घड़ी जन्म लियौ । सब
 को मनोर्थ पूर्ण कियौ । सर्व वंस मैं हर्ष हुवो और अजमेर
 चित्तोड़ जु बोलि विप्र पोष्या जाचक संतोख्या मंगल गाए
 वधावा^२ वजाया ॥

१ सर्वस मैं (सर्वत्वमैं) दान दीन्हौ जग जललीन्हौ । २ भाए मन भाए ।

अथ हम्मीरराव को और अलावद्दीन पातसाह को बैर समर्थो वर्णन

दोहा

इक्क^१ समय पातसाह वन, मृगया कहि मन किन्न^२ ।
सबै खान उमराव चढ़ि, हय गय वृंद सु लिन्न^३ ॥ १८८ ॥
हरम सबै पतसाह को, जो सिकार के जोग ।
साज बाज बनि बनि सकल, अरु अंदर के लोग ॥ १८९ ॥
सुंदरता सुकुमार निधि, वहै अपछरा अंग^४ ।
ताके गुन गन तै^५ बंध्यौ, निमिष न छाँड़त^६ संग ॥ १९० ॥

छंद भुजंगप्रयात

चले साह आखेट^६ बज्जे निसानं ।
सबै भूप सध्यं सुपध्यं^७ सुजानं ॥
सजे डंबरं अंबरं साज बाजं ।
वनी पख्खरं बाजि साजं समाजं ॥ १९१ ॥
किते वीर बाने अमाने अपारं ।
किते मीर धीरं सजे सार धारं ॥
नफीरी बजी भेरि बज्जे रवहं ।
वहै उर्वसी संग लिन्नी समहं ॥ १९२ ॥
जके रूप सौं साह बंध्यौ सुजानं ।
जथा चंद्र की कांति चक्कोर मानं ॥
जथा पंकजं^८ वै दुरैफै लुभाए ।
तथा साह बंध्यौ सनेहं सुभाए ॥ १९३ ॥

१ एक । २ कीन । ३ लीन । ४ अच्छरी अंग । ५ छंडहिं । ६ आलादि
(अलाउद्दीन) । ७ समर्थ सुखानं । ८ पंकजं पै दुरैफै लुभाए ।

चले हयदलं पयदलं सथ्थ रथ्थ^१ ।

किते स्वाँन चीता मृगं संग जुथ्थं ॥

चले साह गोसं सरोसं सुभाँनं ।

बजे नह नीसाँन नव्वीन^२ चावं ॥१६४॥

उठी रेणु आकास छायाँ सुहदं ।

सनो पावसं मेघ गज्जे सवदं^३ ॥

चले तेज ताजी सुबाजी अपारं ।

सवै खाँन सुलताँन संगं जुभारं ॥१६५॥

करै बीर लीला सुकीली^४ विधाँनं ।

धरै बाँन कम्माँन संधाँन पाँनं ॥

लखे जीव जेते सु केते जिहाँनं ।

भ्रमै जंत्र तंत्रं सु पावै न जाँनं ॥१६६॥

बनै^५ बेहरं गोत्र गंभीर नारी^६ ।

वहै नीर नहं सुभदं उन्हारी ॥

भरै निभरं^७ नाद भारी असारं^८ ।

रहे फूलि संकूल वृक्षं अपारं ॥१६७॥

जहाँ अंव नीबू भए और केलं ।

सवै वृच्छ^९ फुल्ले फले भार मेलं ॥

भरी भार साखा^{१०} रही भुम्मि लग्गी ।

लता संकुलं पाद पतैं उमग्गी ॥१६८॥

भ्रमै भृंग पृजं सुगुंजं अपारं ।

मिली वेलि केती महीरूह^{११} डारं ॥

सनोँ मार अप्पार ताँने वितानं ।

१ हथं । २ वाने सुचावं । ३ सुभदं, सुसदं । ४ सकेली । ५ बनं ।

६ भारी । ७ नीभरं, निर्भरं । ८ पहारं । ९ वृक्ष फूले । १० सारं ।

११ महीरोह ।

तिहूँ काल हेरै लखै नाहिं भाँनं ॥१९९॥
 रमै कोकिला कीर नचचै मयूरं ।
 कहै बैन मानो बजै काँमतूरं ॥
 बहै सीत मन्दं सुगंधं पवन्नं ।
 करै काँम उद्दीपनं देखि वन्नं ॥२००॥
 सुरं सुंदरं पंकजं वन्न फुल्ले ।
 करै गुंज भारी भ्रमै भ्रमर भुल्ले ॥
 चहूँ ओर कुमोदनी चारु फुल्ली^२ ।
 महा मोद सौँ भार आनंद मुल्ली ॥२०१॥
 किते जीव समूह देखंत भज्जै^३ ।
 मृगं व्याघ्र चीते रिछं जत्र गज्जै^३ ॥
 कहूँ कौलपुंजं कहूँ लीलगाहं ।
 कहूँ चीतलं पांडुलं^४ व्याघ्र नाहं ॥२०२॥
 कहूँ भिल्ल बंके^५ बसै ताऽस्थानं^६ ।
 भखै सिंह स्यार ससालोन पाँनं ॥
 करै सिंह गुंजार भारी भयाँनं ।
 सुने प्राँनहारी डरै जीव हाँनं ॥२०३॥
 तहाँ साह की सेन किन्हौँ प्रवेसं ।
 तजे खाँन^७ पाँनं लए जो असेसं ॥
 करै बीर जेते सु केते उपावं ।
 हनै जीव जे साहि को बाज^८ पावं^९ ॥२०४॥
 तहाँ साह कै यूँ भए जाय डेरा ।
 चहूँ ओर को खाँन केते अनेरा ॥

१ सरं सुन्दरं पंकजं पुंज । २ फूली । ३ मृगं भार चीते वृकजत्र गज्जै । ४ पांडलं । ५ भील बाँके । ६ तास स्थानं । ७ जाँन । ८ बाच । ९ उपायं, जपायं (अंत्यानुप्रास) ।

कहूँ^१ बीन बादित्र बाजंत ऐसी ।

सुने राग मोहं^२ मृगं माल बैसी ॥२०५॥

करै^३ गाँन ताँन पसू पच्छि मोहै ।

सुनै जीव आवंत^४ जानै न को है ॥

सुने बीन पब्बीन^५ सुर नाय रागै ।

रहे मोहि कै माल डारे न भागे ॥२०६॥

कहूँ राग ऐसो करै^६ मेघ आवै^७ ।

तवै साह ताको बड़ी मौज दायै^८ ॥

असी भाँति आखेट कै रंग भीनो ।

निसा द्यौस जातन काहू न चीनो ॥२०७॥

तिहीं ठौर बित्त्यौ सुसारौ वसंत ।

रमै पातसाहं मनो रत्तिकंत ॥

तिहीं ठौर ग्रीखम्म किन्नौ प्रवेसं ।

महा संकुलं वृत्त राजं सुदेसं ॥२०८॥

तहाँ तेज भाँनं न जाँनं न जाँनं ।

तिहीं हेत साहं रहे तास थानं^९ ॥

समौ एक ऐसो तहाँ रौद्र आयो ।

महा पौन परचंड औ मेघ छायाँ ॥२०९॥

कहूँ ओर पतसाह खेलै^{१०} सिकारं ।

करै^{११} केलि जेती जलं बाल लारं^{१२} ॥

भयौ अंधकारं महाघोर ऐनं ।

गई सुद्धि सुज्झै नहीं अप^{१३} नैनं ॥२१०॥

१ कहूँ । २ मोहे । ३ आनंद । ४ पब्बीन । ५ तिहीं तेज भाँननं जाँनं न जातं । तिहीं हेत साहं रहे संक जातं । ६ आप ।

*लार (लाल)=जो क्रीड़ा में अन्नोंके पूर्व प्रिय प्रीति प्रतीति होती है ।

फुरयौ^१ साह को सत्थ भोजत्थ तत्थ ।

भयौ घोर अंधार सुभू^२ न हत्थ ॥

तजी बालक्रीड़ा जलं त्यागि भगगी ।

जहीं ओर दौरी भयौ मुख अगगी ॥२११॥

किहूँ ओर दासी किहूँ ओर खोजा^४ ।

कहूँ ओर हुरमै कहूँ ओर कोजा ॥

जसो होनहारं बन्यौ आय जैसो ।

करो लाख कोऊ टरै नाहिं तैसो ॥२१२॥

लिखे लेख जो नाहिं मिट्टै सुकोई ।

यही बात निश्चै सुनो सर्व्व सोई ॥

सरं त्यागि चल्ली सुहुरमै सुभीतं ।

कंपै गात ताको रह्यो व्यापि सीतं ॥२१३॥

तिहीं ठौर महिमा मिले सेख आई ।

महा साहसी सूर उद्धारताई ॥

निजं धर्म साधै तजै नाहिं राचं ।

कहै जो कछू^२ तो निबाहंत बाचं ॥२१४॥

मिली बाल ताकी कही दीन बाँनी ।

समै^३ बाम सेखं मनो^४ आप जानी ॥

डरो ना कहो आप हौ कौन कोई ।

कहूँ जो उढ़ावो यहाँ बैठि मोही ॥२१५॥

तवै बाजि तै^५ सेख भू पै जु आयौ ।

कछू बख हो अंग ताको उढ़ायौ ॥२१६॥

दोहरा छंद

महिमा उतरे बाजि तै^५, दियौ बख तिहिं हत्थ ।

१ फुर्यौ । २ कहूँ । ३ उभै । ४ मनं ।

+खोजा=सेवक ।

सीत भीत ता ना मिटी, कही हुर्म यह गथ ॥२१७॥
 पुच्छिय महिमा साहि तब, को तू आप बताय ।
 मैं घरनी पतिसाह की रूपबिचित्रा नाय ॥२१८॥
 जलक्रीड़ा हम करत सब, आयौ पौन प्रचंड ।
 तब डेरन को भजि चलीं, तामैं मेघ सुमंड ॥२१९॥
 भयौ भयानक तिमिर वन सबै सथ गय भूल ।
 मैं इकली वन महँ यहाँ, डरति फिरति दुख मूल ॥२२०॥

छापय छंद

तब महिमा कर जोरि हुरम कूँ सीस नवायौ^१ ।
 चढ़्यौ अस्व की पिट्टि दैव पहुँचाव सुभायौ ॥
 कहै हुरम सुन सेख देह कंपत है मोरी ।
 छिनक बैठि यहि ठौर सरन मैं लिनी (लीनी) तोरी ।
 कहै सेख यह बात नहिं, तुम साहिव मैं दास तुव ।
 यह धरम नाहिं उलटी कहो, सरन सदा सेवक सुभुव ॥२२१॥
 सेख समो पहिचानि स्वामि सेवक न विचारौ ।
 काँभ रूप तुम पुरुष वीर वानैत उदारौ ॥
 बहुत काल अभिलाष रही जिय मैं यह भारी ।
 कौन समो वह होय मिलै महिमा गुनवारी ॥
 सुइ करिय आज साहिव सहल, सकल मनोरथ सिद्ध हुव ।
 दै योग भोग संयोग यह, कौन दोस जग देहु तुव ॥२२२॥

चौपाई छंद

कहै सेख तुम वेगम सच्चिय ।
 ऐसी बात कहो मति कच्चिय ॥
 मैं अब लों तिय जग मैं जानत ।

भगनी मात सुता सम मानत ॥२२३॥

१ हुरम कटि कहि सन बोयौ ।

ता महिं तुम हजरत की बाला ।

सब कै एक वहे हकताला ॥

तातै कहा धर्म में हारुं ।

यह तो कबहुँ जिय न विचारुं ॥२२४॥

सुनहु सेख बेगम तिय सबहीं ।

तुम हूँ धर्म सुन्यौ है कबही ॥

तिय तजि लाज कहत रति जाचन ।

को नहिं धर्म जो पुरुष अराचन ॥२२५॥

तन मन धन जाचे तैं दिजिय ।

कह कुराँन पूरन सोइ किजिय^१ ॥

पुरुष धर्म यह मूर न होई ।

तिय जाचत कौ नाटत कोई ॥२२६॥

सोरठा छंद

तब जिय सोचि विचारि, मनहीं मन महिमा समुक्ति ।

साँची है यह नारि, धर्म उभै जग महँ प्रगट ॥२२७॥

तब महिमा मुसकाय, कर गहि आलिंगन दियौ ।

इक तरु कौ तर जाय, दियौ तुरंगम बंधि तब ॥२२८॥

जीनपोस तर डारि, सस्त्र खुल्लि रक्खिय निकट ।

करी सुमार सुमार, उत्कंठा तिय मिलन की ॥२२९॥

छप्पय छंद

महा मोद मन बढ़्यौ परस्पर तन मन फुल्लिव ।

मिटिव बंक मन संक निसँक ह्वै आसन भुल्लिव ॥

मानो कोक चकोर चंद लबभव रबि लवे ।

घन दामिनि मनु मिलिय काँम रति पति सुख फवे ॥

दुहुँ ओर सोर स्वातिक सुभो, गाढो आलिंगन दियव ।
 नख खंड नाहिं परसे सरहिं, सकल कोक केली कियव ॥२३०॥
 अंग अंग बिनअंग* रंग बड्ढिव दुहुँ ओरन ।
 कढिव विरह तन ताप परस्पर वर सत मोरन ॥
 हाव भाव रति अंग मुदित वर्षत अभिलापै ।
 करत कटाक्ष प्रकास बैन मधुरै मुख भापै ॥
 गहि अंग संग आसन दियव, कोक कला रस विस्तरिव^१ ।
 आनंद द्वंद उन्माद जुत, काँम बिबस दोउन भयव ॥२३१॥
 तिहिं छिन इक मृगराज आनि तत्काल सुगजिव ।
 प्रज्वलित नयन प्रचंड चँवर सिर उपर सजिव ॥
 विकट दंत मुख विकट बाहु नख विकट सुरजै ।
 तिहिं भय वन कै जीव सवै गजराज सुभजै ॥
 आवत्त देखि तिहिं सिंह कौ, हँ सभोति तिय इम कहै ।
 विधि कौन समै यह का भई, दैव वारि मैं वपु वहै ॥२३२॥
 तव तिय कंपि सभोति उछरि महिमा गर लगिय ।
 हे प्राणेश्वर कहा भई रसगत जु उमगिय ॥
 नजहु भजहु अव वेगि, वचहु अव प्राण उवारो ।
 मैं अव पलटे प्राण तजौं, तुम पर तन वारों ॥
 मुसकाय मीर तव यों कहै, न डरि न डरि अवला सुभुव ।
 तुटै जु आव रक्खों भुज न, कहा स्याल डर डरत तुव ॥२३३॥

छंद अर्द्धनाराच

गहे कमाँन बाँनयं, धरंत ताहिं पाँनयं ।
 तज्यौ न बाल आसनं, गह्यौ सरं सरासनं ॥२३४॥

१ विस्थरिव । २ प्रफुलित ।

* बिनअंग=अनंग ।

सु सिद्धि राग बागयं, ढए स धीर पागयं ।
 कह्यौ हँकारि जाचयं, सम्हारि स्वाँन साचयं ॥२३५॥
 करी सुगुज्ज पुंजयं, उड्यौ सु क्रोध गुंजयं ।
 धर्यौ सु चौर सीसयं, भुजा उठाय रीसयं ॥२३६॥
 जथा सुक्रोध कालयं, उठ्यौ सु सिंह बालयं ।
 करं कमाँन लिन्नयं, कसी सतानि^१ दिन्नयं ॥२३७॥
 लग्यौ सुबाण मन्थयं, लखी अकत्थ गत्थयं ।
 लग्यौ सुबाण पार भौ, गिर्यौ सु सिंह स्यार भौ ॥२३८॥

दीहरा छंद

सिंह मारि इक बाण तैं, भू मैँ दिन्नौ डारि ।
 फिरि कमान तिहिं हृथ^२ तैं, धरी जु भूपर धारि ॥२३९॥
 यह साहस किन्नौ प्रगट, सम स्वभाव सम बुद्धि ।
 गर्व हर्ष हिय नहिं कछू, प्रगटिय प्रेम प्रसिद्ध ॥२४०॥
 मिलत मिलत मुसकात मृदु, कंपत हषेत गात ।
 उचकनि लचकनि मसकियो, सीकर हूकर वात ॥२४१॥

कवित्त छंद

कंचन लता सी थहरात अंग अंग मिलि,
 सीकर समूह अंग अंगनि मैँ दरसै ।
 चुंबन कपोल नैन खंडन अधर नख,
 गहत पयोधर प्रचंड पानि परसै ॥
 आनँद उमंगन मैँ मुसकात वाल तुत-
 रात बतरात सतरात रस वरसै ।
 लपटनि झपटनि मसकनि अनेक अंग,
 रति रंग जंग तैं अनंग रंग सरसै ॥२४२॥

छप्पय छंद

मिटी पवन परचंड, मिटिव मनमथ मद भारिव ।
 हटेउतिमर तिहिँ समय, प्रगट परगा(का)स सुधारिव ॥
 सकल सत्थ जथ तत्थ, मिले आप्न^१ थल आइव ।
 साहि हुरम को सोध करिव तिहिँ समय सुहाइव ॥
 दिनी जु सिक्ख तव सेख कौं, अप्प अप्प सिबरन गवय^२ ।
 पहुँची सु जाय पतिसाह पै, हुरम साह आदार दियव ॥२४३॥
 तव सु साहि करि कुच्च,^३ सकल दिलिय दिसि आयव ।
 चढ़िव सेन समूह, धूरि उड़ि अंबर छाइव ॥
 घुमरि घुमरि निस्साँन,^४ घोर दुंदभि घन बज्जिय ।
 सकल खान उमराव, हरष संजुत मग रज्जिय ॥
 कीन्हौं^५ प्रवेस निज निज घरन, साह महल दाखिल भयव ।
 सुख खान पान सौगंधजुत, अप्प अप्प^६ रस वस भयव^७ ॥२४४॥
 इक्क^८ समय पतिसाह, हुरम संग सेज विराजे ।
 दंपति अति रस लीन, काक की कला^९ सुसाजे ॥
 रमत करत परकार, इक्क^{१०} आसन रस^{११} भीने^{१२} ।
 सरस परस्पर मुदित, उदित कंद्रप तन चीने ॥
 तिहिँ समय दैव संजोग तै, इक आखू⁺ आवत भयव ।
 देखंत ताहिँ पतिसाहि को, मदन द्वंद उत्तरि गयव ॥२४५॥
 दोहरा छंद

मूपक हजरति देखि कै, आसन तजि ततकाल ।
 लै कमान संधानि कै, हन्यौ तार लखि बाल ॥२४६॥

१ आपन । २ दीनी जु सीख तव सेख कौं आय आय डेरन गयव ।
 ३ कुँच । ४ नीसाँन । ५ किनौ । ६ आप आप । ७ बसि छयव । ८ एक ।
 ९ कैलि । १० एक । ११ रति । १२ भिन्ने, चिन्ने, भिन्नय, चिन्नय, अन्तानुप्रास ।

+आखू (आखु) = मूषा ।

चौपाई छंद

हजरति हरषि तोर तिहिं^१ दिन्नौ ।
 चूहौ^२ प्राण-हीन तव किन्नौ ॥
 तबहीं साहि हरषि मुसकाए ।
 तिय कौ ऐसे बचन सुनाए ॥२४७॥
 कायर जाति तिया^३ हम जानी ।
 तातैं यह हम प्रथमहिं ठानी ॥
 यह करनी अद्भुत तुम देखी ।
 निज कर करी सु तुम अवरेखी ॥२४८॥
 हँसी हुरम सुनि हजरति बानी ।
 पुरुषन की तो अकथ^४ कहानी ॥
 मारैं सिंह तो न मुख भाखैं ।
 जाचे नाहिं प्राण वै राखैं ॥२४९॥
 मैं जग मैं ऐसा सुनि पाऊँ ।
 कहै साहि मैं बहुत बधाऊँ ॥
 बकसो गुनह तो अवै बताऊँ ।
 तुरत साहि कै पाइ लगाऊँ ॥

सोरठा छंद

ऐसा मोहिं बताय, सिंह मारि सिफत न करै ।
 बकसो औगुन आय, जो उन तात ज मारियौ ॥ २५१ ॥
 हुरम तवै कर जोरि, बार बार सिर नाय कै ।
 सुनहु गुनह^५ अब मोर, हजरति वीत्यौ आपनो ॥ २५२ ॥

१ तहँ । २ चूही प्राणहीन तिहिं चीनौ । ३ तीय । ४ अकथ ।

५ गुनाह जुमोर ।

छप्पय छंद

मृगया महँ जिहि समय, सकल सुखिय^१ बन माहीं ।
महा घोर तम भयौ, तहाँ^२ बरनी नहिं जाही ॥
तदिन सेख संयोग, आनि हमसँ तव मिलिव ।
नहिंन सेख तकसीर, देखि मन मोरहिं चल्लिव ॥
संयोग भोग बिछुरन मिलन, लिख्यौ विधाता ज दिन जहँ ।
नहिं टरै लाख कोऊ करो सुतौ होय वह^३ त दिन तहँ ॥२५३॥

दोहरा छंद

मैं सेखहिं जानत नहीं, सेख न जानत मोहिं ।
होनहार संजोग जो,^४ मिटै न उतनी होहि ॥ २५४ ॥
सुरति करत सिंह जु उठ्यौ, लख्यौ सेख सति भाय ।
लै कमाँन मार्यौ तुरत, तज्यौ न आसन आय ॥ २५५ ॥
सुनू स्वभाव ज सेख के, लच्छिन कहे जु आप ।
मैं समीति भइ सिंह तैं, कहे मोहिं विन पाप ॥ २५६ ॥

त्रोटक छंद

सुनिये पन सेख करे निज ये ।
घर बैठत वाँ जल सों रजए ॥
नहिं भोजन सोहि गरम्म करै ।
उकरू नहिं बैठत भुंमि भरै ॥२५७॥
सरणागत आवत नाहिं तजै ।
पर वाँम लखे मन माहिं लजै ॥
जहँ जाचत प्राण न राखत है ।
नहिं झूठ अकारन^५ भाखत है ॥२५८॥

१ भूले । २ तहाँ कुछ बरि न जाही । ३ वहाँ । ४ तैं ।

५ अकारथ ।

कट्टन गरदन जोग तू, कीनौ^१ कुबिध^२ खराब ।
को रक्खै^३ या भूमि पर, रक्खि^४ करै को ज्वाब ॥२७२॥

छंद छंद

यह महि मँडल जितो, आँन मेरी सब मानै ।
खूती^५ रक्खै कौन, कोउ ऐसा तू जानै ॥
हम तैं बली बताय, ओट जाकी तू तक्कै ।
बचै न काहू ठौर, एक बिन गए न मक्कै ॥
कर जोरि सेख इम उच्चरै, बली एक साहिब गिनूँ ।
निर्वीज धरा^६ कबहूँ न है, मैं हमीर खवनन सुनूँ^७ ॥२७३॥
तब सुसेख सिर नाथ, रजा हजरति जो पाऊँ ।
जौ न गिनै पतिसाह, सर्न मैं ताकी^८ जाऊँ ॥
तुमहि न नाऊँ सोस, नहिंन फिरि दिह्लिय आऊँ ।
जुद्ध जुरे नहिं टरौं, हत्थ तुम कौ जु दिखाऊँ ॥
यह कहत सेख सल्लाम^९ किय, तबहिं चला चलचित्त भुब ।
निज धाम आय अप अनुज सों, बिबर बिबर बातैं जुहुव ॥२७४॥

छंद पद्धरी

आए जु सेख घर तब सरोष ।
जिय जान्यौ अपनो सकल दोष ॥
मिलिय^{१०} जु मीर गवरू सुधाय ।
चलचित्त देखिं तिहिं पृच्छि^{१०} जाय ॥२७५॥
किहिं हेतु आज चितत सुभाय ।
किहिं कियव वैर सो मुहिं^{११} बताय ॥
तिहिं मारि करूँ ततकाल टूक^{१२} ।

१ किनौ । २ कुबिध । ३ राखै । ४ राखि । ५ भूमि । ६ है ।
७ गिन्यौ, सुन्यौ अंत्यानुप्रास । ८ जाकी । ९ मिल्ले । १० पुच्छि ।
११ मो । १२ टूक ।

द्विय क्रोध अग्नि सों^१ उठत ऊक^२ ॥२७६॥
 को^३ करै बैर बिन कर्मबीर ।
 मिट^४ गये अन्न जल को सु सौर ॥
 तिहि^५ कौन रहै रक्खै सु कौन ।
 यह जानि मर्म तुम रहो मौन ॥२७७॥
 यह सुनत मीर गवरु सुभाय ।
 सो^६ परचौ धरि मुच्छा सु खाय ॥
 तदि करचौ बोध बहु विधि सुताहि ।
 नहिँ करो सोच रहो^७ निकट साहि ॥२७८॥
 तव कहै मीर गवरु सु ताहि ।
 सब तजो देश भक्के सु जाहि ॥
 कै रहो राव हम्मोर पास ।
 तन रहै खुसी नासै जु त्रास ॥२७९॥
 तव चलिव सेख तजि साहि देस ।
 सब^८ सुभट संग लिन्ने^९ सुवेस ॥
 सत पंच सैन गजराज पंच ।
 रथ सत्थ लिये निज नारि संच ॥२८०॥
 सब रखत साज निज संग लीन ।
 दासो^{१०} जु दास सुंदर नवीन ॥
 सजि साज बाज डेरे अनूप ।
 लदि ऊँट किते सँग चलिय^{११} जूप ॥२८१॥
 चढ़ि^{१२} सेन सज्यौ निज संग वाम ।

१ यों । २ हूक हुक । ३ महिमा लाहोवाच । ४ मिटि अन्न जहाँ
 के सनीर । ५ तव । ६ सुइ परपो धरनि मुर्छा मुखाइ । ७ रहु ।
 निज । ८ लीन्हे । ९ सब दासि दास । ११ चले । १२ गति
 ल चढ्यौ ।

बज्जिव निसाँन गज्जिव सु ताँम ॥
 मग चलत करत मृगया अनेक ।
 मिलि चलिय^१ सकल बर बीर एक^२ ॥२८२॥
 जिहिं मिलै राव राजा सु जाय ।
 पतिसाह वैर सुनि रहै चाय ॥
 चहुँ चक्क फिरथौ महिमा सुधीर ।
 नहिं^३ कह्यौ रहन काहू सुबीर ॥२८३॥
 है^४ दीन सेख देखे सुभारि ।
 बिन राव दसौं दिसि फिरिव हारि ॥
 तब तक्कि^५ सेख हम्मीर राव ।
 सोइ आइ सरन परसे जु पाव ॥२८४॥

दोहरा छंद

गढ़ बंका^६ बंको सुधर, बंका^६ राव हमीर ।
 लखि प्रतीति मन महँ^७ भइय, हर्षे महिमा मीर ॥२८५॥
 देखि जलासय बिटप बहु, उतरि सुडेरा कीन^८ ।
 हय गय बंधे तरुन तर, खाँन पाँन विधि लीन^९ ॥२८६॥
 डेरा ड्यौदी करि खरे, करी बिछायति बेस ।
 करि^{१०} मिसलति कौं सलि जुरी, सब भर सरस सुदेस ॥२८७॥
 मंत्री मंत्र सुपूछि^{११} तब, इक चर लीन सु बोलि ।
 जाहु राव के पास तुम, कहो वात सब खोलि^{१२} ॥२८८॥
 प्रथम सलाँम कहो जु तुम, बिरत^{१३} कहो सु बिसेष ।
 हुकम होय जो मिलन कौं, तो हजूर है सेख ॥२८९॥
 इतने मैं जानी परै, पन ध्रम प्रीति प्रतीति ।

१ चलै । २ केक । ३ नन कह्यौ । ४ है, दोउ दीन, दोय । ५ तके ।
 ६ बंको । ७ जिय मैं । ८ किन । ९ लीन । १० करी कचहरी आप तब ।
 ११ पुच्छि । १२ बुल्लि, खुल्लि । १३ वृत्त, वृत्तांत ।

हर्ष सोक यहिँ गति लख्यौ, तुम जानत सब रीति ॥२६०॥
तब सु दूत गय राव पहुँ, करी खबरि दरवाँन ।
बोली हजूरि सुदूत कौ, पूछत कुसल सुजाँन ॥२९१॥
सकल बात सुनि दूत मुख, हर्ष राव बहु कीन^१ ।
तबहिँ उलटि पठ्यौ सु वह, सेख बुलाय सुलीन^२ ॥२९२॥

नाराच छद

चल्यौ जु सेख राव पहुँ बनाय साज कीनयं^३ ।
तुरंग पंच नाग एक साज साजि लीनयं^४ ॥
कमाँन दोय टंकनो सु देस मुल्लताँन की ।
कृपाँन एक^५ बेस देस पालकी सुजाँन की ॥२६३॥
लिये सु दोय बज्र लाल एक^६ मुक्त मालयं ।
कही जु एक^७ दोय बाज स्वाँन दोय पालयं ॥
सवार एक आपही सवै पयाद चल्लियं ।
रहे तनक्क पौरि जाय फेरि अग हल्लियं ॥२६॥
सुवेतहार अग^८ जाय राव कौ सुनाइयं ।
हमीर राव वेगि आय^९ रावतं खँदाइयं ॥
चले लिवाय सेख कौ जहाँ जु राव वट्टियं ।
सभा समेत राव देखि सेख कौ सु उट्टियं ॥२९५॥
मिले उभै समाज सौँ कुसल छेम पुच्छियं ।
परसि पानि पाव सेख हाथ^{१०} जोरि सुच्छियं ॥
करी जु अग सेख भेंट बुल्लियौ सु वाचयं ।
सरन्नि राव राखि^{११} राखि मै सरन्नि साचयं ॥२६६॥
फिर्यौ सु मै सुदीन दोय खाँन जाँति सव्वयं ।
जितेक राज रावताय छत्र जाति सव्वयं ॥

१ किन्न । २ लिन्न । ३ किन्नयं । ४ तुरंग पंच नाग इफ साज सलि
लिनयं । ५ इक । ६ अग । ७ आप । ८ हत्य । ९ रक्त्ति रक्त्ति ।

बज्जिव निसाँन गज्जिव सु ताँम ॥

मग चलत करत भृगया अनेक ।

मिलि चलिय^१ सकल वर बीर एक^२ ॥२८२॥

जिहिं मिलै राव राजा सु जाय ।

पतिसाह वैर सुनि रहै चाय ॥

चहुँ चक्क फिरि यौ महिमा सुधीर ।

नहिं^३ कछौ रहन काहू सुबीर ॥२८३॥

ह्वै^४ दीन सेख देखे सुभारि ।

बिन राव दसौं दिसि फिरि व हारि ॥

तब तक्कि^५ सेख हम्मीर राव ।

सोइ आइ सरन परसे जु पाव ॥२८४॥

दोहरा छंद

गढ़ बंका^६ बंको सुधर, बंका^६ राव हमीर ।

लखि प्रतीति मन महुँ^७ भइय, हर्षे महिमा मीर ॥२८५॥

देखि जलासय बिटप बहु, उतरि सुडेर। कीन^८ ।

हय गय बंधे तरुन तर, खान पाँन विधि लीन^९ ॥२८६॥

डेर। ड्यौड़ी करि खरे, करी बिछायति बेस ।

करि^{१०} मिसलति कौं सलि जुरी, सब भर सरस सुदेस ॥२८७॥

मन्त्री मंत्र सुपूछि^{११} तब, इक चर लीन सु बोलि ।

जाहु राव के पास तुम, कहो बात सब खोलि^{१२} ॥२८८॥

प्रथम सलाँम कहो जु तुम, बिरत^{१३} कहो सु विसेष ।

हुकम होय जो मिलन कौं, तो हजूर है सेख ॥२८९॥

इतने मैं जानी परै, पन ध्रम प्रीति प्रतीति ।

१ चलै । २ केक । ३ नन कछौ । ४ द्वै, दोउ दीन, दोय । ५ तके ।

६ बंको । ७ जिय मैं । ८ किन्न । ९ लीन । १० करी कचहरी आप तब ।

११ पुच्छि । १२ बुल्लि, खुल्लि । १३ वृत्त, वृत्तांत ।

छप्पय छंद

बार बार क्यों कहै सेख उत्कर्ष बढ़ावै ।
 एक^१ बार जो कही बहुरि कछु और कहावै^२ ॥
 प्रथम वंस चहुवाँन टेक गहि कबहुँ न छंदै ।
 बहुरि राव हम्मीर हठ न छुटै तन खंदै ॥
 थिर रहहु^३ राव इम उच्चरै न डरि न डरि अब सेख तुव ॥
 उगौ न सूर जो तजहुँ^४ तोहिं चलहि^५ मेरु अरु भुमि ध्रुव ॥२०३॥
 बकसि सेख कौ वाजि^६ साज कंचन के साजे ।
 मुक्त माल सिरपेंच जटित हीरा^७ छवि छाजे ॥
 सकल सथ्य सिरपाव साल दिन्नव अति^८ भारिय ।
 पंच लख को पटौ दियौ आदर भुवकारिय^९ ॥
 दिन्नी सुठौर^{१०} सुंदर इकै^{११} तिहिं देखत^{१२} हिय हर्षियउ ।
 उच्छाह सहित उठि सेख तव आनंद मंगल वर्णियउ ॥३०४॥

दोहरा छंद

महिमा साह जु तुरतही^{१३} गए हवेली आप ।
 देखत ही सब भाँति सुख मिटी सकल तन ताप ॥
 महिमानो पठई नृपति, सबै सथ्य के हेत ।
 खान पाँन लायक जिते, मधु आमिष^{१४} सु समेत ॥३०५॥
 ज दिन सेख दिल्ली तजी, दूत सथ्य दिय ताहि ।
 को रक्खै कित^{१५} जात यह, लखो जु तुम हूँ वाहि ॥३०६॥
 राख्यौ^{१६} राव हमीर तव, महिमा साहु जु पास ।
 कहै राव सौं दूत तव, मत रक्खो तुम^{१७} पास ॥३०७॥

- १ इकक । २ कहावै । ३ होहु । ४ तजो । ५ चलै । ६ वाज ।
 ७ हीरन । ८ अति । ९ बहुधारिय । १० जु । ११ चले ।
 १२ पिक्रत । १३ तुरत तव । १४ अमिष । १५ मत जग दह ।
 १६ रक्खिउ । १७ निज पास ।

दिसा दसौं जितेक भूप और बीर बंक जे ।
 रहो कद्यौ सु कौन हू रहूँ तहाँ सुधीर जे^१ ॥२९७॥
 हूँसे हमीर राव बात सेख की सुनंतही ।
 कहा अलावदीन, पातसाह, सोभनंतही ॥
 रहो यहाँ अभै सदा हमीर राव यों कहै ।
 तजूँ ज तोहिं प्राण साथि और बात यों^२ कहै ॥२९८॥

चौपाई छंद

राव हमीर नजरि सब रक्खिय ।
 बचन सेख कौ यहि विधि भक्खिय ॥
 तन धन गढ़ घर ए सब जावै ।
 पै महिमा पतिसाह न पावै^३ ॥२९९॥
 कहै सेख प्रण समुझि सु किजिय^४ ।
 मेरी प्रथम अर्ज सुनि लिजिय^५ ॥
 दसों दिसा मैं मैं फिर आयव ।
 जिते खान सुलतान सु गायव ॥३००॥
 राजा रान राव जितने जग ।
 दीन होय देखे^६ सु अगम मग ॥
 बाँध तेग साहस करि कोई^७ ।
 तजै लोभ जीवन को सोई^८ ॥३०१॥
 यह जिय जानि बास मुहिं दीजे^९ ।
 सेख राखि^{१०} सरनै जस लीजे^{१०} ॥
 इतनी धरा सेष सिर होई ।
 कहै साहि रक्खै नहिं कोई ॥३०२॥

१. सुतंक जे । २. त्यों । ३. कीजे । ४. लीजे । ५. दिक्खे । ६. कोईय ।
 ७. सोइय । ८. दिजिय । ९. रक्खि । १०. लिजिय ।

परो^१ फिर आप नहीं दुख आय ।

तजो यह जानि प्रथम् सुभाय ॥

जथा वह रावन जिति^२ त्रिलोक^३ ।

सुरन्नर नाग रहैं तिहिं ओक^४ ॥३१४॥

करयौ तिन वैर जबै रघुनाथ ।

मिट्यौ गढ़ लंक सुवंकम पाथ^५ ॥

कहो सर^६ कोन करै पतिसाह ।

करै तव जंग वचो नहिं ताहि^७ ॥३१५॥

छप्पय छंद

कह हमीर सुनि दूत वचन निज असत भाखौ ।

मो विन^८ और न कोय सेख को सरनै राखौ ॥

गहूँ खाग^९ सनमुख दुहूँ अति गर्व सुद्ध द्रढ़ ।

लहै मुक्ति मग सत्य किधौ रणथंभ महा गढ़ ॥

कहियो निसंक पतिसाह सों सेख सरनि हमीर किय ।

सामान युद्ध जेते कछू सो अनंत दुग्गह जु लिय ॥३१६॥

दातार छंद

सुनि हमीर के वचन, दूत दिलिय दिस आयव ।

करि सलाँम कर जोरि, साह कौ^{१०} सीस नमायव ॥

पूरव दच्छिन देस और पच्छिम दिसि आयव ।

सबै सेख फिरि थकि, कहूँ काहू न रखायव ॥

तव सेख आय रणथंभ गढ़, दीन वचन इम भखियौ^{११} ।

सुनि हमीर करुणा सहित, सेख वचन दै राखियौ^{१२} ॥३१७॥

महरम खाँ वजीरोवाच

समद पार गय सेख, वार हजरत वह नाहीं ।

१ परै । २ जीति । ३ तिलोक । ४ ओक । ५ नाथ । ६ सरि ।

७ आहि । ८ मुक्त दिन । ९ तेग । १० सों । ११ भाखियौ । १२ राखियौ ।

अलादीन सू^१ औलिया, फिरत चहूँ दिसि आनि ।
निबल सबल के बाद सों, किन सुख पायौ जानि ॥३०८॥

मुक्तादाम^२ छंद

कहै तब दूत सुनो नृप बात ।

बड़ो तुव बंस प्रताप सुहात^३ ॥

तजो^४ रतनागर को सर हेत ।

रतन अमूल्य^५ तजो रज हेत ॥३०९॥

कहो गुन कौन रखे इहि^६ सेख ।

जरत जु बाल गहो^७ सुविसेष ॥

अजाँन असी जु करै नहिँ राव ।

सुनो^८ तुम नीति जु राज स्वभाव ॥३१०॥

तजो अब इक्क^९ कुटुंब वचाय ।

तजो गृह इक्क सुग्राम सहाय ॥

तजो पुर इक्क सुदेस वचाय ।

तजो सब आतम हेत सुभाय ॥३११॥

महा यह नीच अधर्मिय^{१०} सेख ।

ढरथौ नहिँ स्वामि तिया गुन देख ॥

बढ़ै पतिसाह^{११} दिलीपति^{१२} बैर ।

लख्यौ नहिँ आँनन प्रात सुफेर ॥३१२॥

प्रलै जिहिँ रोष तजै धर देह ।

हमीर सु राव सुनो रस^{१३} भेव ॥

बढ़ै निति नेह तुमै पतिसाह ।

अमीरस मैं विष घौरत काह ॥३१३॥

१ से । २ मोतीदाम । ३ सुतात । ४ तजो सरनागत । ५ अमोल ।

६ इह । ७ गही । ८ सुनी । ९ एक । १० अधर्मिय । ११ पुनि साह ।

१२ दिलीसहिँ । १३ इह ।

परो^१ फिर आप नहीं दुख आय ।

तजो यह जानि प्रथम्म सुभाय ॥

जथा वह रावन जित्ति^२ त्रिलोक^३ ।

सुरन्नर नाग रहैं तिहिं ओक^४ ॥३१४॥

करयौ तिन वैर जबै रघुनाथ ।

मिथ्यौ गढ़ लंक सुवंकम पाथ^५ ॥

कहो सर^६ कोन करै पतिसाह ।

करै तब जंग वचो नहिं ताहि^७ ॥३१५॥

छप्पय छंद

कह हमीर सुनि दूत वचन निज असत भाखौ ।

मो बिन^८ और न कोय सेख को सरनै राखौ ॥

गहूँ खाग^९ सनमुख दुहूँ अति गर्व सुद्ध द्रढ़ ।

लहै मुक्ति मग सत्य किधौ रणथंभ महा गढ़ ॥

कहियो निसंक पतिसाह सों सेख सरनि हम्मीर किय ।

सामाँन युद्ध जेते कछू सो अनंत दुगह जु लिय ॥३१६॥

दातार छंद

सुनि हमीर के वचन, दूत दिलिय दिस आयव ।

करि सलाँम कर जोरि, साह कौ^{१०} सीस नमायव ॥

पूरव दच्छिन देख और पच्छिम दिसि आयव ।

सबै सेख फिरि थकि, कहूँ काहू न रखायव ॥

तब सेख आय रणथंभ गढ़, दीन वचन इम भविष्यौ^{११} ।

सुनि हमीर करुणा सहित, सेख वचन दै राख्यौ^{१२} ॥३१७॥

महरम खाँ वजीरोवाच

समद पार गय सेख, चार हजरत बह नाहीं ।

१ परै । २ जीति । ३ त्रिलोक । ४ ओक । ५ पाथ । ६ सरि ।

७ आदि । ८ मुक्त दिन । ९ तेग । १० सों । ११ भाविष्य । १२ राख्यौ ।

राव शेख क्यों रखै, रहत हजरत घर माहीं ॥
 फिर न कहो यह बचन, बृथा^१ कवहूँ^२ अनजानै ।
 दूत साह के बचन, सुने सत्कार सुमानै ॥
 महरम्म खान इम उच्चरै, खबरदार नहिं बेखबरी ।
 कहिये जु बात निज द्रगन लिखि, असी बात नहिं कहो फिरि ॥३१८॥

दोहरा छंद

महरम खाँ उज्जीग सौं, कहै बैन पतिसाहि ।
 इक फरमान हमीर कौं, लिखि भेजहु अब ताहि ॥३१९॥

छप्पय छंद

लिखि हजरति फरमान उलटि एलची पठाए ।
 हठ मति करो हमीर चौर मति रखो पराए ॥
 हम दिल्ली के ईस राव तुमहूँ जु कहावो ।
 बढै अलसि जिय माहिं^३ बैर मैं कहा जु पावो ॥
 माल मुलक चाहो जितौ, कहै साहि बहु लिजिये^४ ।
 फरमान बाँचि^५ जिय राव तुम, चोर हमारौ दिजिये^६ ॥३२०॥

दोहरा छंद

बाँचि^३ राव फुरमान तब, दियउ सेस तब अंग ।
 बचन दिये मैं सेख कौं, करों शाह सों जंग ॥३२१॥
 दियउ^७ उलटि फरमान तब, राव साहि कौ ज्वाव ।
 रक्ख्यौ महिमा साहि मैं, तजूँ न तिहिं मैं आव ॥३२२॥
 यह फरमान जु बाँचि^३ कै, करिव साह तब क्रोध ।
 खिज्यौ देखि पतिसाह कौ, कियौ उजीर सुबोध ॥३२३॥

छप्पय छंद

कितौ गढ़ रणथंभ राव जिस पहुँ गवीए ।
 दसूँ देस वसिं किये जोति करि पाँव लगाए ॥

१ व्यर्थ । २ कवहूँ । ३ माँझ । ४ लीजिए । ५ बाँचि । ६ दीजिए । ७ दियो ।

ईस कहौ अब कोन जुद्ध जो हम सों मंडै ।
देत दुनी तैं कढ़हि गर्व तातैं क्यों मंडै^१ ॥
साहिब्व बचन इम उच्चरै अली औलिया पोर गनि ।
महिमा साह जु रक्खि तुव अजहूँ समुझि हम्मीर मनि^२ ॥३२४॥

दोहरा छंद

दूजा हजरति का लिख्या, बाँचि राव फरमाँन ।
वार वार क्यों लिखत है, तजूँ न हठ की बाँन ॥३२५॥
पच्छिम सूरज उगवै, उलटि गंग वह नीर ।
कहो दूत पतिसाह सों, तौ हठ न तजै हम्मीर ॥३२६॥

छप्पय छंद

दियौ पद्म ऋषिराज करौं जव लग मैं सोइय ।
जो गढ़ आयौ निमत साह रक्खै नहिं कोइय ॥
अनहोनी नहिं होय होय होनी है सोइय ।
रजिक^३ मोति हरि हथ्य डर सु मानव क्यों कोइय ॥
नहिं तजूँ सेख को प्रण करिव सरन धरम छत्रिय तनों ।
नन है विचित्र महिमा तनो सत्य बचन मुख तैं भनों ॥३२७॥
चले दूत मुरभाय, दिलिय दिसि कियौ पयानो ।
गढ़ रणथंभ हम्मीर साह कैसै कम जानो ॥
हयदल पयदल सेन सूर वर वीर सवायौ ।
हठी राव चहुवाँन वंस यहि हठ चलि आयौ ॥
यहि विधि सु तुमहूँ धर लखै^४ हरे^५ सकल तुम वीर धर ।
अब पतिसाह जु एक भुव^६ कै तुम कै जु हम्मीर धर ॥३२८॥
सुनत दूत कै बचन साहि जव मन मुसकाए ।
कितो राज हम्मीर करै हठ मोहिं बुलाए ॥

१ तंडै । २ तुव । ३ रिजक । ४ लिखै । ५ हरी । ६ भव ।

कितेक गढ़ इक ठौर किते उमराव महाबल ।
 किते बाजि गजराज किते भट बंक महाबल^१ ॥
 तुम कहो सकल समभाय मुहिं किहिं हेतु इतै^२ गर्वहिं बढ़ै ।
 हम्मीर राव चहुवाँन कै कितो^३ नृपनि^४ दल संग चढ़ै ॥३२६॥
 हजरति राव हमीर बार बहुतै समभायव ।
 सुनि महिमा को नाँम रोष करि गाव रिसायव ॥
 करौ जुद्ध तिर सुद्ध साह दल खंडि बिहंडौ ।
 धरौ सीस हर कंठ सुजस तिहिं लोकहिं मंडौ ॥
 हम्मीर राव इम उच्चरै गही टेक^५ छाँड़ौ नहीं ।
 तन जाहु रहै जिय सोच^६ नहिं लाज धरम खंडौ नहीं ॥३२७॥

चौपाई छंद

कहे साहि सुनु दूत सु बैनं ।
 कहो^७ राव को पन ध्रम एनं ॥
 कितोक दल बल सूर समाजं ।
 कितेक गढ़ सामाँ धर राजं ॥ ३२१ ॥
 रहनी करनी प्रजा प्रतापं ।
 बानी^८ बिरद^९ दाँन द्रव आपं ॥
 नीति अनीति ग्राम गढ़ कैसा ।
 सहर^{१०} सरोवर बाट जु जैसा ॥ ३२२ ॥
 सत्तरि सहस तुरंगम जानो ।
 दोय लक्ख पयदल भरमानो ॥
 सत्तपंच गजराज अमानो^{११} ।
 होहि कीच मद बहत सुदानो^{१२} ॥ ३२३ ॥

१ बड़ा दल । २ येत । ३ कितका । ४ दसम । ५ तेग । ६ लोम ।
 ७ कहै । ८ बाना । ९ विद । १० सहस रोष बाग जु जैसा । ११ मानै ।
 १२ दानै ।

रनथंभौर ग्वालियर वंका ।

नरवल^१ औ चित्तौड़ सु तंका ॥

रहै जखीरा गढ़ कै जेता ।

अनगिन^२ वस्तु न जानत तेता ॥ ३३४ ॥

तुरी सहस इकतीस सु सज्जै ।

अरु गजराज असी मद गज्जै ॥

सूर वीर दस सहस अमानो ।

इते राव रणधीर के जानो ॥ ३३५ ॥

दोहरा छंद

मेदि मसोत (द) जु सकल तहँ,^३ कीके^४ मंदिर देस ।

वाँग निवाज न होय जहँ, स्रवन कथा हरि बेस ॥ ३३६ ॥

नहिं कुराँन कलमा नहाँ, मुसलमाँन नहिं पीर ।

च्यारि बरण आस्रम सुखी, देस हमीर सु धीर ॥ ३३७ ॥

अपनै^५ अपनै धर्म मै, रहै सवै नर नारि ।

राजनीति पन तेजजुत, करै राव^६ सुखकारि ॥ ३३८ ॥

कर काहू कै होय नहिं, दुखी न काऊ दान ।

आस्रम किते नवीन^७ है, ऊँचे मंदिर वीन^८ ॥ ३३९ ॥

पद्धरी छंद

रणथंभ दुर्ग बहु विकट^९ जानि ।

तिहिं दरा च्यारि मग सुगम मानि ॥

घाटी सु च्यारि अस्सी सु और ।

है गै न चलै अति कठिन ठौर ॥ ३४० ॥

१ नरवल मनु (मन) चीतौड़ सुतंका । २ अगणित । ३ तिहँ ।

४ किन्नै । ५ अप्पन । ६ राज । ७ अनूप । ८ दीन, ईन, अंत्यानुमान ।

९ दुर्ग बहु विधि सु ।

रतनेस नाँम जम है बिख्यात ।

चित्तोड़ दुग पालै सु तात ॥३५२॥

सँग रहै सुभट थट विकट संग^१ ।

को करै तिनहिं तैं रणहिं रंग ॥

तप तेज राव बृषभाँन जेम ।

पर दुख कट्टन विक्रम सु तेम ॥३५३॥

देखंत^२ रूप मनु काँमदेव ।

सुइ काछ बाछ निकलंक भेव ॥

अरु खेत जुरे नहिं देत पिट्टि ।

अरि लखत देखि नहिं परत^३ दिट्टि ॥३५४॥

बहु बाग चहूँ दिसि सघन हेरि ।

गंभीर गहर उपवन सु भेरि ॥

बहु अंब^४ बृत्त फल मुकत भार ।

दाड़िम समूह निबू अपार ॥३५५॥

बहु सेवराज जामुन समूह ।

नारंग रंग महुवा समूह ॥

खिरनी सकेलि नारेल^५ बृंद ।

खीरा कि चिरूँजी मधुर कंद^६ ॥३५६॥

कटहल कदंब बड़हल अनेक ।

महुवा अनंत कहलि विसेक(ष)^७ ॥

तहँ मोलसिरी सोहै^८ गंभीर ।

माघी सकेत सोहंत धीर^९ ॥३५७॥

फुलवारि गुंज अति भ्रमर होत^{१०} ।

१ विकट थट रह सुभट संग । २ पिकलंत । ३ परम । ४ आम्र ।
५ नरियल । ६ कंज । ७ ऊभरि अनंत घोटा सु एक । ८ मधि किते
सरथूँ (सरुं) सोहंत कीर । ९ फुलवारि भौर गुंजार होत ।

प्रफुलित^१ गुलाब चंपा उदोत ॥
 कहूँ^२ रहे केतिकी बृंद फुल्लि ।
 अहि भ्रमर गंध सहि रहे मुल्लि ॥३५८॥
 कहूँ रहे केवरा जुहो जाय ।
 संदुप्प^३ ओर संभो सु आय^४ ॥
 आचीन नरगिस औ असोक^५ ।
 पाटल^६ सचमोलिय बोलि कोक^७ ॥३५९॥
 एला लवंग अंगूर बेलि ।
 माधुज्ज लता माधुरी भेलि ॥
 तरु ताल तमाल रु ताल और ।
 ता मध्य कमल अरु कुमुद भौर ॥३६०॥
 चहुँ ओर सघन पर्वत सुगंध ।
 जलजंत्र छुटै उच्चे सवंध ॥
 पिक मोर हंस चकवा त्रिहंग ।
 सुक चाय(त)क कोकिल रमत संग ॥३६१॥
 चहुँ ओर बाग बारी अनूप ।
 तिहिं मध्य दुर्ग रणधंभ भूप^८ ॥३६२॥
 यह दूत के वचन सुनि दरवार कियौ ।^९

छप्पय छंद

क्या हमीर मगरूर पलक मैं पाय लगाऊँ ।
 खूनी महिमा साह उसे गहि दिलिय लाऊँ ॥

१ फुल्लित । २ बहु । ३ संदूप । ४ सज्जो सु आम । ५ आचीन नग-
 रसा (नरगसा) औ असोक । ६ पाटल । ७ सतवर्ग और भ्रमर
 कुंद, किंसुक सुमालती सेवतिहि मंद । मधुवन वसंत सिंगार हार, मोलिया
 मदनसर फुले-र । ८ मध्य दुर्ग दुर्गां सुभूप । ९ दूत के वचन सुने तब
 पातसाह ने दरवार कियौ ।

जाति राव हम्मीर तोरि गढ़ धूरि मिलाऊँ ।
 इती जो न अब करूँ^१ तौ न पतसाह^२ कहाऊँ ॥
 केतोक राज^३ रणथंभ को इतो कियो अभिमान तिहि ।
 कोपि^४ साह भेजे जबै दसों देस फर्मान जिहि ॥३६३॥
 सुने दूत के बचन साह जिय संका आय्य ।
 चढ़ौ कोपि बिन समुझि वहाँ कैसी बनि जाइय ॥
 हार^५ जीति रव हाथि^६ आप समत जग होई ।
 तातैं मंत्री मित्र मंत्र^७ द्रढ़ किज्जिय^८ सोई ॥
 यह जानि साह दीवाँन किय खाँन बहत्तरि इक^९ हुव ।
 यह हठ हम्मीर को सुन्यौ तब रक्खे सेख सरन्न भुव ॥३६४॥
 आँम खास उमराव सबै पतिसाह बुलाए ।
 राजा राणा राव खाँन सुलतान सु आए ॥
 हठ हम्मीर मुझि करिव सेख सरनै निज रक्ख्यौ ।
 दियौ दूत कौ उव व बचन बहु अनबन भंख्यौ ॥
 सब तंत मंत जानो सु तुम देस काल बुधि इष्ट धुव ।
 जिहि जाहु^{१०} जाहु जस बुद्धि है कहो^{११} निति^{१२} उत्तम सुभुवा^{१३} ॥
 कहैं सकल उमराव ईस तुम सम नहिं कोई ।
 तेज प्रतापसर बुद्धि और दूजो नहिं कोई^{१४} ॥
 फिर फिर जो फरमान राव कौ कहा जु लिखिय ।
 जो उपजै यहि बार सोइ प्रभु आपनु अक्खिय^{१५} ॥
 चढ़िए सिकार गीदड़ तणी तऊ सिंह के बाँधि^{१६} सर ।

१ हरौ । २ मैं साह । ३ राव । ४ कुपि साह पटए, जबै देस देस
 फरमान जिहि । ५ हारजिति । ६ हथ । ७ पूँछि । ८ कीजे । ९ एक ।
 १० जाहि जाहि । ११ कहा । १२ नीति । १३ साहि तुम जानत साई
 (नहिं होई) । १४ करिय प्रभु अप्पन अक्खिय, लिखिए, अखिए
 अंत्यानुप्रास । १५ बधि ।

फिरि लरो मरो^१ संदेह नहिं तंत मंत यह ही सुवर ॥३६६॥
 महरम खाँ उज्जीर साह, सौँ ऐसै भाषै^२ ।
 चहुवाँनन की बात सबै अगली मुख भाषै^३ ॥
 पहले हसन हुसैन सयद^४ चहुवाँन सुपेले^५ ।
 सात बैर प्रथिराज गहे गवरी गहि मेले^६ ॥
 बीसल दे अरु पित्थ ये जड पीर करे अजमेर हनि^७ ।
 महरम खान् इम उच्चरै असो वस चहुवाँन गनि^८ ॥ ३६७ ॥
 गीदर सिंह सिकार, साह^९ एकौ मति जानो ।
 रणतभँवर दिस भला^{१०}, आप मति करो पयानो ॥
 वहाँ राव हम्मीर, और रणधीर अमानो ।
 अरु सामंत अनेक, अधिक तँ अधिक वखानों ॥
 बहु दुग^{११} वक रणथंभ गढ़^{१२}, यह बिचारि जिय लिब्जिए ।
 तुम अलावदी पीर अति, आप मुहिम्म न किब्जिए ॥३६८॥

दोहरा छंद

बहु दुग वक रणथंभ बड़, तुम अलावदी पीर ।
 दुहँ करामाति सम गनो, आप और हम्मीर ॥३६९॥

छप्पय छंद

कालवृत को^{१३} सेख, एक हजरति वनवाचो^{१४} ।
 ताहि मारि तजि रोप, कह। जिय क्रोध बड़ाचो ॥
 लगे प्राण धन दोड, तवै वाजी कोड पावै ।

१ मिलो । २ भक्ष्यै । ३ चहुवाँनन की वत सव्य अगति दुख
 अख्यै । ४ सैद । ५ पिछिय । ६ साह गोरी गहि मिलिय । ७ बीसल
 दे अरु पित्थ बड़ पीर करिय अजमेर हनि । ८ पन । ९ सोर चर रफ न
 जानो । १० भुलि । ११ दुर्ग । १२ बड़ । १३ को । १४ वनवाचो, बड़ाचो
 छत्यानुप्रास ।

तजे खेत जस^१ जाय, बहुरि कछु हाथि न आवै ॥
 खूनी सरन हमीर कै, रह्यौ दीन जानै दोऊ ॥
 किज्जे मुहिम्म नहिं राव पै, या मैं तो सुख है सोऊ ॥३७॥
 मिस्र देस खंधार, खरे^२ गज्जिनि^३ दल आवै ॥
 अरु काबिल खुरसाँन, कोपि पतिसाह बुलाये ॥
 रूम स्याँम कसमीर, और मुलताँन सु सज्जे ॥
 ईराँ तूराँ कटक, बलक आरब धर गज्जे^४ ॥
 सब^५ देस रहंग फिरंग कै, भक्खड़ कै सज्जे सुवल ॥
 अल्लावदीन पतिसाह कै, चढ़े संग टिड्डी सु दल ॥३७॥
 चढ़े हिंद कै देस, प्रथम सोरठ गिरनारी ॥
 दक्षिण^६ पूरव देस, लए दल बहल^७ भारी ॥
 अरु पहार कै भूप, और पच्छिम कै जानो ॥
 दसों दिसा कै बीर, कहा कोउ नाँम बखानो ॥
 न्यारा सै अठतीस^८ ये, चैत्र मास द्वितिया प्रगट ॥
 चढ़े सुसाह अल्लावदी, करि हमीर पर कटक भट ॥३७॥

भुजंगप्रयात छंद

चढ़े साहि कोपे^९ सु बज्जे निसाँन ॥
 चढ़े मीर गंभीर सथ्य^{१०} सुजाँन ॥
 उड़ी रेणु आकास सुज्झै^{११} न भाँन ॥
 धरा मेरु डुल्लै सु भुल्लै दिसाँन ॥३७॥
 सहै सेस भारं न^{१२} पारं न पावै ॥
 डगै कौल दिगज्ज^{१३} अगौ सुधावै ॥

१ सब । २ खड़े । ३ गजनी, गज्जनि । ४ ईरान त्वैर औ बलख
 ठठा (ठठ) भण्णर से गज्जे । ५ सब देस सहैलर फिरंग रूम भगड़ा कै
 सज्जे सुवल । ६ दक्खिन । ७ बल अति । ८ अठसिये । ९ कोप ।
 १० सत्यै । ११ सूझै न नैनं । १२ सम्हारं न पावै । १३ दिगं सु अगौ ।

मनो छाड़ि^१ बेला समुहं उमंडे
 किये^२ है दलं पयदल रथ्य तंडे ॥३७४॥
 चढ़े सत्त लक्खं सु दिंदू सयत्रं ।
 सनौ बीस लक्खं मलेच्छं^३ अयत्रं ॥
 तहाँ डाक^४ एकं सहस्सं दुपंचं ।
 चले बेलदारं लखं च्यारि संचं ॥३७५॥
 चले एक^५ लक्खं सु अगं^६ सु सोलं ।
 अलीखान हिम्मति दोऊ हरोलं ॥
 चले बाणियाँ संग व्यापार भारी ।
 सु तो दोय लक्ख गिणै संग सारी ॥३७६॥
 चली लक्ख च्यार सु सग भिठारी ।
 पकावै सुनानं सनै काँसवारी ॥
 खर^७ गोखरं यों चले दोय लक्खं ।
 फिरै च्यारि लक्खं गसत्ती^८ सु रक्खं ॥३७७॥
 दुआ गीर इक्कं^९ सु लक्ख सु चल्ले ।
 सु तो लंगरं सो सदा खान मिल्ले ॥
 अरव्वी लखं दोइ चल्ले सु संगं ।
 रहे तोपखाने सदा जंग जंग ॥३७८॥
 भरे ऊँट बारूद डेरा सुभारी ।
 सु तो तीन लक्खं सजे संग सारी ॥
 चले सहस पंचं मतंगं सु गज्जं ।
 ममो पावसं मेघमाला सु रज्जं ॥३७९॥
 लसै वैरखं सो मनो विज्व^{१०} भारी ।

१ छंडि । २ कियं, किते । ३ सुमिच्छं । ४ तहाँ पै पढ़ायं । ५ इक्क ।
 ६ अग्रं । ७ गोखरं गोखंगी । ८ गसत्ती । ९ एक्कं । १० बीज ।

बरै दान वर्षा मनो भुम्भि^१ कारी ॥
 लसै उज्ज्वलं दंत बग पंक्ति मानो ।
 इती^२ साह की सेन सज्जी सुजानो ॥३८०॥
 गर्जत निसाँन^३ सु सज्जंत भानो ।
 मनुँ पावसं मेघ गज्जैँ सु मानो^४ ॥
 सवै सेन सज्जी चढ्यौ साहि कोपं ।
 सवै पंच^५ चालीस लक्खं सु ओपं ॥३८१॥
 तहाँ तीस^६ हज्जार निसाँन^७ बज्जैँ ।
 सु तो घोर सोर सुने मेघ लज्जैँ ॥
 सताईस लक्खं महावीर बंके ।
 टरै नाहिँ जंगं भए ताँस हंके ॥३८२॥
 परै^८ जोजनं अट्ट^९ औ दोय फौजं ।
 कटे वंक वन्न हटे नाहिँ रोजं ॥
 चढ़ं उज्ज्वलं वाट थट्टे^{१०} सु चल्ले ।
 मनो सायर^{११} छंडि^{१२} बेला उगल्ले ॥३८३॥
 जले सुक्खियं^{१३} नीर नाना सुथानं ।
 बहैँ औघट घाट डुटंत^{१४} माँनं ॥
 कियौ कूच कूचं^{१५} चले मोर धीरं ।
 परथौ जोर हम्मीर कै देस तीरं ॥३८४॥
 भजे भुम्भियाँ भुम्भि चल्लं अपारं ।
 गए पर्वतं^{१६} वंक मैवास * भारं ॥

१ भूमि । २ भानो, जानो । ३ पाँच । ४ तीन । ५ निसाँन ।
 ६ परी । ७ आठ । ८ थाटे । ९ सायर । १० छँडि । ११ सोखियं ।
 १२ टूटंत । १३ कुच्च कुच्चं । १४ पर्वतं, पर्वतं ।

* मैवास (मेवासा) = किला ।

सवै राव हम्मीर कै देस माहीं ।

भए बीर संधीर जुद्धं समाहीं ॥३८५॥

तिहाँ^१बीचि मलहारणी इक्क^२ गड्डं ।

लरे राव कै रावतं जोर दड्डं ॥

दिना तीन लौं सो कियौ जुद्ध भारी ।

फते^३पातसा की भई वैनकारी^४ ॥३८६॥

चले अग^५ साहं सु सेना हँकारी ।

सुनी राव हम्मीर कुपे^६ सु भारी ॥

किये रक्त नैनं भृकुटी^७ करूरं ।

लख्यौ रावतं जोर उठे जरूरं ॥३८७॥

परी पक्खरं वाजि राजं सु सज्जे^८ ।

बजे नह निस्साँन^९ आकास लज्जे^{१०} ॥

तवै राव हम्मीर कौ सीस नाए ।

बिना आयुसं साह पै वीर धाए ॥३८८॥

जुरे आय जुद्धं न दीजौ बनासं ।

चढ़े लख चालीस औ पाँच तासं ॥

इतै राव हम्मीर कै पंच^{११} सूरं ।

अभयसिंह पम्मार रटोर भूरं ॥३८९॥

हरीसिंह वग्गेल कूरम्म भीरं ।

चहूवाँन सददूल^{१२} अजमत्त सीमं ॥

त्रिभागै करी सेन वागै उठाई ।

मिले वीर धीरं अमोरं हटाई ॥३९०॥

१ तहीं विचि । २ एक । ३ भते । ४ वैनकारी (वनकारी) ।

५ अग्र । ६ कोपे । ७ भृकुटी । ८ साजे । ९ नीसाँन । १० लाजे ।

११ पाँच । १२ सार्दूल ।

दोहरा छंद

पंच^१ सूर हम्मीर के, बीस सहस असवार^२ ।
 उत सब दल पतिसाह को, बज्यौ परस्पर सार ॥३६१॥
 नदी बना सज उप्परै, रत्ति^३ बसिय पतिसाह ।
 प्रातकुचच^४ नहिं करि सके, आय जुटे^५ नरनाह ॥३६२॥

पद्धरी छंद

चढ़ि चले^६ साह हरचल सभीर ।
 तिहिं जुटे राव कूरम सबीर^७ ॥
 बग्वेल हरीसिंह अनिय वंधि ।
 चंदे(दो)ल पयादे भिरिव सधि ॥३९३॥
 बिच गोल साह को जितो सुद्ध ।
 त्रिन सूर राव कै करि^८ न जुद्ध ॥
 यहि भाँति पंच रावत अभंग ।
 पतिसाह सेन सौं जुटे जंग ॥ ३९४॥
 कम्मान स्तवन लगि करि कसीस ।
 मनु प्रगट पथ्य भारथ्य सीस ॥
 सर बरसत पावस मनो नीर ।
 बहु बेधि कवच धर परत धीर ॥३९५॥
 लगि सेल अंग नहिं पार होत ।
 ससि कारि^९ घटा मैं करि उदोत ॥
 किरवाँन बहै करि करिव क्रोध ।
 धर परत सीस धर उठत^{१०} जोध ॥३९६॥

१ पाँच । २ अस्वार । ३ राति बसे । ४ कूँच । ५ जुटिय, जुटिग
 ६ चलिय । ७ तहँ जुटिउ (जुटिग) राव कूरंम वीर । ८ करे
 ९ कोरि । १० उठित, पुठत ।

लगि होत कटारिय अंग पार ।
 प्रासाद उच्च कै खुले द्वार ॥
 बहु खंजर पंजर करत पार^१ ।
 ऊँची जु उठी सु तो रुहिर^२ धार ॥३९७॥
 मनु पर्वत तैँ, गेरु पनार ।
 बहि^३ चली^४ अंग तैँ सोन^५ धार ॥
 बहु घायल घुम्मत बहुत धाव ।
 मनु केसिव^६ किसुक तरु सुहाव ॥३९८॥
 चल परी साह दल मैँ अपार ।
 हा हंत सह^७ भौ दल मँमार ॥३९९॥
 दोहरा छद्

भगिय^८ सेन पतिसाह की, लुटो जु रिद्धि अपार ।
 तव मरहम खाँ साह सौँ, अजं करी^९ तिहिँ वार ॥४००॥
 हजरति देस हमार को, निपट अटपटो जानि ।
 भिल्ल कौल तस्कर सबै, और किरात सुमानि ॥४०१॥
 सजग रहा निसि दौस सब, गाफलि रहो न मूर ।
 हनिय सेन सब अप्पनिय^{१०}, तीस^{११} हजार सपूर ॥४०२॥
 घायल कौ लेखौ नहीं, हथिय^{१२} परे सु बीस ।
 परे वाजि सब ड्यौढ़^{१३} सत, सुनि जिय अचरिज दीस ॥४०३॥
 परे राव कै वीर दस, घायल पंच पचीस ।
 अभय^{१४} सिंह पम्मार कै, भयौ घाव दस सांस ॥४०४॥
 जाय जुहारे राव को, कही चम् की बात ।
 तव हमीर सब तैँ कही, बाहर लरो न तात ॥४०५॥

१ फार । २ रुधिर । ३ बहु । ४ चलिय । ५ रुधिर । ६ के सुव ।
 ७ तब्द । ८ भगी । ९ करी अरज । १० आपनी । ११ तीन ।
 १२ हाथी । १३ ड्योढ़ सौ । १४ अभय साहि पम्मार इक ।

छप्पय छंद

तब सु साह करि कुच्च^१, चले^२ रणथंभहि आए।
 सकल सु संकित हियै^३, मीर उमराव सुभाए।
 जल थल पाधरि सैन ऐन^४ चहुँ ओर सु दिक्खिव।
 चढ़ि अगर इक उच्च^५ राव बहु भाँति न लक्खिव॥
 चहुवाँन राव हड़ हड़^६ हँस्यौ^७ हेरि सैन इम उच्चर्यौ^८।
 पतसाह किधौ सोहा जुगर मानो एक टाँडो पर्यौ^९ ॥४२६॥

दोहरा छंद

फिरि पतिसाह हमीर कौ, लिखि पठए^{१०} फरमाँन।
 अजहूँ^{११} हिंदू समुझ तुव, मिलि तजि सब अभिमाँन॥ ०७॥

छप्पय छंद

मैं मक्के^{१२} को पीर दिली पतिसाह कहाऊँ।
 हिंदू तुरक दुराह^{१३} सबै इक सार चलाऊँ॥
 बीर च्यारि अरु पीर रहैं मुझ पर^{१४} चौरासी।
 महिमा साहि न रक्खि राव मति करै जु हाँसी।^{१५}
 तुम समुझि सोचि^{१६} जिय आपनै^{१७} कहा तोहिं फल ऊपजै।
 परचँड लाय उठै जु सिर इक्क^{१८} सेख कौ नहिं तजै॥४०८॥
 फिर हमीर फरमाँन साहि कौं उलटि पठायौ।
 हजरति छत्री धर्म सुन्यौ नहिं स्तवनन गायौ॥
 तुम मक्के कै पीर सूर सुरलोक कहाऊँ।
 तुम सरभर नहिं हसम साहि पल मैं^{१९} जु नसाऊँ॥

१ कूँच। २ दुग्ग। ३ हीय। ४ ऐन। ५ ऊँच। ६ हर,हर।
 ७ हँसिव। ८ उच्चरिव। ९ परिव। १० भोजिय। ११ अजहूँ। १२ मक्का
 का। १३ दाउ राह। १४ पै। १५ महिमा साहि हमीर राखि मति
 करै जु हाँसी। १६ देखि। १७ आपनै। १८ एक। १९ माँझ।

नहिं तजौं टेक छंड़ूँ^१ न पन यह विचार निहचै^२ धरचौ^३ ।
छिन भंग अंग लालच कहा सुजस खोय जीवन करचौ^४ ॥४०९॥

दोहरा छंद

जैत छाँडि जोगी कहा, सत छँडै^५ रजपूत ।
सेख न सौंपौं साह कौं, जव^६ लग सिर सावूत ॥४१०॥

छप्पय छंद

हजरति नई न करूँ करूँ जैसी^७ चलि आई ।
मुसलमाँन चहुवाँन सदा ऐसी^८ वनि आई ॥
ख्वाजे मीराँ पीर खेत अजमेरि खिसाए ॥*
असो सहस इक लकख बहुरि^९ मक्का न दिखाए^{१०} ॥
सल दे अजमेर गढ़ सो नगरा साकौ कियव ।
न वरिय सुंदरी कँवरि सो साह बहुत लालच दियव ॥४११॥
प्रथीराज वर सात साहि गवरी गहि छंड्यौ ।
कर चूरी पहिराय दंड करि कछुव न मंड्यौ ॥
ता पिच्छै गढ़ दिली साहि गौरी चढ़ि^{११} आयव^{१२} ।
रेण^{१३} कुमार अपार जुद्ध करि सुर पुर धायव^{१४} ॥
बहुवाँन वंस अवतंस जो खग^{१५} त्यागि नाहिंन मुरचौ^{१६} ।

१ त्यागूँ । २ निश्चय । ३ धरिब ४ करिब । ५ छाँड़ै । ६ जौलौं ।
७ ऐसी । ८ तैसे । ९ उलटि । १० खिदाए । ११ चलि । १२ आए ।
१३ रमण । १४ धाए । १५ खाग । १६ मुरचय ।

* असुर मारि अजपाल चहूँ दिशि चक्र चलाए ।

वीसल दे अजमेरि पाय मँडलीक लगाए ॥

वीरम दे जालोर गढ़ सो नगरै साथै कियव ।

नन वरी जीभ सुंदरि कुँवरि साहब दौत... ॥

छंङ्ग^१ नटेक यह बिरद मम सेख रक्खि^२ जंगहिं करचौ^३ ॥४१२॥
 तजै सेस जो भुम्मि मेरु चल्लै^४ धर उपपर ।
 उलटि गंगा बह नीर सूर उगै^५ पच्छिम भर ॥
 धुव चल्लै आकास समद मरजाद सुछंडै ।
 सतीसंग पति कडै बहुरि घर आय^६ सुमंडै ॥
 थिर रह्यौ न यह संसार कोइ सुनो साहि साखी सु धुव^७
 दसकंध धरणि अञ्जुन जिसा स्वप्निहिं^८ सम दिक्खंत^९ सुवा ॥४१३॥

दोहरा छंद

कलि मै अमर जु कोइ^{१०} नहिं^{११}, हसम देखि नहिं भूल ।
 तुम से किते अलावदी, या धरती^{१२} पर धूलि^{१३} ॥४१४॥
 अपने कौ सूर न गिनै, कायर गिनै न और ।
 अपनी कीरति आप^{१४} मुख, यह कहवौ नहिं जोर ॥४१५॥
 लिखे लेख करतार कै, हजरति मेट^{१५} न कोय ।
 को जाणै रणथंभ गढ़, अब यह कैसो^{१६} होय ॥४१६॥

चौपाई छंद

लिखे हमीर साहि सब^{१७} वंचे ।
 करि मन कोप जंग कौ नंचे ॥
 तीन सहस नीसाँन सु बज्जे ।
 धर अंबर मग^{१८} सोर सुगज्जे ॥ ४१७॥
 रणतमँवर चहुँ ओर सु घेरिव ।
 दल न समात पुहमि सब हेरिव ॥

१ छड्गू । २ राखि । ३ मुरौ, करौ अंत्यानुप्रास । ४ चल्छहि
 ५ उगाहि । ६ आपु । ७ सुनो साखि यह साखि धुव । ८ सुपन
 ९ दीखंत । १० को । ११ नहीं । १२ धरनी । १३ धूरि । १४ अप्प
 १५ मौति । १६ साको । १७ सो । १८ मधि ।

किन्न^१ निरोध क्रोध करि बुल्लिव ।

देखो कुबुधि हमीर सु मुल्लिव ॥ ४१८ ॥

जब हमीर हर मंदिर आए ।

बहु विधि पूजि सु वचन सुनाए ॥

धूप दीप धारती उतारी ।

संकर की अस्तुति उच्चारी ॥ ४१९ ॥

नाराच छंद

नमामि ईस संकरं, जटी पिनाकयं हरं ।

सिवं त्रिसूल^२ पाणियं, विभुं प्रभुं सुजाणियं ॥ ४२० ॥

त्रिनैन अग्नि^३ भालयं, गलै^४ सु मुंडमालयं ।

भवानि^५ वाम भागयं, ललाट चंद्र लागयं ॥ ४२१ ॥

धरै^६ सु सीस गंगयं, कपूर गौर अंगयं ।

भुवंग^७ संग फुंकरै, सु नीलकंठ हुंकरै ॥ ४२२ ॥

गणं गणेश सांवुयं, कि वीरभद्र जांवुयं ।

प्रसीद नाथ वेगयं, करो कृपा सु मे जयं ॥ ४२३ ॥

सहाय नाथ किजिए, अभै सुदाँन दिजिए ।

अलावदोन आययं, मलेच्छ^८ संग ल्याययं ॥ ४२४ ॥

सुलकख वीस सातयं, चढ़े सु कुपि^९ गातयं ।

प्रताप तेज आपकै, मिटे कुकर्म पाप कै ॥ ४२५ ॥

सरन्न सेख आययं, करो सहाय पाययं ।

उमा सु नाथ नाथयं, गहो सु मोर हाथयं ।

छुटंत लाज गड्ढयं, सन्नयन्न द्रड्ढय^{१०} ॥ ४२६ ॥

१ कीन । २ त्रिलोक । ३ अग्नि । ४ गरं । ५ भक्त सुखान

भागयं । ६ दरै । ७ भवंग । ८ मलेच्छ यंत्र भातयं । ९ कृपि ।

१० दिड्ढयं ।

दोहरा छंद

सिव स्वरूप उर धारि कै, मुँदि^१ नयन धरि ध्याँन ।
 यह अस्तुति नृप की सुनी, भय प्रसन्न बरदाँन ॥ ४२७ ॥
 कहैं संभु हम्मीर सुनि, कीरति जुग जुग तोर ।
 चौदह वर्ष जु साहि सौं, लरत बिघ्न नहिँ और ॥ ४२८ ॥
 बारै अरु^२ द्वै वरष परि, सुदि अषाढ़ सनि सोइ ।
 एकादशी जु पुष्य कौ, साको पूरन होइ ॥ ४२९ ॥
 यह साको अरु जस अमर, फवै तोहिँ कलि माहिँ ।
 छत्री को जुग जुग धरम, यह समान कछु नाहिँ ॥ ४३० ॥
 हरष सहित^३ हम्मीर तब, ईस चरण दिय सीस ।
 तब मंदिर तैं निकसि कै, करी जुद्ध कौं रीस ॥ ४३१ ॥
 संकर कछौ हमीर सौं, सुनहु राव धुव साखि ।
 सहस सूर तेरे जहाँ, परैं मलेच्छ सु लाख^४ ॥ ४३२ ॥

चौपाई छंद

राव हमीर दिवाँन कराए ।
 मंत्री मित्र^५ वंधु सब आए ॥
 सूर बीर रावत भट^६ वंके ।
 स्वामि धर्म तन मन तिन हंके ॥ ४३३ ॥
 काछ बाछ द्रढ़ बज्र सरीर ।
 माया मोह न लोभ अधीर^७ ॥
 अमृत वचन सबन तैं भक्खे^८ ।
 जाचत आपुन प्राँन^९ न रक्खे^{१०} ॥ ४३४ ॥
 नाना^{११} विरद वंदि विरदावैं ।

१ सुदि । २ बारा सै । ३ सहित, सहित । ४ आखि । ५ मंत्र
 ६ भट । ७ अभीर । ८ भाखे । ९ जीव । १० राखे । ११ नाना ।

लकख लकख^१ कै पटा जु पावै^२ ॥

काको वीर राव रणधीरह ।

करयो जुहार राव हम्मीरह ॥ ४३५ ॥

आयस होय करव मै सोई ।

देखो^३ राव हाथ^४ मम जोई ॥

काकै कन्ह^५ करी जस आगै ।

कनवज कमध्वज सों रँग^६ पागै ॥ ४३६ ॥

कहै हमीर धीर सुनि वानी ।

तुम जु कहो सो मोहि न छानी ॥

अब गढ़ कोट हसम पुर जेते ।

तुम रक्षक^७ हम जानत तेते ॥ ४३७ ॥

दोहरा छंद

मैं पहलै पतिसाह सों, कही बात^८ करि टेक ।

सो अब चौरै^९ साहि सों, करौ जंग अब एक ॥ ४३८ ॥

त्रोटक छंद

चढ़िए करि कोप हमीर मनं ।

करि दिड्ढ सगड्ढ सम्हारि पनं ॥

बहु तोप सुसिद्ध सँवारि^{१०} धरी ।

बुरजैं बुरजैं धर धूम परी ॥ ४३९ ॥

बहु बंगुर कंगुर वीर अरे ।

सब द्वारन द्वारन धीर^{१०} परे ॥

सब ठौरन ठौरन राखि^{११} भरं ।

चढ़िए गजपै चहुवान नरं ॥ ४४० ॥

१ लाख लाख । २ देखहु । ३ हथ । ४ कहूँ । ५ रसि पागै ।

६ रच्छक । ७ वत्त । ८ चौरह । ९ सँवार । १० जीर धरे ।

११ रक्खि ।

बहु वीर हमीर सुसंग चढ़े ।

गजराजन उपपर द्वंद बड़े ॥

करि डंबर अंबर सीस लगे ।

मनु सोवत धीर सबीर जगे^१ ॥४४१॥

बहु चंचल बाजि करत खुरी ।

तिन उपपर पक्खर सोंज परी ॥

नर जान. जवान लसै^२ दल मैं ।

रन मैं उनमत्त लसै^३ बल मैं^४ ॥४४२॥

बहु दुंदुभि बजत^३ घोर घनं ।

निकसे तब राव करत रनं ॥

बहु वारन वारन वीर कड़े ।

गज बाजि सु सिंदन* जान चढ़े ॥४४३॥

लखि साह सनमुख कोप कियं ।

रणथंभ चहूँ दिसि घेर लियं ॥

मिलि राव हमीर सु साहि दलं ।

विफरे बर वीर करंत हलं ॥४४४॥

सर छुटत फुटत पार गजं ।

सु मनो अहि पच्छय^४ मध्य रजं ॥

तरवारि बहै कर पानि बलं ।

धर मध्य धरै^५ धर हक खलं^६ ॥४४५॥

मुख अग^६ बड़े रणधीर लरै ।

तिनसों पतिसाह के वीर अरै ॥

१ गजे । २ नर धीर मनं दरसै^२ बल मैं । ३ बाजत । ४ पन्नय ।
५ धर सीस परै सिरहाक खलं । ६ अग्र ।

*सिंदन=स्यंदन, रथ ।

अजमंत^१ महम्मद इक अली ।
 तिन संग असीसु सहस्स चली ॥४४६॥
 तिहिं द्वंद अमंद बिलंद कियौ ।
 रणधीर महा रण भेलि लियौ ॥
 करि कोप तवै रणधीर मनं ।
 वर वैन कहै पन धारि घनं ॥४४७॥
 महिमंद^२ अली मुख आय जुरयौ ।
 दुहुँ वीर तहाँ तव जुद्ध करयौ ॥
 अजमंत कमौन लई कर मै ।
 रणधीर कै तीर कह्यौ उर मै ॥४४८॥
 रणधीर लु कोपि कै साँगि लई ।
 अजमंत कै फूटि^३ कै^४ पार गई ॥
 परियौ अजमत सु खेत जवै ।
 महमंद अली फिरि आय^५ तवै ॥४४९॥
 रणधीर सु कोपि कै वैन कहै ।
 कर देखि अवै मति भुलि^६ रहै ॥
 किरवाँन सु धीर के अंग दई ।
 कटि टोप कछु सिर माँझ^७ भई ॥४५०॥
 तव कोप कियौ रणधीर मनं ।
 किरवाँन दई महमंद तनं ॥
 परियौ महमंद अमंद चली ।
 तव साहि कि सैन सवै जु हली ॥४५१॥
 लुथि^८ लुथि परै बहु वीर अरै ।
 बहु खंजर पंजर पार करै ॥

१ अजमति । २ महमद । ३ फूटि । ४ रु । ५ आयौ । ६ भुलि ।

७ माँहि । ८ लुथि ।

धर सीस परै करि रीस मनं ।

कर पाँव कटै बहु कीन पनं ॥४५२॥

यहि भाँति भिरे चहुवाँन बली ।

मुरि साह की सेनि सुभगि चली^१ ॥

बलखी जु परे जु हजार असी ।

लखि कालिय अट्ट सु हास हँसी ॥४५३॥

चहुवाँन परे इक जो सहसं ।

सुरलोक सबै बर बीर बसं ॥४५४॥

दोहरा छंद

असी सहस^२ बलखी परे, महमद अजमत खान ।

तहाँ राव रणधीर कै, परे सहस इक ज्वाँन ॥४५५॥

भजी^३ फौज सब^४ साहकी, परे मीर दोइ बीर ।

करे याद पतिसाह तव, गज्जनि गढ़ कै पीर ॥४५६॥

चौपाई छंद

भजिय^५ फौज साह की जबहीं ।

फिरो फिरो बानी कह सबहीं ॥

तहाँ साह करि कोप सु बुल्लिव ।

समर भुग्मि अब छंडि सुचल्लिव ॥४५७॥

सरबसु खाय भोग करि नाना ।

अबै परम प्रिय लागत^६ प्रानां ॥

समर बिमुख तैं जानब जोई ।

हनूँ^७ आप कर तजौं न सोई ॥४५८॥

सुने साह कै कोप^८ सु बैनं ।

फिरिय सैन इम मंत्र सु ऐनं^९ ॥

१ हली । २ हजार । ३ भगी । ४ जब । ५ भागी, भाजी ।

६ लगत । ७ हनौं । ८ कोपि । ९ फिरी सैन इक मत्त सु ऐनं ।

बगतर पक्खर टोप सु सज्जिय ।

जुरे जंग बहु मोर सु गज्जिय ॥४५६॥

दोहरा छंद

बादित^१ खाँ पतिस्याह सों, करी सलाँम सु आय ।

इजरत देखहु^२ हाथ^३ मम, कैसी करूँ^४ बनाय ॥४६०॥

पद्धरी छंद

करि^५ कोप बादित खाँ जुरे जंग ।

मनों प्रलै पावक उठे अंग ॥

गुंजत निसाँन फहरात धुज्ज ।

जुटि जिरह टोप तन नैन सज्ज^६ ॥४६१॥

किए^७ हुक्म साह तन मै रिसाइ ।

किन्हौ सु जंग फिर वीर आइ^८ ॥

छुटंत^९ तोप मनु वज्रपात ।

जल सुकि धरा छुटि गर्भ जात ॥४६२॥

बहु बाँन चलत^{१०} दोउ ओर घोर ।

अररात^{११} अमित मच्यौ महा सोर ॥

भए अंध धुंध सुज्जै न हथ्थ ।

वीर चहुवाँन तहाँ^{१२} करि अकथ्थ ॥४६३॥

रणधीर उतै वाद्यति खाँन ।

वजरंग अंग जुट्टे सुयाँन ॥

हज्जार बीस वादित्य साथ^{१३} ।

१ बादितखाँ । २ पक्खरहु । ३ हाथ । ४ करी । ५ करि कोप
जुरे, जुरिब, जुर्यउ, जुरिग वादित्य जंग । ६ जुटि जिरह जिर तई नैन
सज्ज । ७ किय । ८ सहनाय भरै वज्जे तज्ज । बहु वीर (बहु घोर)
सोर कै करत हह । ९ छुटंत । १० छुटि दुहु । ११ अरगत (ट) अमित
मच्यौ सु सोर । १२ जुज्ज कीनौ । १३ साथ ।

सब जुरे आय रणधीर हाथ^१ ॥४६४॥

बज्जंत सार गज्जंत अब्भ ।

रणधीर सथ्य आये स सब्भ^२ ॥

करि क्रोध जोध बाहंत सार ।

दूटंत^३ अंग फूटंत^४ पार ॥४६५॥

करि खेल सेल दोउ^५ ओर वीर ।

बाहंत वीर किरवाँन धीर ॥

हज्जार बीस बद्यत साह^६ ।

धर परे वीर करि अकथ गाह^७ ॥४६६॥

रणधीर मीर दोउ भिरे आइ ।

वाद्यत गहि गुर्ज तब रोस बाइ ॥

लग्गी सुढाल भू दूटि^८ ताँम ।

फिर^९ दई सीस किरवाँन जाँम ॥४६७॥

लग्गी सु सीस धर परचौ जाय ।

दुइ दुक्क^{१०} होय भुमि^{११} अद्ध काय ॥४६८॥

दोहरा छंद

भयौ सोच जिय साह कै, जीतिय^{१२} जंग हमीर ।

बादित खाँ से रन परे, बीस हजार सु वीर ॥४६९॥

महरम खाँ कर जोरि कै, करै अर्ज तिहिं वार ।

लै कर सेख हमीर अव, किसो(?) मिल्यौ यहिं वार ॥४७०॥

गही तेग तुम सोँ अबै^{१३}, हठ नहिं तजै हमीर ।

सेख देय मिल्लै नहीं, पन सच्चो^{१४} बर वीर ॥४७१॥

१ हथ । २ सब्भ । ३ दूटंत । ४ फूटंत । ५ दुहुँ । ६ साथ सत्य ।

७ गाथ, गत्य । ८ तुटि, फुटि । ९ फिरि धीर दई । १० दूक ।

११ भुमि । १२ जित्यौ, जित्यउ, जीत्यौ । १३ तवै । १४ साँचो ।

छप्पय छंद

कर कुराँन गहि साह सीस साहिब कौ नायौ^१ ।
गढ़ दिस^२ दल चहुँ ओर घेरि रज अंबर छाँयौ ॥
देखि अलावदि साह कहै दल वदल भारी ।
अब हमीर की अदलि^३ आय पहुँचीह सुसारी ॥
महरम्म खाँन इम उच्चरै अदलि हाथ^४ साहिब तनै ।
होनहार^५ हैहै अबै को जानै कैसी वनै ॥४७२॥

दोहरा छंद

हजरति अपने इष्ट पर, पावक जरत पतंग ।
यह हमोर कवहुँ न तजै, मेख टेक रणथंभ^६ ॥४७३॥
साह दसौं दिसि जित्ति कै, अब आए^७ रणथंभ ।
कहै^८ राव रणधीर साँ, जुरौ सूर रण रंग ॥४७४॥
अपन^९ धर्म न छंडिए, कहै बात^{१०} रणधीर ।
निसि वासर अब साह साँ, किजिय जंग हमीर ॥४७५॥

छप्पय छंद

को कायर को सूर द्यौस^{११} विन द्रष्टि^{१२} न आवै ।
विन सूरज की साखि सार छत्री न समावै ॥
वीर गिद्ध^{१३} अरु संभु सकल पलहारी जेते ।
घर पर घर^{१४} न पाँव रैन में दिनचर जेते^{१५} ॥
इम कहै राव रणधीर साँ मैं अधर्म नाहिन^{१६} कहूँ ।
अब अलावदी साह साँ रैन सार कवहुँ न गहूँ ॥४७६॥

१ नाये । २ देखल । ३ अदलि रही चंद रोज सुनारी । ४ हाथ ।
५ का होनहार । ६ गढ़ जंग । ७ आइय । ८ कहै राव हमीर तै
धीर जुड़न रणथंभ । ९ अपनो । १० बात । ११ दिखत । १२ दिख ।
१३ गद्ध । १४ तेते । १५ नहींन ।

दोहरा छंद

घाटी घाटी साह कै, माटी मिलत अमीर ।
 राव जंग दिन में करै, राति लड़े रनधीर ॥४७॥
 तारागढ़ कै पीर कौ, करै याद पतसाह ।
 रणतभँवर की फते^१ दे, कदमूँ आऊँ चाह ॥४७॥

छप्पय छंद

जबहीं मीरा सयद साह की मदत पठाए ।
 सिर उतारि कर लिये राव परि सम्मुख धाए ॥
 जब हमीर की भीर च्यारि सुर सुद्ध सु आए ।
 ॥

गणनाथ संभु दिनकर अवर छेत्रपाल मन रज्जिए^२ ।
 रणथंभ खेत दुहुँ ओर सों वीर पीर दुव सज्जिए ॥४७॥

छंद भुजंगप्रयात

लरै नो सयद^३ रणथंभ^३ देवा ।
 करै क्रोध भारी पिलै हर्ष भेवा ॥
 गरज्जंत^४ घोरंत आतंक भारी ।
 घनै घोर^५ वर्षत वर्षा करारी ॥४८॥
 कभू हल्लवै भुम्भ गज्जंत वीरं ।
 कभू घोर अंधार वर्षत पीरं ॥
 गणनाथ हथ^६ लिये तिक्षि फर्सी ।
 पिनाकी पिनाँकं किये आप दर्सी ॥४८१॥
 धरे मुद्रं हथ^६ भैरव अमानो ।
 इसे देव जुटै सु कट्टे अमानो ॥
 इतैं पीर हजरत कै सथ^७ पिल्ले ।

१ विजय । २ रंजिए । ३ सयदं रणथम्भ । ४ गजंत, गज्जंत ।

५ धाय । ६ हाथ । ७ साथ ।

अबदल्ल एक^१ हुसैनं सुमिल्ले ॥ ४८२ ॥
 रहीमं सयदं सुलत्तानं जक्की ।
 अहमद कानीर सूलं सु मक्की ॥
 इतै वीर जुट्टे सु कट्टे पुराँनं ।
 भयौ जुद्ध भारी सु भूले^२ कुराँनं ॥ ४८३ ॥
 परे खेत नो सैद^३ दट्टे धरन्नी ।
 हँसे संकरं भैरवं की करन्नी ॥
 परे पीर यूँ नौ रसूलं सु अल्ली ।
 परथौ पीर दूजो कुतव्वं सु चल्ली ॥ ४८४ ॥
 परथौ जो हुसैनं करथौ जुज्झ^४ भारी ।
 परे हेरि हिम्मत्ति अल्ली सुधारी ॥
 सयदं सुलत्तानं आयौ जु मक्का ।
 अदल्ली परे और तुक्की सु वंका ॥ ४८५ ॥
 परथौ दूसरो जो रसूलं सु खेतं ।
 तवै बादस्याहू भयौ सो अचेतं ॥
 परे मीर नौ सैद जानंत साहं ।
 लरे अट्ट वीरं हट्टै वैन काहं ॥ ४८६ ॥
 अजंमत्त भारी हमीरं सु जाना ।
 तवै कुच्च किन्नौ दरै छाड़ि फानी ॥
 उल्लट्टे परे जोय किन्नौ दिवाँनं ।
 जुरे खाँन जेते सु तेते अमाँनं ॥ ४८७ ॥
 वजीरं अमीरं सवै खाँन बुल्ले ।
 सवै वात मंत्रं सु संत्री सु खुल्ले ॥ ४८८ ॥
 दोहरा छंद

मरहम खाँ उज्जीर तव, अरज करी सय ग्योनि^५ ।

१ इकं । २ भुल्ले । ३ सयद, सह । ४ जुज्झ । ५ मुक्ति ।

लख बलखी उमराव तो, सदकै भए हरोल ॥४८१॥
अरु बकसी के बचन सुनि, साह कियौ^१ अति सोच ।
निबही राव हमीर की, गिनौ हमैं सब पोच^२ ॥४८०॥
महिमा साह हमीर गढ़, ये तीनों^३ साबूत ।
बाजी रही हमीर की, मैं कायर^४ जु कपूत ॥४८१॥

छप्पय छंद

महरम खाँ कर जोरि साह^५ कौ ऐसै^६ भाख्यौ ।
इक हिकमत तुम करो नीक जानो तो राखो^७ ॥
महल^८ छाड़ि करि फते बहुरि गढ़ सौं जुध^९ किजिय ।
तोरि छाड़ि रणधीर मारि कै पकरि सु लिजिय^{१०} ॥
आतंक संक गढ़ मैं परै मिलै राव हठ छड़ि^{११} कै ।
गहि सेख देय मिलि सुत्तवै करो कुच जब^{१२} उलटि कै ॥४८२॥

चौपाई छंद

कहै साह महरम खाँ सुनियो ।
यह मत खूब किया तुम गुनिथो^{१३} ॥
छाड़ि दरा कौ प्रथम दिली^{१४} जे ।
चंद रोज महँ फतह जु कीजे^{१५} ॥४८३॥

दोहरा छंद

मरहम खाँ पतसाह को, हुकम पाय तिहिं वार ।
सकल सेन तजबीज करि, घेरी छाड़ि हँकार ॥४८४॥
छंद वियक्खरी

कोप पतिसाह गढ़ छाड़ि लगौ ।

१ कियव । २ सोच । ३ तीन्यू, दोऊ । ४ कातर । ५ तवै हजरति
सों भाख्यौ । ६ रक्खौ भक्ख्यौ, रक्ख्यौ अंत्यानुप्रास । ७ पहल
पहलै । ८ जंग कीजे । ९ लीजे । १० छाड़ि । ११ सुनिह, गुनिह
अंत्यानुप्रास । १२ दिलिजिय । १३ किजिय ।

सहस्र^१ सव तीन नीसाँन वगै ॥
 सहस्र^२ दस सात आरव छुटै ।
 गरज गिरि मेरु पाषाण फुटै ॥४९६॥
 उठत गुब्बार महि तोप लज्जौ ।
 गए वन छंडि^३ मृग सिंह भगै ॥
 लख^४ पच्चीस दल ओर फेर्यौ ।
 यह भाँति पतिसाह गढ़ छाड़ि घेर्यौ ॥४९६॥
 कहै पतिसाह नहिं विलम^५ किज्जे ।
 चंद दिन^६ वीचि गढ़ छाड़ि लिज्जे ॥
 कहै रणधीर मन धीर धरिए ।
 आय चहुआण^७ सफजंग^८ करिए ॥४९७॥
 निस्साँन^९ सों सह^{१०} सुंदर सुवज्जै ।
 रोव रणधीर आयुद्ध^{११} सज्जै ॥
 वीर रस^{१२} राग सिंधू स^{१३} वज्जै ।
 सहस्र इकतीस दल संग लिज्जै^{१४} ॥४९८॥
 सहस्र दस सूर कुल तेग^{१५} खेलै^{१६} ।
 अप्प जिय रक्खि परमाल^{१७} पेल्लै^{१८} ॥
 यह^{१९} भाँति रणधीर चौगाँन आए ।
 गरद उड़ि जमी असमाँन छाए ॥४९९॥
 अवदल^{२०} कीरम्म^{२१} पतिसाह दिल्लै^{२२} ।

१ तीन सहस्र नीसाँन दल माहिं वगै । २ दो सहस्र आर्यों तेज
 छुटै । ३ छाड़ि । ४ लाख । ५ विलंब (विलंब) । ६ राज । ७ चौगाँन ।
 ८ सफरजंग । ९ नीसाण सों साज सुर सह गज्जै । १० सह । ११ आयुद्ध ।
 १२ रण । १३ सिंधूल । १४ लज्जै । १५ तत्प । १६ खेलै ।
 १७ परमार । १८ चिल्लै । १९ इस । २० अवदल, अवदल ।
 २१ करीम, करीम । २२ पेलै ।

मीर रणधीर चौगान खिल्ले ॥
 बहै बान किरवान^१ औ चक्र^२ चल्लै ।
 रणधीर कह सूर तुम होहु भल्लै ॥५००॥
 साह सों सूर संमुख जुलिए ।
 हवस के मीर दस सहस परिए ॥
 टुटि^३ सिर मीर धड़ पहुमि^४ लक्खै ।
 पंच सत सूर लड़ि गिद्ध^५ भक्खै ॥५०१॥
 राव रणधीर आपन^६ सिधारे ।
 अबदुल्ल^७ कीरंम खाँ पौहुमि पारे ॥
 साह रणधीर सफजंग^८ जुलिए ।
 साह दल उलटि दो कोस परिए ॥५०२॥
 कहै रणधीर नहि बिलम किजै^९ ।
 बीति चँद रोज गढ़ छाड़ि लिजै^{१०} ॥
 गढ़ कोटहू भाँति^{११} नहिं हथिय^{१२} आवै ।
 यूँ ही^{१३} पतिसाह दल क्यों खिसावै ॥५०३॥

दोहरा छंद

वर्ष पंच^{१४} गढ़ छाड़ि को, नहिं संवत् पतिसाह ।
 द्वादस वर्ष रणथंभ सों, निधरक लरि अव^{१५} साह ॥५०४॥

छप्पय छंद

धनि सु राव रणधीर साह मुख आप सराहै ।
 मुझ दिसि सम्मुख आय कोप करि सार समाहै ॥

१ कैयार । २ चक्र । ३ टूटि । ४ पौहम । ५ गिरध, गिर्ज ।
 ६ आपन । ७ अबदुलकरीम खाँ पौहुमि पारे । ८ सपरजंग । ९ कीजे ।
 १० लीजे । ११ कवहूँ । १२ हाथि । १३ कोपि । १४ पाँच ।
 १५ पति ।

साह वचन इम कहै मीर महरम खाँ सुनिजे^१ ।
 जीति^२ जंग रणधीर धन्य वह राव सुभनिजे ॥
 पतसाह राडि सफजंग^३ की मनै करिय आपन^४ सबै ।
 चहुँ ओर जोर उमराव सब किये मोरचा द्रढ़ अवै^५ ॥५०५॥
 जबै^६ राव रणधीर कहै हम्मीर सुणिजे^७ ।
 सबै^८ हिंद को साथ बोलि^९ रणथंभ सु लिज्जे^{१०} ॥
 लिखि फर्माँ नहुँ^{११} राव वंस छत्तीस बुलाए ।
 जुरे जंग चौगाँन उमंग दल बढ़ल छाए ॥
 कर जोरि सबै हाजिर भए^{१२} राव वचन या^{१३} विधि कहै ।
 मैं गद्दी तेग पतिसाह^{१४} सों घरि जाहु जौन जीवौ चहै ॥५०६॥
 कह काकौ रणधीर राव सुन वचन हमारे ।
 अवै छंडि^{१५} कित जाहिं^{१६} खाय करि निमक तिहारे ॥
 अलीदीन सों जुद्ध छंडि गढ़ चैरै मंडों ।
 जिती साहि की सेन मारि खग खंड विहंडों ॥
 चाहूँ^{१७} सुनीर या वंस को अकथ गथ^{१८} ऐसी करूँ ।
 रवि लोक भेदि भेदूँ सुभट अण्ण^{१९} सीस हर हिय धरूँ ॥५०७॥

दोहरा छंद

कहै राव हम्मीर सों, मंत्रि एक^{२०} रणधीर ।
 जमीति गढ़ चित्तौर की, अजहुँ^{२१} न आइय^{२२} वीर ॥५०८॥
 लिखि फर्माँ न हमीर तब, पठए गढ़ चित्तौर ।
 वंचि^{२३} खाँन बलहन^{२४} कुँमर, हर्ष^{२५} कीन नहिं थोर ॥५०९॥

१ सुनिए । २ जिति । ३ सफरजंग । ४ अप्पन । ५ सबै । ६ जब ।
 ७ सुणिजे । ८ सबै । ९ राण । १० लीजे । ११ पुरमाना ।
 १२ अहै । १३ इम । १४ हजरति । १५ आडि । १६ जायँ ।
 १७ चाहूँ । १८ गाथ । १९ आपा । २० इफ । २१ अजों । २२ आय ।
 २३ वॉचि । २४ बालहन । २५ हर्ष न किन्त्यड ।

कहे तदि^१ बैन हँसे जु कुमार ॥
 धरो तुम सीस हमारे जु^२ मोर ।
 लरै^३ सिर सेहर बाँधि^४ सजोर^५ ॥५२१॥
 बँध्यौ तब मोर कुमारन सीस ।
 दई बहु भाँतिन आस असीस ॥
 कियौ बहु हर्ष कुमार अपार ।
 गए हर मंदिर सो तिहिं बार ॥५२२॥
 गनेसुर संकर पूजि^६ सुभाय^७ ।
 करे बहु ध्यान गहे जब^८ पाय^९ ॥
 चढे बरबीर बढ्यौ हिय चाव ।
 बजे बहु बाजि^{१०} निसाँनन घाव^{१०} ॥५२३॥
 गजे असमाँन धरा हुब भाय^{११} ।
 गजे^{१२} घनघोर घटा मनु छाय^{१३} ॥
 तुरंग अनेक सुफेरत सूर ।
 बनी तिन उपपर पक्खर पूर ॥५२४॥
 भलक्कत नूर चमक्कत सेल ।
 चढे मुख ओप^{१४} बढे मुख मेल ॥
 उढे^{१५} रज अंबर सुज्झ न भाँन ।
 हँसे हर देखत^{१६} छुट्टिब ध्यान ॥५२५॥
 चली संग अच्छरि जुगनि ताँम ।
 मिली बहु पंखनि^{१७} गिद्धनि जाँम ॥
 मिले बहु भूचर खेचर हूर ।
 चले पल चारिय भूत सुभूर ॥५२६॥

१ तव । २ सु । ३ बाँधि । ४ मोर । ५ पूजि । ६ सुभाइ । ७ तब ।
 ८ पाइ । ९ बादि । १० हाव । ११ रज । १२ उढी । १३ दिक्खत, पि । १४ नि ।
 १५ नूर । १६ उढी । १७ दिक्खत, पि । १८ नि ।

करे सु जुहार हमीरहिं ध्याय^१ ।

करो यह बात^२ परस्सि^३ सुपाय ॥

मिले भव आनि^४ सुनो चहुवाँन ।

करै कल रीति तजै नहिं बाँन ॥५२७॥

तजो^५ धन धाँम रु लोभ सु^६ मोह ।

धरो^७ मनु टेक सरन्न सुजोह ॥

इती कहि सीस नवाय हमीर ।

कियौ रणथंभहिं वंदन^८ धीर ॥५२८॥

चले सन्मुख उभै कुमरेस ।

सजे चतुरंग तनय करि रेस ॥

जहाँ पतिसाह अलावदि और ।

चली^९ वर वीरति^{१०} बाँधि^{११} सुमौर ॥५२९॥

दोहरा छंद

करि असुवारी कुमर दोउ, उतरे पौलि सु छाण ।

डेरा करे उछाहजुत, वजि नोवति नीसाण^{१२} ॥५३०॥

सुणि नोवति के नाद^{१३} तब, बहु उछाह गढ़ु जाँन ।

तब अलावदी हसम दिसि, चाहत भयौ निधाँ(दा)न ॥५३१॥

बोलि खाँन सुलताँन तब^{१४}, मसलति करी जु^{१५} साहि ।

गढ़ मै कहा उछाह अति, कहा (कौन) सवय यह आहि ॥५३२॥

हैं यह राव हमीर के, लघु भय्या^{१६} के पूत ।

लरन काज^{१७} इन सेहरो, सिर बाँध्यौ^{१८} मजवूत ॥५३३॥

भइय संक पतिसाह^{१९} उर, कीनौ^{२०} बहुत विचार ।

१ करे जहाँ राव हमीरहिं ध्याम (ध्याम) । २ बात । ३ पस्सि ।

४ मिलै भव आन । ५ तजै । ६ रु । ७ धरै । ८ चंदन । ९ चले,

चढ़े । १० वीरसु । ११ बाँधि । १२ अग्रनाण । १३ नद । १४ नद । १५

सु । १६ भ्राता । १७ कज । १८ बाँध्यौ । १९ अति । २० किली ।

जौ न सिंह के मुख चढ़ै, सो भिल्लै इन सार ॥१३४॥

चौपाई छंद

कहै वजीर साह सुनि वत्तं ।

मीर अरबिय^१ जानि सु तत्तं ॥

मर्कट बदन^२ सूकर सम^३ कानं ।

द्रग मंजार बेसू खल जानं^४ ॥१३५॥

तुम^५ सामंत प्रथिवराज सु अगै ।

गढ़ गजनि आए^६ गहि खगै ॥

तुमहिं दिली के तख्त बसाए^७ ।

गौरीसा कै भए सहाए ॥१३६॥

वै^८ दोउ कुमर पकरि अब लावै ।

सन्मुख होइ तो^९ मारि गिरावै^{१०} ॥

सुनि वजीर के वचन सुहाए ।

मीर जमालखाँन बुलवाए^{११} ॥१३७॥

कहै साह सुनि मीर जमालं ।

है यह काम तुम्हारे हालं ॥

आगै^{१२} तुम गहियो प्रथिराजं ।

त्यो^{१३} तुम गहो कुँमर दोउ आजं ॥१३८॥

छप्पय छंद

सुणि जमाल खॉ मीर हथ^{१४} धरि मुच्छ सँवारिय^{१५} ।

पाव परसि कर जोरि कवन बड़ काज^{१६} निहारिय^{१७} ॥

- १ आरवी । २ मुख । ३ सुकर इव । ४ द्रगमजार वृष (कू)
खल जानं (जानहु) । ५ तिहिं सामंत । ६ गजनी लाये । ७ बैसाये,
बठाये । ८ वैदुव कुँमर पकरि गहि ल्याऊँ । ९ तोयसो । १० गिराऊँ ।
११ बुलवाए । १२ अगै । १३ तिम । १४ हाथ । १५ बकारिय ।
१६ कज । १७ निकारिय ।

जौ आयुस अनुसरों सकल हिंदुव गहि लाऊँ ।
सम्मुख गहैं^१ जुसार मागि तिहिं धूरि मिलाऊँ ॥
इस^२ कहि सलाम कीनी^३ तुरत सजि^४ सथ्य सब^५ अप्पबल ।
सजि कवच टोप कर खगग गहि उमै ओर किन्निय सुहल^६ ॥५३६॥

भुजंगप्रयात छंद

इतैं कुमर^७ चत्रंग^८ कै जंग जुट्टे ।
उते^९ मीर आरव्व कै वीर छुट्टे ॥
दुहूँ ओर घोरं निसाँनं सु वज्जं ।
मनों पावसं मेघ घोरं सु गज्जं ॥५४०॥
दुहूँ ओर खंडं प्रचंडं सुभारी ।
छुटे नाल गोला वँदूकं सुभारी ॥
भयौ सोर घोरं धुँवा घोर घोरं ।
गई सुद्धि सुझै नहीं^{१०} नैन ओरं ॥५४१॥
करै^{११} सेल खेलं महावीर वंके ।
फुटै अंग अंगं करै दोय हंके ॥
वहै तेग अंगं करै दुक्क^{१२} दोई^{१३} ।
हँसी कालिका देखि^{१४} कौतुक सोई^{१५} ॥५४२॥
वहै^{१६} जम्म दंडं करै^{१७} वाहु जोरं ।
कटै^{१८} अंत अंतं^{१९} कहुँ सीस तोरं ॥
कहुँ हथ्य मथ्यं परे वीर वंके^{२०} ।
उठै रुंड मुंडं करै^{२१} जोर हंके^{२२} ॥५४३॥

१ गहूँ । २ यह । ३ किन्नी । ४ सजे । ५ सह । ६ वजे तुवीर
सिंदुर, (सिंधुर) वदन उमै ओर किन्निय (कीनी, कीन्ही) डुलह ।
७ कौर । ८ चतुरंग । ९ मही । १० टूक । ११ दोऊ । १२ दिक्क,
पिक्क । १३ तोऊ । १४ चहैं । १५ गहैं । १६ अंतैं । १७ चक्के ।
१८ हक्के ।

उतैँ मीर जम्मील ध्यायौ हँकारं ।

इतैँ खान धायौ भिरयौ इक्क^१ वारं ॥

उतैँ मीर तीरं चलायौ हँकारी ।

लग्यौ बाजि कै सो भयौ वारिपारो ॥५४४॥

परयौ खान को बाजि फुट्यौ^२ सु अंगं ।

चढ़े और बाजी करयौ फेरि जंगं ॥

दई खान जम्मील^३ कै अंग बच्छा ।

परयौ भुम्मी मीरं सुतो आय मुच्छा ॥५४५॥

दोउ सैन देखैँ भिरे वीर दोई ।

भए लथथ वध्थं कुमारं सु सोई ॥

परयौ जोर भारी कुमारं सु जान्यौ ।

तवै राव हम्मीर उप्पर सुठान्यौ ॥५४६॥

लियौ बोलि संखोदरं सूर सोऊ^४ ।

करो ऊपरं^५ जाय कुम्मार दोऊ^६ ॥

महावीर^७ अज्जान बालगु (बालक)सूरं ।

महायुद्ध^८ जानैँ इतो बै करुरं ॥५४७॥

चले सूर संखोदरं खेत आए ।

उतैँ आरबीसेन^९ द्वै^{१०} लख धाए ॥

उडैँ बाँन गोला गजं बाजि फुट्यैँ^{११} ।

वहैँ बाँन कम्मान ज्यौँ मेघ बुट्यैँ ॥५४८॥

धरैँ^{१२} आयुधं^{१३} वीर सों वीर बुल्लैँ ।

परैँ सीस भूमैँ^{१४} किती^{१५} सीस भुल्लैँ ॥

१ एक । २ फूट्यौ । ३ जम्माल । ४ सोई । ५ उप्परं । ६ सोई ।

७ महावीर अज्जान बाहू लघु सुसूरं । ८ कहा । ९ सेख । १० दोउ,

है (अश्व) । ११ फूट्यैँ । १२ भरैँ । १३ आवच । १४ भुम्मी ।

१५ किती धूम भुल्लैँ ।

कहै खान कुम्मार वैन हँकारी ।
 सुनो सर्व सध्यं करो जुद्ध भारी ॥५४९॥
 रहै नाम लोकं महा मुक्ति मिल्लै ।
 रहै नाहिं कोई सदा आय^१ मिल्लै ॥
 चलाए गज कोपि^२ कुम्मार सोई ।
 उतै आरबी मीर जम्माल^३ होई ॥५५०॥
 तवै वीर बालनसी कोप किनौ ।
 महा^४ तेग जम्माल कै मध्य (सीस) दिनौ ॥
 कट्यौ टोप ओपं लगी जाय मध्यं ।
 तवै मीर बालन भय लुध्य वध्यं ॥५५१॥
 कटार^५ कुमार^६ चलायौ^७ सु भारी^८ ।
 परचौ मीर जम्मील भू मै^९ सु थारो ॥
 सबै सध्य जम्माल की कोपि^{१०} धायौ ।
 तहाँ बालनं मारि धरनी गिरायौ^{११} ॥५५२॥
 तवै खान कुम्मार धायौ^{१२} रिसाई ।
 घनी सेन आरब्ब धरनी मिलाई^{१३} ॥
 तवै वीर संखोदर^{१४} जंग^{१५} कीनौ ।
 किते आरबी खेत पारचौ नवीनौ ॥५५३॥
 किते सेल खेलं करै वार पारं ।
 भभक्कै^{१६} घटै^{१७} घाव छुटै पनारं ॥
 वहाँ तेग वेगं परे^{१८} सीस भारी ।
 उडै^{१९} घोर रुंहं परै^{२०} मुंड कारी ॥५५४॥

१ आप । २ कुपि । ३ जम्मीर । ४ तवै तेग (खग) जम्मील
 कै अंग दीनौ । ५ लगायौ । ६ भुम्भिः । ७ धारी । ८ कुपि,
 जम्मील को देखि । ९ मिलायौ । १० धाये । ११ गिराई । १२ जुद्ध ।
 १३ परी ।

परे दोय कुम्मार किन्नी^१ अकथं ।

वरी अछरी सूर लोकं सु मथं ॥

परे मीर आरव कै पोन लखं ।

तहाँ हिंद की भीर सौरा सुभखं^२ ॥५५॥

परे दो कुमार महावीर वंके ।

परे एक^३ संखोदरं कीन^४ हंके ॥

तहाँ आठ^५ हजार चहुवाँन जाँन^६ ।

परे तीन हजार कमवज्ज^७ माँन ॥५६॥

पँमारं परे पाँच^८ हजार सोई ।

परे वीर सोला सहसं सुजोई ॥

परे स्वामि कै कज्ज^९ कुम्मार दोई ।

सुनी राव हम्मीर जीते सु सोई ॥

भजे आरवी त्यों वचे^{१०} जंग तेयं ।

कहै साह देखो सु हिंदू अजेयं ॥५७॥

दोहरा छंद

परे सहस सत्तरि तहाँ, मीर अरविचय^{११} संग ।

हय गय पाँच हजार परि, सत जमाल से अंग^{१२} ॥५८॥

छप्पय छंद

तब सु राव रणधीर साहि पै^{१३} तेग समाही ।

१ कीनी । २ सौरा सुसत्यं । ३ इक । ४ किन्न । ५ अट्ट ।
६ ज्वाँन । ७ राठ्यौर, रठौर । ८ पंच । ९ काँम । १० रहे । ११ आरवी ।

१२ तहाँ परे सोरह सहस दुहूँ कुँवर कै सत्य ।

वरी इते तहँ अछरा (अच्छरी) धरे हार हर मथ ।

पाँच वरस गढ़ छाड़ि कै लरे राव रणधीर ।

तब अलावदी कोपि कै कहे वचनं तजि नीर ।

१३ साहि सों ।

समो^१ सु पहेँच्यौ आय सु तो मिट्टै नहिं काही ॥
 चढ़े खेत रणधीर साहि दोनू^२ बतराए ।
 तजै न हठ हम्मीर कहा जो तुम सत^३ आए ॥
 रणधीर राव इम उच्चरै समुझि साहि चित लिजिए ।
 गढ़ रणथंभ हमीर को हजरति हठ न किजिए ॥५४६॥
 कहै साहि रणधीर राव कौ किन समझावो ।
 करो राज रणथंभ सेख^४ कौ कदमों लावो ॥
 होनहार सो भई मिटे मेटी न मिटाई ।
 घटै हटै हठ राव तबै हमारी पतिसाई ॥
 नहिं तजै^५ राव हठ मैं तजौ कौन^६ साह मो सौं कहै ।
 यह प्रगट वत्त^७ संसार^८ महिं भिरै दोय एकै^९ रहै ॥५६०॥
 कहै राव पतिसाह सुणो रणधीर अमानो ।
 इतो राज तुम करो जितो हम सौं नहिं छानो ॥
 ये^{१०} गढ़ च्यारि सु धीर हुकुम किसकै तुम पाए ।
 कवहुँक^{११} फिरे रकेव सीस कवहुँ नहिं^{१२} नाए ॥
 गिरि सूरज पलटै पहुँचि कोटि (रि) वचन कह कोय^{१३} ।
 सेख छाड़ि उलटौ फिरै यह कवहुँ नहिं होय^{१४} ॥५६१॥

दोहरा छंद

चढ़े साहि दल विपुल जब, छेकिव^{१५} गढ़ रणधीर ।
 तब चहुवाँन रिसाय कै, संमुख जुड़े^{१६} सु वीर ॥५६२॥

१ संमत । २ दोउ । ३ बतराए । ४ सेख गहि कदमु लावो ।
 ५ नन तजै । ६ कै सहाय मोसों (हमसन) । ७ बात । ८ सारी नही ।
 ९ एकै । १० यह । ११ कवहुँन । १२ ननवाए । १३ कोऊ कहो ।
 १४ सेख छंडि उलटौ फिरौ तौ मोहिं साहि जग को कहो । १५ छिकिव ।
 १६ जुटिग, जुटिय ।

छंद त्रोटक

रणधीर चढ़े करि कोप मनं ।
 सब सामँत सूर सजे अपनं ॥
 गजराजन उपर डंबरयं ।
 उछले^१ लगि वीर सु अंबरयं ॥२६३॥
 बहु चंचल बाजि सु बग^२ लियं ।
 किय अग^३ सु पैदल लाग कियं ॥
 गढ़ तै^४ बहु भाँति^४ सु तोप चली ।
 पतिसाह^५ समेत सु कोप चली ॥२६४॥
 रणधीर सु बंधन^६ दुग^७ कियं ।
 करि मंगल विप्रन दान, दियं ॥
 रवि कौ परणाम सु कीन^८ तबै ।
 कर जोरि सु आयसु माँगि^९ जबै ॥२६५॥
 अरु राव हम्मीर जुहार कियं ।
 हर्षे^{१०} चहुवाँन सु मोद हिय^{११} ॥
 बहु दुंदभि ढोल सुभेरि बजे ।
 कसि आयुध सायुध वीर सजे ॥२६६॥
 हलका करि वीर बढ़ै दल पै^{१२} ।
 मनु राघव कोपि कियौ खल पै^{१३} ॥
 उत साहि हुकम्म कियौ रिस मै^{१४} ।
 सब सेन जु आय जुरयौ छिन मै^{१५} ॥२६७॥
 बिफरे सब वीर सुधीर मनं ।
 सब स्वामि सु धर्म सु कीन^{१५} पनं ॥

१ उससे । २ बाग । ३ अग्र । ४ भाँतिन । ५ पतिसाहि सुसैन सुकै
 हली । ६ बंदन । ७ दुर्ग । ८ किय । ९ माँगि । १० बरखे । ११ दिव,
 जियं । १२ मै । १३ पल मै । १४ जुझ्यौ निस मै । १५ किय ।

दुहुँ ओर सु तोप सु कोप^१ छुटे ।

गढ़ कोट न रूधत^२ पार फुटे ॥५६॥

बरषै धर आगि^३ सु धूम उठा ।

भर अंबर भुम्भि कराल बुठी ।।

बहु गोलन गोलन गोल परे ।

गजराजन सौँ गजराज जुरे^४ ॥५६९॥

हय सौँ हय पयदल पयदल सौँ ।

जुरे^५ बहु जोध महाबल सौँ ॥

बहु^६ बाँन दुहुँ दल माँझ परै ।

धर सीस कहूँ कर पाँव भरै ॥५७०॥

बहु सोर अंधार सु घोर भयौ ।

निसि वासर काहु न जानि^७ लयौ ॥

कर कुंडिय^८ वीर कमान कसै^९ ।

गज वाजिन फुटत पार लसै^{१०} ॥५७१॥

बरषै मनु पावस बुंद अयं ।

बहु फुटत पक्खर^{११} कंगलयं ॥

तहँ लागत^{१२} सेल सु पार हियं ।

मनु ओन पनारन तै^{१३} बहियं ॥५७२॥

लगि तेग करै^{१४} दुव दुक्क^{१५} तनं ।

जिमि^{१६} सीस परै^{१७} तरवूज [मनं ॥

तहँ साह सु सेन मुरकि चली ।

बहुवाँन तवै करि कोप बली ॥५७३॥

मुरकी पतसाह तनी जु अनी ।

१ कोपि । २ रुधत । ३ अग्नि । ४ भिरे । ५ बुरिये, बुटिये ।

६ चहुवाँन । ७ शान लयौ । ८ कुंडल, कुंडलि । ९ पाखर । १० लगत ।

११ दूक । १२ जिन, जिहिं ।

छप्पय छंद

इते मीर रण परे साहि षट मास सम्हारे ।

तवै दूत इक आय साहि सौँ बचन उचारे ॥

जिते देव हिंदवान् डिगत को धीर बँधावै ।

जिनकौ पूजन करै राव निस दिन मन लावै ॥

बर दियव राव हम्मीर कौँ आपन मुख संकर सरिस ।

टूटै न गढ्ढ रणथम्भ सुनि अभै किये चौदह बरिस ॥५८॥

दोहरा छंद

दल लख सत्ताइस तहाँ, धर(न)नि समावत मीर ।

सूखत^१ सर सरिता विमल, कूप बावरी नीर ॥५८॥

तिथि नौमी आसोज सुदि, कर गहि तेग रिसाइ ।

सुरमंदिर करि कोप सब, चढ्ढि^२ अलावदि साइ ॥५९॥

हाथ जोरि गन्नेस कूँ, कहै राव हम्मीर ।

करो मदति चाहत जवन, अलादीन दलभीर ॥५९॥

चौपाई छंद

सुनत^३ बचन हमीर कै सोई ।कोपे^४ जुद्ध देव कौँ जोई ॥

जब संकर काली हरपानी ।

निज^५ समाज बोले मृदु बानी ॥ ५९१ ॥

चोंसठि जोगनि भैरव नच्चै ।

कर धरि चक्र त्रिसूल सु रच्चै ॥

बाजे^६ डिमरु बीर चढि^७ आए ।

तवै साहि सौँ जंग रचाए ॥ ५९२ ॥

१ सुकत । २ चढ्यव । ३ सुन तव वक्त राव की सोई । ४ कुपिय
देव जुद्ध कौँ जोई । ५ निज मुख सुबुल्लिय मृदु बानी । ६ वजिय,
वजिवं । ७ जुरि ।

चल्लै चक्र त्रिसूल सु नेजा ।
 सक्ति पास धनु बाँन धरेजा ॥
 हल मूसल अंकुस मुद्गर वर ।
 परिघ सेल लै धाए परिकर ॥ ५६३ ॥
 कीनौ जुद्ध वीर सब सज्जे ।
 संकर सरस कतूहल^१ सज्जे ॥
 सबै साहि की सैन सुभाई ।
 सबै परस्पर करै^२ लराई ॥ ५६४ ॥
 बजि बाजंत्र अनेक स वीर^३ ।
 डैरव संख भेरि पट हीर^४ ॥
 मार मार चहुँ दिस सुनि वानी ।
 कटे लाख^५ आल्हन पुर जाती ॥ ५६५ ॥

छप्पय छंद

तब सब देव गणेश विघ्न बड़ दल में किन्नव ।
 कितौ म्लेच्छ को संग सख अप आपसु^३ किन्नव ॥
 उठे सकल ललकारि कीन्ह घमसाँन^४ सुभारिय ।
 रुंड सुंड परि दंड सेन दो लक्ख सँघारिय ॥
 देखत नयन पतसाह तब अति अद्भुत कौतुक भयड ।
 हिम्मत बहादुर अली पर उभै लक्ख सेनह हयड ॥ ५६६ ॥
 यह चरित्र लखि साहि कूँच^५ आल्हनपुर^६ तँ करि ।
 तब फिर पलटे आय घेरि रणथम्भ सरिस भरि ॥
 करि देवन से दोष कहो कौने सुख पाए ।
 आगे^७ लख दल किते मारि हरि असुर खिपाए ।

१ कतूहल । २ लक्ख आल्हन । ३ आपस में । ४ घमसाण ।
 ५ कूँच । ६ अहल्यापुर । ७ अगै ।

अब लरै मनुस मानुसन सौँ देव दैत्य आगे^१ किते।
 यह जानि साहि सिर नाय करि आय^२ किए^३ डेरा उते ॥५६॥

दोहरा छंद

हठ^४ हमीर छाड़ै नहीं, हजरति तजै^५ न टेक।
 सात मीर पतसाह कै, गए बिसरि करि तेक ॥५६॥
 महरम खाँ तब इम कही, अब पिछतावति साहि।
 हम वरजत रणथम्भ गढ़, चढ़ि आए तुम चाहि^६ ॥५७॥
 हजरति हिमति न छाड़िये, धरिये मन मैं धीर।
 गढ़ नरगह चहुँ दिसि करो, कब लग लरै हमीर ॥६०॥

पद्धरी छंद

महरम्म आपनो^७ तजि सुसाहि।
 ब्याए सुदेव हिंदवान जाहि ॥
 बहु बोलि विप्र पूजा कराहि।
 करि धूप दीप आरति बनाहि^८ ॥६०॥
 पद परसे दरसे सकल देव।
 नैवेद्य पुज्य नाना सु भेव ॥
 कर जोरि साहि वंदन सुकीन^९।
 यह भाँति गवन डेरा सु लीन^{१०} ॥६०॥
 करि आल्हण^{११} पुर तैं कूँच ध्याय।
 रण कै पहार डेरा कराय ॥
 गढ़ की निगाह कीनी^{१२} सु माहि।
 आसंग नाहि कीनी^{१३} सताहि ॥६०॥
 करि मंत्र पलची दिय पठाय।

१ अगौ। २ आनि। ३ किन्न, कियउ, किते। ४ हठ हमीर न
 छंडही। ५ तजी। ६ साहि। ७ अप्पनो। ८ कराय, बनाय अंत्या-
 नुप्रास। ९ किन्न। १० दिन्न। ११ अल्लण। १२ किनी। १३ किनी।

तुम कौ सुकहत समुभा^१ राय ॥
 दै सेख छाड़ि^२ हठ मिलि सुराव ।

परसो सुआय पतसाह पाँव ॥६०४॥
 इम सुनत राव प्रजरयौ सु अंग ।

व्रत तरै केमि छत्री अभंग ॥
 उव कहा कहूँ दूतै सुजानि ।
 नन तरै वैन छत्री सुवानि ॥६०५॥
 नहिं देहु सेख घन^३ करै केमि ।

पसु पंछी जे तजि सरण जेमि ॥
 रणधीर कुँवर दोउ अति उदार ।
 वालणसी तीजो खान सार ॥६०६॥
 ते परे खेत रावत अभंग ।

अव कोन मिलि^४ राख्यौ प्रसंग ॥
 तव दूत द्रव्य लै जाहु ओर ।
 कहूँ^५ रही वात^६ फरमाँन तोर ॥६०७॥
 मति आव फेरि भेजे सुसाह ।

अव बिना जुद्ध नहिं उचित ताहिं ॥
 लै चलयौ दूत ये खवरि ऐन ।
 जा कहे साहि सों सकल वैन ॥६०८॥
 सुनि वचन वाँचि फरमाँन साइ ।

कहि साहि राव समुगें न कोइ ॥
 उज्जीर देखि तजवीज कान^७ ।
 रण को पहार अपनाय लीन^८ ॥६०९॥
 चढढाय तोप तिहि पर प्रचंड ।

१ समुभाव । २ छड़ि । ३ प्रसंग । ४ मिलि, मिल, भेज ।
 ५ कहा । ६ वक्त । ७ विज । ८ लिज ।

कीनी तयार गढ़ कौ अखंड ॥
 पतसाह कहै महरम सुबत्त ।
 तुम सुनो एक हम करी^१ चित्त ॥६१०॥
 हम्मीर राव की तोप देखि ।
 दगो सु आपनी तोप लेखि ॥
 यह तोप फुटे गढ़ फटे होय ।
 संदेह कौन या मैं न सोय ॥६११॥
 गोलम्मदाज तब करि सलाम ।
 दागी^२ सुतोप लखि ताव ताम ॥
 लग्यौ सुतोप कै गोल जाय ।
 नुकसान भयौ तिहिं कछुक जाय^३ ॥६१२॥
 यह सुनी स्रवण हम्मीर राय^४ ।
 ततकाल तोप पै गयौ धाय ॥
 देखी सुतोप साबूत जानि ।
 तब कह्यौ राव तुम सुनो कानि ॥६१३॥
 पतसाह तोप खंडै सुकोय ।
 हौं करौं बड़ो ताकौ सुसोय^५ ॥
 गोलम्मदाज कीनौ^६ जुहार ।
 पतसाह तोप फूटी^७ सुपार ॥६१४॥
 तब कही साह महरम सुदेखि ।
 गढ़ बिषम वीर छंडै न टेक^८ ॥
 अब कगो क्यौं न तजबीज और ।
 किहि भाँति हाथि आवै सुजोर ॥६१५॥
 फर जोर कही महरम्म खान ।

१ - १ घरी । २ दगगी । ३ ताय । ४ राव, धाव अंत्यानुप्रास ।
 ५ सजोय । ६ विन्यड । ७ फूटी । ८ पेखि । ९ करै कौन ।

पुल बाँधि^१ तोरि गढ़ करो आँन ॥
 तब महरम खाँ तजबीज कीन ।
 इक राह बाँधि गढ़ को जु लीन ॥६१६॥
 पुल^२ बाँधि कीन गढ़ की जु राह ।
 सुनि राव चित्त चिंता सु आह ॥
 नहिं रह्यौ मरम^३ गढ़ को सकोइ ।
 बहु फिकर राव कीनौ^४ सु जोइ ॥६१७॥
 तिहिं रैन पदम सागर सुआय(इ) ।
 दीनौ सुसुज्ज हम्मीर धाय(इ) ॥
 नहिं करो कोन चिंता हमीर ।
 सब नदी समुद्रन कौ सुसीर ॥६१८॥
 तुम रहो अभै गढ़ अभै^५ आय ।
 इक छिन्न माहिं पुल द्यौं बहाय ॥
 तब प्रात राव जगो हमीर ।
 फूटि गयौ सकल बंध्यो सुतीर ॥६१९॥
 सुनि साह बात^६ अचरिज मानि ।
 टूटै न गढ़ जिय विपम जानि ॥
 पुच्छिउ^७ उजीर तवै सुयोलि ।
 कीजे इलाज किम फहौ खोलि ॥६२०॥
 रण^८ कै पहार कहा कीन आय ।
 डेरा सुफीन्द उज्जोर धाय^९ ॥
 मजबूत मोरचा तहाँ फाँन्द ।
 बहु परी रारि दुष्ट खोर चीन्द^{१०} ॥६२१॥

१ बाँधि । २ पुल बाँधि किहूँ गढ़ को सारा । ३ मरम । ४ किनौ ।

५ अबै । ६ बात । ७ पुच्छीं तुल्य उजीर खोलि । ८ रण को पहार की

साहि आय (शाय) । ९ धाय । १० किन्द, यिन सँतमुन्नाह ।

मैं करौँ बड़ो^१ जिस कौ सुप्रेम ॥६३३॥
 जो हनै बाल कहि तीर पाहि ।
 रसभंग करै मैं गिनोँ ताहि^२ ॥
 सुनि बचन मीर गभरु सुसेख ।
 कर जोरि कीन्ह^३ बानी बिसेष ॥६३४॥
 यह धर्म पुरुष को कितहु^४ नाहिं ।
 तिय ऊपर ऊँचो करत^५ बाँहि ॥
 तब कहत साहि यम सजो बाँन ।
 नुकसाँन होय अरु बचै ज्याँन ॥६३५॥
 सुनि बचन स्रवन कम्माँन लीन ।
 सो ऐँचि स्रवण तिय चरण दीन ॥
 तब परी बाल है बिकल भूमि ।
 रसभंग भयौ सब लखत भूमि^६ ॥६३६॥
 लगि तीर सभा मैं परो^७ जाव ।
 तब बढ़्यौ सोच हम्मीर राव^८ ।
 अब लोँ न तीर दुगहिं पहुँचि ।
 यह कौन औलिया आय सच्चि^९ ॥६३७॥
 दोहरा छंद
 देखि तीर अचिरज हुए,^{१०} गढ़ मैं आवत सोर ।
 चक्रत चहुँ दिस चाहि कै, रह्यौ^{११} राव हम्मीर ॥६३८॥
 मुरझि तिरिय^{१२} धरणी परी, भए राव चित भंग ।
 राव कहै^{१३} ऐसे वली, किते साह कै संग ॥६३९॥

१ बड़ा जिसको स्तेम । २ पाय, साय अंत्यानुप्रास । ३ कही ।
 ४ कहत । ५ करस बाँहि । ६ भुम्मि, धुम्मि अंत्यानुप्रास । ७ परधौ ।
 ८ जाय, राय अंत्यानुप्रास । ९ उँचि । १० भयौ । ११ रहे । १२ त्रिया ।
 १३ कहह ।

महिमा साहि हमीर सैं, कही बात कर जोर ।
सकल साह कै हसम मैं, है लघु भैया मोर ॥६४०॥
नहिं दूजो कोउ साह कै, सबरे^१ दल मैं और ।
मीर गभरू अनुज मम, जामैं इतनो जोर ॥६४१॥

छप्पय छंद

नाहिं जती बिन जोग सूर बिन तेग^२ न होई ।
इते साह कै संग मीर सरभर नहिं कोई ॥
करो हुकम मोहि राव साह कौ हनौं ततच्छिन ।
मितै सकल उतपात भाज सब सेन जाय बिन^३ ॥

हँसि कही राव हम्मीर तब यह खुदाय दूजो दुनी ।
सिर बचै साह छत्र जु उडै यह कौतुक कीजे गुनी ॥६४२॥
करि^४ साहिब कौ याद सोस हम्मीरहिं नायौ ।
कियौ हुकम तब^५ राव कोपि कै वान^६ चलायौ ।
अनल^७ पंख मनु परिय दूटि^८ आकास धरन्निय^९ ।
भयौ सोर वर सह परथौ महि छत्र वरन्निय^{१०} ॥

सुरभाय साह भू मैं परे^{११} उढ्यौ छत्र आकास दिस ।
तब कही उजीर पतसाह सौं तजी ज्याँन परिहरि सुरिस ॥६४३॥
पिछले निमक^{१२} की-दोस्ती, करो जान बकसीस ।
जो दूजो सर छँडिहै, हनिहै^{१३} विस्वा प्रीस ॥६४४॥
जा गढ मैं महिमा रहै, किम आवै वह दृश्य ।
अहिं व्यू गही छछूंदरी, यों हजरत की गन्ध ॥६४५॥

छप्पय छंद

कह महरम खाँ बात इसी^{१४} हजरति सुनि आवै ।

१ सिंगरे । २ तेज । ३ धन । ४ करि जगदीश्वरि । ५ परस । ६ वान । ७ अनिल । ८ दूट । ९ धरन्निय ।
१० धरन्निय । ११ भुम्मी निरुद्ध । १२ निमक । १३ हनिहै । १४ हजरत ।

वह^१ महिमा बर वीर राव का हुकम जु पावै ॥
 गहै तुम्है ततकाल पाँव लंगर गहि मेले :
 उसै दिली बैठाय जोर मरजात सु पेले ।
 हठ छाड़ि साहि रणथंभ का करो कूच चालिये दिली ।
 जै रही राव हम्मीर की पतिसाही सारी गिली ॥६४६॥
 तब^२ सु साह हठ छाड़ि उलटि दिल्ली दिस आए ।
 पिता बैर करि याद साह सुरजन पछिताए ॥
 रतन पंच लै संग^३ ग्राह कै पाँव सु लग्यौ ।
 तात बैर हिय जानि कोप उर मैं अति जग्यौ ॥
 कर जोरि साह सुरजन कहै सुगम दुगग मो हथ्य गनि ।
 यह जितो राज^४ रणधीर को मोहिं दैन की बाच भनि ॥६४७॥

दोहरा छंद

हंसि हजरत ऐसे कही^५, सुरजन आगे^६ आव ।
 दियौ राज रणधीर कौं, करुँ बड़ा उमराव ॥६४८॥
 करि सलाँम सुरजन तवै, वीरा खायौ कोपि ।
 आप^७ भवन हिकमति रची, स्वामि धर्म सब लोपि ॥६४९॥
 जौरा भौरा खास में^८, भरे जु कोरे चाँम ।
 फजणि आनि हाजरि भयौ, सुरजव करी^९ सलाँम ॥६५०॥
 हाथ^{१०} जोरि हम्मीर सों, सुरजन कही सुजाँन ।
 मिलो राव पतिसाह सों, गढ़ बीत्यौ^{११} सामाँन ॥६५१॥
 विनती^{१२} सुनत^{१३} हमीर तव, कियौ कोपि रत नैन ।
 छंडि टेक छत्री तनी, रे कपूत गनि^{१४} ऐन ॥६५२॥

१ यह । २ तब अलावदी छंडि हट दिल्ली दिसि आए । ३ भेंट ।
 ४ राव हम्मीर को । ५ कहै । ६ अगु, अगौ । ७ आय । ८ द्वै ।
 ९ किन्न । १० हथ्य । ११ वित्यौ । १२ विनति । १३ सुनि । १४ गति ।

चौपाई छंद

कहैं राव हँसि सुरजन सुनिजै ।

मिलो छाड़ि^१ पन^२ यह न गुनिजै ॥

सुनि कापुरुष कपूत अयानै ।

छाड़ि^३ टेक को^४ छत्री जानै ॥६५३॥

फिर हमीर सुजन सों पृथी^५ ।

तेरी बात लगत मुहिं छूछो^६ ॥

जौँरा भौँरा खास सु दोई ।

कैसै निवरै जानत सोई ॥६५४॥

कहै साह यह तो है^७ छानी ।

प्रगट देखि निज नैनन जानी ॥

पाथर^८ डारि खास में जोई^९ ।

सुनिए खवण सह^{१०} सब कोई ॥६५५॥

दोहरा छंद

पाथर^{११} डारि^{१२} खास महँ, खुड़क्यौ चाँम^{१३} अपार^{१४} ।

जिस सब^{१५} नीचै रही, राव यहै^{१६} निरधार ॥ ६५६ ॥

खुड़क्यो^{१७} सुनि दुव^{१८} खास को, चढ़्यो सोच डर राव ।

तय महिमा हम्मीर सों, कहै वचन गहि पाँव ॥ ६५७ ॥

द्वय छंद

कहै^{१९} जु महिमा सेख राव सुहिं हुकुम सु दीजै^{२०} ।

मिलो साह कौ जाय फिर इतनो नहिं कोजै^{२१} ॥

१ छंडि । २ पन । ३ छंडि । ४ नहिं । ५ पृथ्वी । ६ छूछो ।

७ नहिं । ८ पाथर । ९ सोई । १० सह । ११ अपार । १२ पार ।

१३ अघार । १४ तय । १५ नहिं । १६ सुजनो । १७ सोई । १८ वर ।

महिमा तय देख । १९ दिखै, दिखि । २० मिलै, मिलि ।

अब^१ दिल्ली कौ कूँच^२ साहि कौ तुरत कराऊँ ।
 तुम राजो रणथंभ जुद्ध मैं सकल सिराऊँ ॥
 हम्मीर राव हँसि योँ^३ कहै^४ सदा कोन जग धिरि रहै ।
 छिन^५ भंग अंग लालच कहा सुजस एक^६ जुगजुग रहै ॥६५॥

दोहरा छंद

अलादीन पतिसाह सोँ, गही^७ खग^८ करि टेक ।
 दुख मैं बिरले मित्त^९ हैं, सुख मैं मित्त अनेक ॥ ६५९ ॥
 हठ तौ राव हमीर को, औ^{१०} रावण की टेक ।
 सत राजा हरिचंद को, अर्जुन बाण अनेक ॥ ६६० ॥
 गही टेक छाड़ै नहीं, जाम चौंच करि जाय ।
 मीठो^{११} कहा अँगार कौ, ताहि चकोर चुगाय^{१२} ॥ ६६१ ॥

छप्पय छंद

सब^{१३} बातें यह कही सेख अपनै घर आयौ ।
 भई^{१४} राति सुरजन्न निकट हजरति कै आयौ^{१५} ॥
 हाथ^{१६} जोरि सिर नाय कह्यौ छल राव भुलायौ ।
 द्वादस कै सामान रक्खि गढ़ तोरि हलायौ ॥
 ये^{१७} कहिय बात^{१८} सुर्जन सकल रणत भँवरदूख्यौ^{१९} अबै ।
 हजरति प्रताप महा बंक गढ़ सहल भयौ^{२०} सदकै सबै ॥ ६६२ ॥

दोहरा छंद

चंदकला देवलि कँवरि^{२१}, पारसि महिमा साह ।
 माँगत साह अलावदी, अबै लै मिलयौ आय^{२२} ॥ ६६३ ॥

१ अबै दिली । २ कुँच । ३ इमि । ४ कह्यौ । ५ क्षण । ६ इक ।
 ७ गहिय । ८ तेग । ९ मीत जुग । १० अरु । ११ मिट्यौ । १२ जु खाय ।
 १३ राव बात (वत्त) ये (इमि) कहिय सेख अप्पन घर आयव (आयउ) ।
 १४ भइय रत्ति । १५ भायौ । १६ हथ्य । १७ यह । १८ वत्त । १९ दुख्यौ ।
 २० लयौ । २१ कुँमरि । २२ साय, आय अंत्यानुप्रास ।

छप्पय छंद

सुनि हजरति कै वचन राव हम्मीर रिसाए ।
 कहा अलावदी साहि गर्व कै वचन सुनाए ॥
 मैं हमोर चहुवाँन साह सौँ हम कछु चाहैं ।
 चिमना वेगम एक^१ और चिंतामणि साहैं ॥
 पाइक च्यारि पीराँ^२ सहित कहै^३ साह ये दिज्जिये ।
 छुटै न हठ हम्मीर को कुच्च दिली कौ किज्जिये ॥६६४॥
 ये हम्मीर कै वचन^४ बाँचि^५ पतिसाह रिसानौ ।
 रे हराँम कमबख्त किसो गढ़ फते करानौ^६ ॥
 सुरजन भूठौ कहै राव हम्मीर न मानै^७ ।
 नहिँ महिमा कौ देइ^८ मिलै नहिँ हठी अमानै ॥
 यह कही साहि सुरजन्त्र^९ तत्र देखिय^{१०} अब कैसी वनै ।
 एणथंभ राव हम्मीर जुत मिटै होहि^{११} कौतुक घनै ॥६६५॥
 जब करि वदन मलीन राव राणवासहिँ आए ।
 जठि राणी कर जोरि राव कौँ सीम नवाए ॥
 गढ़ वीर्यो^{१२} सामाँन भयो भंडार सु रीतौ ।
 * टेक छाड़ि^{१३} करि सेख देहु अब गाँगु न वीर्यो^{१४} ॥
 विलखाय वदन राणी कहै द्वादस वर्ष जु तुम लरे ।
 विप्रीति बुद्धि कौने ईई हीन वचन^{१५} सुन नित्यररे ॥६६६॥

१ एक । २ पीर । ३ कहत राव । ४ वचन । ५ बचि ।
 ६ करि जानौ । ७ मने । ८ देय । ९ सुरजन राव । १० देखे ।
 ११ हूहि । १२ वीर्यो । १३ छूड़ि । १४ वीर्यो । १५ वचन ।

* कहे देउं तेरा लखि मरन न जौयौ ।

अब^१ दिल्ली कौ कुँच^२ साहि कौ तुरत कराऊँ।

तुम राजो रणथंभ जुद्ध में सकल सिराऊँ ॥

हम्मीर राव हँसि योँ^३ कहै^४ सदा कोन जग धिरि रहै।

छिन^५ भंग अंग लालच कहा सुजस एकर^६ जुगजुग रहै ॥६५॥

दोहरा छंद

अलादीन पतिसाह सौँ, गही^७ खग^८ करि टेक।

दुख में बिरले मित्त^९ हैं, सुख में मित्त अनेक ॥ ६५९ ॥

इठ तौ राव हमीर को, औ^{१०} रावण की टेक।

सत राजा हरिचंद को, अर्जुन बाण अनेक ॥ ६६० ॥

गही टेक छाड़ै नहीं, जाम चौंच करि जाय।

मीठो^{११} कहा अँगार कौ, ताहि चकोर चुगाय^{१२} ॥ ६६१ ॥

छप्पय छंद

सब^{१३} बातें यह कही सेख अपनै घर आयौ।

भई^{१४} राति सुरजन्न निकट हजरति कै आयौ^{१५} ॥

हाथ^{१६} जोरि सिर नाय कही छल राव भुलायौ।

द्वादस कै सामाँन रक्खि गढ़ तोरि हलायौ ॥

ये^{१७} कहिय बात^{१८} सुर्जन सकल रणत भँवरदूख्यौ^{१९} अवै।

हजरति प्रताप महा बंक गढ़ सहल भयौ^{२०} सकै सबै ॥ ६६२ ॥

दोहरा छंद

चंदकला देवलि कँवरि^{२१}, पारसि महिमा साह।

माँगत साह अलावदी, अवै लै मिलयौ आय^{२२} ॥ ६६३ ॥

१ अत्रै दिली। २ कुञ्च। ३ इमि। ४ कही। ५ क्षण। ६ इक।
७ गहिय। ८ तेग। ९ मीत जुग। १० अरु। ११ मिटौ। १२ जु लाय।
१३ राव बात (वक्त) ये (इमि) कहिय सेख अपन घर आयव (आयउ)
१४ भइय रत्ति। १५ भायौ। १६ हथ्य। १७ यह। १८ वक्त। १९ दुख्यौ
२० लयौ। २१ कुँमरि। २२ साय, आय अंत्यानुप्रास।

छप्पय छंद

सुनि हजरति कै बचन राव हम्मीर रिसाए ।
 कहा अलावदी साहि गर्जो कै बचन सुनाए ॥
 मैं हमोर चहुवाँन साह सौँ हम कछु चाहैं ।
 चिमना बेगम एक^१ और चितामणि साहैं ॥
 पाइक च्यारि पीराँ^२ सहित कहै^३ साह ये दिजिये ।
 छुटै न दृढ़ हम्मीर को कुचच दिली कौ किजिये ॥६६४॥
 ये हम्मीर कै बचन^४ बाँचि^५ पतिसाह रिसानौ ।
 रे हराँम कमबख्त किसो गढ़ फते करानौ^६ ॥
 सुरजन भूठौ कहै राव हम्मीर न मानै^७ ।
 नहिं महिमा कौ देइ^८ मिलै नहिं हठी अमानै ॥
 यह कही साहि सुरजन^९ तब देखिय^{१०} अब कैसी बनै ।
 रणथंभ राव हम्मीर जुत मिटैं होहि^{११} कौतुक घनै ॥६६५॥
 जब करि वदन मलीन राव रणवासहिं आए ।
 उठि राणी कर जोरि राव कौ सीम नवाए ॥
 गढ़ वीर्यौ^{१२} सामान भयौ भंडार सु रीती ।
 * टेक छाड़ि^{१३} करि सेख देहु अब माँगु न वीर्यौ^{१४} ॥
 विलखाय वदन राणी कहै द्वादस वर्ष जु तुम लरे ।
 विप्रीति बुद्धि कौने दई हीन वचन^{१५} मुख निकर ॥६६६॥

१ इकक । २ पीरन । ३ कहत राव । ४ बचन । ५ बाँचि ।
 ६ करि जानौ । ७ मजे । ८ देन । ९ सुरजन राव । १० देखी ।
 ११ हूहि । १२ वीर्यौ । १३ छुड़ि । १४ वीर्यौ । १५ वचन ।
 प्राप्त । १५ वचन ।

चौपाई छंद

राणी कहै सुनो महारावं ।

ऐसे बचन उचित नहिं भावं ॥

या तन बचन सार खुति भाखै^१ ।

तन मन धन दै बचन जु राखै^२ ॥६६॥

तन धन भ्रात पुत्र अरु नारी ।

हरि बिधु त्यागि बचन प्रतिपारी ॥

राज पाट अनित्य^३ सु जानो ।

रहै नित्य इक सुजस बखानो ॥६६॥

केकड़ ध्वज अधविग्रह दीनौ ।

बिद्या भवन जोति जस लीनौ ॥

भव जो कही सत्य वह जानो ।

और न होय कोटि बुधि ठानो ॥६६॥

दोहरा छंद

कब हठ करै अलावदी, रणतभँवर गढ़ आहि ।

कबै सेख सरणो रहै, बहुरौ^४ महिमा साहि ॥६७॥

सूर सोच मन मैं करो^५, पदवी^६ लहौ न फेरि ।

जो हठ छंडो राव तुम, उतन लजै अजमेरि ॥६७॥

सरण राखि सेख न तजो, तजो सीस गढ़ देस ।

राणी राव हमीर को^७, यह दीन्हौ उपदेस ॥६७॥

छप्पय छंद

कहाँ पँवार जगदेव सीस आपन कर कट्यो ।

कहाँ भोज विक्रम सु राव जिन पर दुख मिट्यो ॥

१ भक्खै । २ रक्खै । ३ अनित्य (त्य) । ४ बहुरथौ । ५ करै ।

६ पदई । ७ की ।

सबाभार नित करन^१ कनक बिप्रन कौ^२ दीनों^३ ।

रह्यौ न रहिए^४ कोय देव नर नाग सुचीनौ ॥

यह बात^५ राव हम्मीर सूँ राणी इम आसा कही ।
जो भए चक्कवै मंडली सुनो^६ राव दीखै नहीं^७ ॥ ६७३ ॥

दोहरा छंद

धन जोवन नर की दसा, सदा न एक विहाय ।

पाख^८ पाँच ससि की कला, घटत घटत^९ बढ़ि जाय^{१०} ॥ ६७४ ॥

राखि सरण सेख न तजो, तजो सीस गढ़ बेगि ।

इठ न तजो पतसाह सोँ, गहि कर तजो न तेगि ॥ ६७५ ॥

जितो ईस तुम्ह वर दियौ, अब फिर चाहत काय ।

करो जंग पतसाह सोँ, सनमुख सार समाय ॥ ६७६ ॥

जीवन^{११} मरन संजोग जग^{१२}, कौन मिटावै ताहिं ।

जो जन्मै संसार मैं अमर^{१३} रहै नहिं आहि ॥ ६७७ ॥

कोउ सदा नहिं थिर रहै, नर तरु गिरवर ग्राम ।

करथौ राज रणथंभ को^{१४}, अपना^{१५} तन परमाँन ॥ ६७८ ॥

कहाँ जैत कह सूर कहँ, कहँ सोमेस्वर राण ।

कहाँ गए प्रथिराज जे, जीति साह दल आण ॥ ६७९ ॥

कहाँ जैत कहँ सूर प्राथि, जिन गहे गौरी साह ।

होतव मिटै न जगत मैं, किजिय^{१६} चिता फाद ॥ ६८० ॥

होतव मिटै न जगत मैं, कीजं चिंता कोदि ।

१ प्रथि । २ कहँ । ३ दिजव । ४ नहिँ । ५ बात । ६ सुनो ।

७ कही । ८ पाख, पक्ख, पाणि । ९ बढ़त । १० जैतव । ११ जे ।

१२ अमर न कोउ आहि । अमर न कोउ गहिर । १३ गढ़ । १४ इस

अपने (अपन) तन नौन । १५ जीवे ।

आसा कहै हमीर सेँ, अब चूको मति सोहि ॥ ६५१ ॥
 बिछुरन मिलन सँजोग जग, सब मैं यह बिधि सोह ।
 आसा कहै हमीर सह, हम तुम भया बिछोह ॥ ६५२ ॥
 धन्य बंस जिहि जन्म तब, राव सराहत ताहि ।
 और कौन तुम बिन त्रिया, बचन कहै समुझाय ॥ ६८३ ॥
 धनि पतिव्रता नारि तू, राव सराहत आप ।
 अवर कौन तुम बिन त्रिया, कहै बचन बिन पाप ॥ ६८४ ॥
 राखि सेख सरगौ तजों, कुल लाजै चहुवांण ।
 तुम साकौ गढ़^१ कीजियौ^२, निरखि साह नीसाण ॥ ६८५ ॥
 लीन^३ परिक्षा बहुत मैं, तू छत्री कुलबाल ।
 तुव^४ मत मैं देख्यौ^५ सुदढ़, यही बात^६ यहि काल ॥ ६८६ ॥
 सुने राव कै बचन तब, परी धरनि^७ मुरझाय ।
 निठुर बचन मुख तैं जु कहि, तजि रणवास रिसाय ॥ ६८७ ॥
 हम पतिभरता पुरुष बिन, कौन दिसा चित कौ धरै ।
 आसा कहै हमार सेँ, तुम पहला साकौ करै ॥ ६८८ ॥

छप्पय छंद

खोलि सकल भंडार तुरत^८ जाचिक सु बुलाए^९ ।
 बिप्र भली बिध पूजि^{१०} दिये बंदी मन भाए ॥
 भवन तिरिया^{११} गढ़ ग्राम तजे हम्मीर मोह बिन ।
 मन क्रम बचन सु त्यागि भए निज धर्म लीन बिन ॥
 ततकाल राव रणवास तजि सभा आय दरवार किय ।
 आये जु मित्र^{१२} मंत्री सु बुध सूर वीर आदर सुदिय ॥ ६८९ ॥
 कहै राव हम्मीर सुणो चतुरंग महा वर ।

१ गढ़ मैं करौ । २ किजियौ । ३ लीन । ४ तुममन । ५ दिख्यौ ।
 ६ वक्त । ७ भुग्मि मुझाय । ८ सत्रै, सब । ९ बुल्लाए । १० पुज्य ।
 ११ त्रिया । १२ मंत्र ।

तुम्हें रतन की लाज जुद्ध^१ हम करें नियम करि ॥
 तुम सब बात समत्थ^२ करो जैसी तुम भावै ।
 रणतभँवर^३ को लोग तहाँ कछु दुःख न दुख नहिं पावै ॥
 गढ़ सजो जाय चित्तोड़^४ को प्रजापालि सुख दिजिये ।
 सब साँम दाँम दंडह सहित भेद नित्य^५ सब किजिये ॥ ६९० ॥
 कहत तवै^६ चतुरंग उचित^७ यह हम कौं नाहीं ।
 आप^८ रहो हम^९ रहैं लरैं हम जस कै ताहीं ॥
 कहे राव यह प्रजा सकल चित्तोड़^{१०} समावै ।
 यह परिकर सब जितो राखि^{११} आपन^{१२} जु सुहावै ॥
 चतुरंग राव ले रतन कौ गढ़ चित्तोड़^{१३} सुचलिये ।
 प्रथम जाय अल्हण सुपुर करुणाजुत डेरा किये ॥ ६९१ ॥

दोहरा छंद

पंच सहस चतुरंग लै, चले^{१४} रतन कै साथ ।
 तब हमीर दरबार किय, कही सभन यह गाथ^{१५} ॥ ६९२ ॥
 जीवै सो धर भुगिगवै^{१६}, जुझके^{१७} सुरपुर वास ।
 दोऊ जस कितो^{१८} अमर, तजो मोह जग आस ॥ ६९३ ॥
 जीवन चाहत जो फ़ोऊ, ते सुखैन घर जाह ।
 कहै राव सबकै सुनत, हम सँग मरत उहाह ॥ ६९४ ॥

छप्पय छंद

सुनत वचन ये सेख भवन अपने को आए^{१९} ।
 कुटम^{२०} सेख करि खेस करद लै अदल पठाए ॥

१ बुद्ध । २ समर्थ । ३ बर परिकर तब जितो, यति आनन शु
 सुहावै । ४ चित्तोड़ । ५ नीति । ६ तब । ७ उचित । ८ आपस ।
 ९ तब । १० चित्तोड़ । ११ नविल । १२ प्रत्यय । १३ चित्तोड़ ।
 १४ चलिय, चलनड । १५ गाथ, गाय, गननगान । १६ भोगी ।
 १७ जुझै । १८ जीवति । १९ के पाली । २० कुटम जीवत मर मेम ।

कहै राव सों बचन नैन जल सों भरि आए ।

सुख संपत्ति रणथंभ^१ त्यागि करिये मन भाए ॥

सुर नर कायर^२ सूरमा कहै सेख थिर नहिं कोइ ।

हम्मीर राव चहुवाँन^३ अब करै साहि सों जंग सोइ ॥ ६९५ ॥

दोहरा छंद

जीवन कौ सब कोउ कहै, मरन कहै नहिं कोय ।

सती सूरमा पुरुष को^४, मरतहिं मंगल होय ॥ ६९६ ॥

छप्पय छंद

केसर सौँधै बसन सकल उमरावन सज्जै ।

अलादीन पतिस्याह फेरि कहि कब कब गज्जै ॥

सहस गऊ करि दाँन राव सिर मौर सु बंध्यौ ।

करचव^५ जुद्ध को साज छत्र कुल सुजस सु संध्यौ ॥

निस्साँन^६ पाँन बज्जे सु घन हर्ष^६ वीर बानै पढ़े ।

चहुवाँन राव हम्मीर तब जुद्ध काज चौरै चढ़े^७ ॥ ६९७ ॥

दोहरा छंद

पंच सहस रतनेस सँग, गढ़ चीतोड़^८ पठाय ।

पंच सहस रणथंभ गढ़, द्रढ़ रावत रह आय ॥ ६९८ ॥

असी सहस सेना सकल, चढ़ी राव^९ कै संग ।

माया मोह विरक्त मन, जुरन साह सों जंग ॥ ६९९ ॥

छप्पय छंद

कमध्वज कूरम गोड़ तँवर परिहार^९ अमानो ।

पौरच वैस पुँडीर वीर चहुवाँन सु जानो ॥

जइव^६ गोहिल धीर चढ़े गहिलोत गरुरं ।

१ कातर । २ पतिसाह सों करो जंग अद्भुत सोइ । ३ कै ।

४ करिव । ५ नीसाँन । ५ हरषि । ६ कढ़े । ७ चित्तोड़ । ८ पड़िहार ।

९ जादम ।



सैगर और पँवार भिल्ल^१ इक भोज मरुं ॥
 छत्तीस वंस छत्री चढ़े जिम पावस बढ़ल बढ़े ।
 हम्मीर^२ राव चहुवाँन तव जंग कज्ज^३ चौरै कढ़े ॥ ७०० ॥
 जेठ मास बुधवार सप्तमिय पक्ख^४ अँधारी ।
 करि सूरज कौ नमन राव कर खग^५ सम्हारी ॥
 हरषे सुर तेंतीस और हरषे जु कपाली ।
 नारद सारद हरषि वीर वावन जुत काली ॥
 हरषी जु हरषि^६ अचछर^७ हरषि^८ जुगिन वृंद सु नच्चियव ।
 जंजुक कराल गिद्धनि हरषि सूर हरषि हिय रच्चियव ॥ ७०१ ॥

हनूफाल छंद

सजि सूर राव हमीर । विरदाय^९ वीर सु धीर ॥
 जनु छत्र कुल को लाज । रन सिंधु की मनु पाज ॥ ७०२ ॥
 दातार सूर सु अंग । निस द्यौस जुद्धत जंग ॥
 धरि स्वामि धर्म सुरंग । बढि^{१०} रहै तिल तिल अंग ॥ ७०३ ॥
 गढ़ कोट ओटत एक । तोरंत करि करि टेक ॥
 सिर खौरि चंदन सोह । रवि बंदि बंदि सुलह ॥ ७०४ ॥
 गति उद्ध^{११} कुहत भट्ट । ज्यौ^{१२} खेलन उतर नट्ट ॥
 अँग वेर्म चर्म सु कीन । सिर टोप औप सु दीन^{१३} ॥ ७०५ ॥
 दस्तान रच्चि सु हथ । करि चहै गथ्य^{१४} अकथ्य^{१५} ॥
 बहु न्हान दान सु कीन । गो स्वर्ण विप्रन दीन^{१६} ॥ ७०६ ॥
 रविसंभु विष्णु सुपुजि^{१७} । मन साद सँ करि दुजि^{१८} ॥

१ भोल । २ दल । हरषि राव हम्मीर के साद वीर कवचि वंद ।
 ३ काज । ४ पाल । ५ तंग । ६ हूर । ७ अचछर । ८ सुफल ।
 ९ रन । विरदार । १० गति । ११ उर । १२ जिम । १३ विप्र ।
 १४ किल, दित प्रदानुप्रास । १५ नथ । १६ नथ । १७ किल, दित
 नथानुप्रास । १८ किल । १९ किल ।

कहै राव सों बचन नैन जल सों भरि आए ।
 सुख संपति रणथंभ त्यागि करिये मन भाए ॥
 सुर नर कायर^१ सूरमा कहै सेख धिर नहिं कोइ ।
 हम्मीर राव चहुवाँन^२ अब करै साहि सों जंग सोइ ॥ ६९५ ॥

दोहरा छंद

जीवन कौ सब कोउ कहैं, मरन कहै नहिं कोय ।
 सती सूरमा पुरुष को^३, मरतहिं मंगल होय ॥ ६९६ ॥

छप्पय छंद

केसर सौवै बसन सकल उमरावन सज्जै ।
 अलादीन पतिस्थाह फेरि कहि कब कब गज्जै ॥
 सहस गऊ करि दाँन राव सिर मौर सु बंध्यौ ।
 करचव^४ जुद्ध को साज छत्र कुल सुजस सु संध्यौ ॥
 निस्साँन^५ पाँन बज्जे सु घन हर्ष^६ वीर वानै पढ़े ।
 चहुवाँन राव हम्मीर तव जुद्ध काज चौरै चढ़े^७ ॥ ६९७ ॥

दोहरा छंद

पंच सहस रतनेस सँग, गढ़ चीतोड़^८ पठाय ।
 पंच सहस रणथंभ गढ़, द्रढ़ रावत रह आय ॥ ६९८ ॥
 असी सहस सेना सकल, चढ़ी राव कै संग ।
 माया मोह विरक्त मन, जुरन साह सों जंग ॥ ६९९ ॥

छप्पय छंद

कमध्वज कूरम गोड़ तँवर परिहार^९ अमानो ।
 पौरच वैस पुँढीर वीर चहुवाँन सु जानो ॥
 जइव^{१०} गोहिल धीर चढ़े गहिलोत गरुरं ।

१ कातर । २ पतिसाह सों करो जंग अद्भुत सोइ । ३ कै
 ४ करिव । ५ नीसाँन । ६ इरपि । - ६ कढ़े । - ७ चित्तोड़ । ८ पड़िदार
 ९ नादम ।

सैगर और पँवार भिल्ल^१ इक भोज मरुरं ॥
छत्तीस वंस छत्री चढ़े जिम पावस बढ़ल बढ़े ।
हम्मीर^२ राव चहुवाँन तव जंग कल्ल^३ चौरै कढ़े ॥ ७०० ॥
जेठ मास बुधवार सप्तमिय पक्ख^४ अँधारी ।
करि सूरज कौ नमन राव कर खग^५ सम्हारी ॥
हरषे सुर तेंतीस और हरषे जु कपाली ।
नारद सारद हरषि वीर वावन जुत काली ॥
हरषी जु हरषि^६ अच्छर^७ हरषि^८ जुगिन वृंद सु नचियव ।
जंबुक कराल गिद्धनि हरषि सूर हरषि हिय रचियव ॥ ७०१ ॥

हनूफाल छंद

सजि सूर राव हमीर । विरदाय^९ वीर सु धीर ॥
जनु छत्र कुल को लाज । रन सिंधु की मनु पाज ॥ ७०२ ॥
दातार सूर सु अंग । निस द्यौस जुद्धत जंग ॥
धरि स्वामि धर्म सुरंग । बढ़ि^{१०} रहं तिल तिल अंग ॥ ७०३ ॥
गढ़ कोट ओटत एक । तोरंत करि करि टेक ॥
सिर खौरि चंदन सोह । रवि वंदि वंदि सुलंह ॥ ७०४ ॥
गति उद्ध^{११} कुदत भट्ट । ज्यौ^{१२} खेलन उतरं नट्ट ॥
अँग वेर्म चर्म सु कीन । सिर टोप औप सु दीन^{१३} ॥ ७०५ ॥
दस्ताँन रुचि सु हृथ । करि चहै गथ्य^{१४} अकथ्य^{१५} ॥
बहु न्हाँन दाँन सु कीन । गो स्वर्ण विप्रन दीन^{१६} ॥ ७०६ ॥
रविसंभु विष्णु सुपुलि^{१७} । मन साह सै करि दुलि^{१८} ॥

१ भोल । २ दल हयि राव हम्मीर के नाह जीव अचरित बढ़े ।
३ काज । ४ पाल । ५ तेग । ६ दूर । ७ अच्छरि । ८ बहल ।
९ रन । विरदार । १० रहिय । ११ उष । १२ जिन नयन निरिड ।
१३ किन, दिन अंत्यानुप्रास । १४ नय । १५ अनय । १६ किन, दिन
अंत्यानुप्रास । १७ पुलि । १८ दूजि ।

कहै राव सों वचन नैन जल सों भरि आए ।
 सुख संपति रणथंभ त्यागि करिये मन भाए ।
 सुर नर कायर^१ सूरमा कहै सेख थिर नहिं क
 हम्मीर राव चहुवाँन^२ अब करै साहि सों जंग सोइ ॥ ६५

दोहरा छंद

जीवन कौ सब कोउ कहै, मरन कहै नहिं कोय ।
 सती सूरमा पुरुष को^३, मरतहिं मंगल होय ॥ ६६

छप्पय छंद

केसर सौँधै बसन सकल उमरावन सज्जै ।
 अलादीन पतिस्याह फेरि कहि कब कब गज्जै ॥
 सहस गऊ करि दाँन राव सिर मौर सु बंध्यौ ।
 करयव^४ जुद्ध को साज छत्र कुल सुजस सु संध्यौ ॥
 निस्साँन^५ पाँन बज्जे सु घन हर्ष^६ वीर वानै ।
 चहुवाँन राव हम्मीर तब जुद्ध काज चौरै चढ़े^७ ॥ ६७

दोहरा छंद

पंच सहस रतनेस सँग, गढ़ चीतोड़^८ पठाय ।
 पंच सहस रणथंभ गढ़, द्रढ़ रावत रह आय ॥ ६८
 असी सहस सेना सकल, चढ़ी राव' कै संग ।
 माया मोह विरक्त मन, जुरन साह सों जंग ॥ ६९

छप्पय छंद

कमध्वज कूरम गोड़ तँवर परिहार^९ अमानो ।
 पौरच वैस पुँडरी वीर चहुवाँन सु जानो ॥
 जइव^{१०} गोहिल धीर चढ़े गहिलोत गरुरं ।

१ कातर । २ पतिसाह सों करो जंग अद्भुत सोइ । ३
 ६ करिव । ४ नीसाँन । ५ इरपि । ६ कढ़े । ७ चित्तो
 ८ नादम ।

सैंगर और पँवार भिल्ल^१ इक भोज मरुरं ॥
छत्तीस वंस छत्री चढ़े जिम पावस बहल बड़े ।
हम्मीर^२ राव चहुवाँन तव जंग कल्ल^३ चौरै कढ़े ॥ ७०० ॥
जेठ मास बुधवार सप्तमिय पक्ख^४ अँधारी ।
करि सूरज कौ नमन राव कर खग^५ सम्हारी ॥
हरषे सुर तेंतीस और हरषे जु कपाली ।
नारद सारद हरषि वीर बावन जुत काली ॥
हरषी जु हरषि^६ अच्छर^७ हरषि^८ जुगिन वृंद सु नच्चियव ।
जंबुक कराल गिद्धनि हरषि सूर हरषि हिय रच्चियव ॥ ७०१ ॥

हनूफाल छंद

सजि सूर राव हमीर । विरदाय^९ वीर सु धीर ॥
जनु छत्र कुल को लाज । रन सिंधु की मनु पाज ॥ ७०२ ॥
दातार सूर सु अंग । निस द्यौस जुटत जंग ॥
धरि स्वामि धर्म सुरंग । बढि^{१०} रहै तिल तिल अंग ॥ ७०३ ॥
गढ़ कोट ओटत एक । तोरंत करि करि टेक ॥
सिर खौरि चंदन सोह । रवि वंदि वंदि सुलाह ॥ ७०४ ॥
गति उद्ध^{११} कुदत भट्ट । ज्यो^{१२} खेलन उतरै नट्ट ॥
अँग बर्म चर्म सु कीन । सिर टोप औप सु दीन^{१३} ॥ ७०५ ॥
दस्ताँन रच्चि सु हथथ । करि चहै गथथ^{१४} अकथथ^{१५} ॥
बहु न्हान दाँत सु कीन । गो स्वर्ण विप्रन दीन^{१६} ॥ ७०६ ॥
रविसंभु विष्णु सुपुलि^{१७} । मन साह सैं करि दुलि^{१८} ॥

१ भोल । २ दल हरषि राव हम्मीर कै साह जीव अचरिज बड़े ।
३ काज । ४ पाल । ५ तेग । ६ हूर । ७ अच्छरि । ८ सकल ।
९ रन । विरदार । १० रहिव । ११ उर्ध । १२ जिन खल्ल लिखिड ।
१३ किन्न, दिन अंत्यानुप्रास । १४ गथ्य । १५ अगथ्य । १६ किन्न, दिन
अंत्यानुप्रास । १७ पुलि । १८ दूजि ।

आचार भार फवंत । दोउ पच्छ सुद्ध सुभंत ॥ ७०७ ॥
 बहु बंदि विरदत जाय । बढि द्वंद हर्ष सु आय^१ ॥
 असमान लगि^२ सु सीस । भलहलै तेज सु दीस ॥ ७०८ ॥
 संग चढ्यव^३ वंस छतीस । संग्राम अचल सु दीस ॥ ७०९ ॥

दोहरा छंद

ह्वासि धर्म धारै^४ सदा, माया मोह विरक्त ॥
 दान कृपान उदारमति, अचल अद्रि हरभक्त ॥ ७१० ॥
 साजत साज सुबाजि सजि, कीन^५ बनाव सु ऐन ॥
 चंचल चपल विचित्र गति, राग वाग लखि सैन ॥ ७११ ॥

छंद हनूफाल

तव^६ साहनी नृप वोलि । हय सहस सोलह खोलि ॥
 सब वंस उच्च सु वाज^७ । लखि^८ रूप मोहत राज^९ ॥ ७१२ ॥
 मनु उच्चस्त्रव कै वंधु । आवर्त्त चक्र सु कंधु ॥
 तुरकी हजार स पाँच । मग चलत करत सु नाच^{१०} ॥ ७१३ ॥
 तार्जी हजार सु रुद्र । गुन सील रूप समुद्र ॥
 सब वीर ताजि^{११} कुलीन । नृप वंदि^{१२} वाजि सु दीन ॥ ७१४ ॥
 बनि जीन जटित जराव । नग हीर पन्न सुहाव ॥
 स्त्रि वनिय कलंगिय ऐन । मनु सजे वाजि सु मैन ॥ ७१५ ॥
 गजगाह वाह अथाह । जो करै^{१३} जल पर राह ॥
 नग मुक्त माल सुयाल । गुम्फी^{१४} सु रुचि^{१५} बहु काल ॥ ७१६ ॥
 मखमलिय सिंगरे साज । मनु^{१६} सवै रवि को^{१७} वाजि ॥
 जित परिय पकखरि अंग । लख भ्रमत दिट्ठि^{१८} अभंग ॥ ७१७ ॥

१ जाहिं आहिं, अंत्यानुप्रास । २ लगिय । ३ चढ़े । ४ धारहिं ।
 ५ किन्न । ६ तव साह लिय नृप बुद्धि । ७ वाजि । ८ लख । ९ गात्रि ।
 १० पच्च, नच्च अंत्यानुप्रास । ११ धीर । १२ बाँटि । १३ करहिं ।
 १४ नैथी । १५ सगचि । १६ सच्च । १७ कै । १८ दीठि ।

बहु सिरि सीसन सोहि । उड़ि चलैं भरि जो कोहि^१ ॥
 गति चलैं^२ चंचल एमि । जिनि पवन पहुँचै केमि ॥ ७१८ ॥
 धर धरत सुम यों मानि । मनु जरत अग्नि^३ सुजानि ॥
 जल चलैं थल जिमि बट्ट^४ । लखि उड़ै ओघट घट्ट^५ ॥ ७१९ ॥
 मृग गहत डार कमाँन । नहिं पच्छि पावहिं^६ जान ॥
 गति पवन देखि लजात । जनु मुकुर क्रांति सगात^७ ॥ ७२० ॥
 दोउ वंस सुद्ध प्रकास । बड़ि डील पील सु जास ॥
 यहि विधि सु लिन्ने^८ मौलि । नग हेम सर भर तौलि ॥ ७२१ ॥
 फोउ बने कच्छिय ऐन । सब^९ उड़ै पच्छिय गैत^{१०} ॥
 ऐराक वंस सुसील । गुन भरे भलकत डील ॥ ७२२ ॥
 खंधार उपजि स सुद्ध । जनु लखत रूप सु उद्ध ॥
 काबलिय डील अनूप । तिहि^{११} देखि^{१२} मोहत भूप ॥ ७२३ ॥
 अरु चीन कै जु नबीन । ताजी सगुन गन लीन ॥
 बर^{१३} बीर अनक जु डील । जो लिये साटै^{१४} पील ॥ ७२४ ॥
 रँग रँग अँग बनाव । सो लिये पंकति^{१५} दाव ॥
 सिरगा सुरंग समंद । संजाफ सुरख अमंद ॥ ७२५ ॥
 कुम्भैत कुमद कल्याँन । मोती सु मगसी आँन ॥
 सज्जारु^{१६} सब रँग भौर । चंपा सु चीनिय चौर ॥ ७२६ ॥
 अवलख सु गरडा रँग । लकखी जु अतिहि^{१७} उमंग ॥
 हंसा हरेई बाजि । तीतुरिय ताँवी साजि ॥ ७२७ ॥
 भिन भिन्न टुकड़ी साजि । चढ़ि चलिय रावत गाजि ॥
 चहुवाँन राव हमीर । रँग रँग रचन सुधीर^{१८} ॥ ७२८ ॥

१ सोह, कोह अंत्यानुप्रास । २ चलहिं । ३ अग्नि । ४ घाट । ५ घाट ।
 ६ पावैं । ७ सतात । ८ लीने । ९ सँग । १० औन, गौन, अंत्यानुप्रास ।
 ११ दिक्खि, पिक्खि । १२ अन्विय (अरविय) अनोखे डील । १३ सटैं ।
 १४ लगे पंकज । १५ नु । १६ ऐरि । १७ रँग रँग रचन धीर ।

छंद त्रोटक

गजराज सबै सत पंच सजे ।

गिरगात^१ मनो घन भट्ट गजे ॥

सु महावत जंत्रन मंत्र रजे ।

करि वंधन^२ पीर सुधीर कजे ॥७२९॥

परि पांय सजाय निकट खरे ।

पग^३ खोलि जंजीर सुवीर अरे^४ ॥

विरदाय भले मन हत्थ कियं ।

असनान कराय सिंगार लियं ॥७३०॥

तन तेल सिंदूरन चित्र कियं ।

सिर चंद अमंद सुरंग दियं ॥

जनु कज्जल वहल पावसयं ।

तड़िता घन^५ चंद कि मावसयं ॥७३१॥

सजि डंबर अंबर सो लगियं ।

घन घोर घटा सु पटा गिनियं^६ ॥

कसियं हवदा ध्वज धार वली ।

मनु पंगति पठवय की जु चली ॥७३२॥

वर्षा घन घोर सु जानि परै ।

कवि रूप स्वरूप समान करै ॥

बहु वहल वारन वृंद वड़े^७ ।

ध्वज बैरख लाल निसान कड़े ॥७३३॥

तड़िता घन मैं दमकंत मनो ।

वगपंति सुई गजदंत मनो ॥

गरजै बहु गाज सु गाज मनं ।

१ गिरगात । २ बंधन । ३ पदपाय सुजाय ४ खुलि । ५ घनु ।

६ गजिय । ७ चड़े ।

मिलियौ ससि सूरज गोन भनं ॥७३४॥

वर्षै हद मद सुभद सदा ।

सु वहै बहु भाँति सुभद^१ मुदा ॥

सिर ढाल ढलकत एमि लसै ।

ससि जीव धरासुत एक वसै ॥७३५॥

अधधुंध चलै मग उम्मगयं ।

मनु काल कराल उठे जगयं ॥

चरखी बहु धाँन जु नेज लियं ।

धरि सेन सुअग्र^२ सुभाय कियं ॥७३६॥

पद लंगर ओर जँजीर^३ जुटे ।

नहिं खुल्लत आदुव न्याय लुटे^४ ॥

बल रासि अमाँन^५ सुकोहभरे ।

नन चालत^६ मग अमग अरे ॥७३७॥

बहु दुंदुभि घोर सुनै स्रमन^७ ।

विरदाय सुनंत करै गमनं ॥

सिर चौर दुरंत इसे दरसै ।

तम दावि^८ दिनेस मरीचि लसै ॥७३८॥

चतुरंगनि राव हमीर तनी ।

सब भाँतिन सोभ अनंत बनी ॥

सब रावत आय जुहार कियं ।

चहुवाँन सबै सिर भार दियं ॥७३९॥

धरि अग्र^९ सु पिल्लन^{१०} डिल्ल^{११} पिले ।

बहु चंचल बाजिन लाज^{१२} खिले ॥

१ नद । २ अग्र । ३ जँजिर जोर जुटे । ४ लुटे । ५ अमावन ।

६ चह्दत । ७ स्रमनं । ८ दावि । ९ अग्र । १० पोलन । ११ डाल ।

१२ ताज ।

गजराज सबै सत पंच सजे ।
 छंद त्रोटक गिरगात^१ मनो घन भट्ट गजे ॥
 सु महावत जंत्रन मंत्र रजे ।
 करि बंधन^२ पीर सुधीर कजे ॥
 परि पांय सजाय निकट खरे ।
 पग^३ खोलि जंजीर सुवीर अरे^४
 विरदाय भले मन हत्थ कियं ।
 असनाँन कराय सिँगार लि
 तन तेल सिँदूरन चित्र कियं ।
 सिर चंद अमंद सुरंग
 जनु कज्जल बदल पावस^५
 तड़िता घन^६ चंद कि
 सजि डंबर अंबर सो ल
 घन घोर घटा सु पटा
 कसियं हवदा ध्वज धार
 मनु पंगति पव्वय
 वर्षा घन घोर सु जा
 कवि रूप स्वरूप
 बहु बदल वारन
 ध्वज वैरख
 तड़िता घन मैं
 वगपंति
 गरजै बहु गाज सु

दोहरा छंद

स्रवण सुनै वर बीर रस, सिंधव राग अपार ।
हरखि उठे दोउ तिहिं समें, मिलन बीर खिगार ॥७४७॥

छंद हनूफाल

मिलनै सुवीर खिगार । दुहु हरष हिये अपार ॥
वर बीर हरखेउ अंग । उत अछछरी^१ सु उमंग ॥७४८॥
तन उभै मज्जन कौन । भये दान मानस लीन ॥
तहाँ कौच वीर नवीन । रचि बाल बसन प्रवीन ॥७४९॥
इत टोप बीरन सीस । कसि कंचुकी तिय रीस ॥
वहु अख वंधि सु बीर । अछछरि सु भूषण हीर ॥७५०॥
इत सूर खड्ग सु लीन । उत बाल अंजन दीन ॥
इत ढाल बीरन वंधि । ताटक श्रवणनि संधि ॥७५१॥
सामंत वंधि कटार । अछछरी तिलक सुंदार ॥
मुख पाँन ज्वाँन सुभाव । तिय चंप दंत जराव ॥७५२॥
इत कसी सूर कमाँव । दग वाम चमक निदान ॥
धरि बीर कर दस्तान । अछछरिय महँदी पाँन ॥७५३॥
वरच्छी सु लीनिय सूर । वर माल कीनिय हूर ॥
सिरपेच सूर जराव । तिय सीस फूल सुहाव ॥७५४॥
इत तबल तौरा नेत । तिय हाव भाव समेत ॥
रचि सूर सेलिय अंग । अछछरिय हार उमंग ॥७५५॥
कसि तून वीर स जंग । अछछरिय नैन अपंग ॥
कर केहरी नख सूर । उत पानि पानि सहूर ॥७५६॥
लिय वीर तुलसिय माल । वर माल लीन स चाल ॥
कसि सूर मोजा पाँय । नूपूर सु बाल सुहाय ॥७५७॥
कसि सूर बाजि सु तंग । विन्माँन बाल उमंग ॥
इहि भाँति सूर सवाल । उतकंठ मिलन तिकाल ॥७५८॥

दोहरा छंद

उमगि उमगि हम्मीर भट, चले सकल करि चाव ।
 च्यारि अनी चतुरंग की, चढ़े संभरी राव ॥७५६॥
 उतै साह कै मीर भर, खाँन ओर उमराव ।
 रणतभँवर छिक्किय^१ हरषि, नाना करिव बनाव ॥७६०॥
 च्यारि दरा घाटी जिति, कीने घाटारोह ।
 काल रूप कोपे^२ तुरक, बाँन बिकट जंसोह ॥७६१॥

भुजंगप्रयात छंद

चढ़े वीर कोपे दुहूँ ओर धाए ।
 मनो काल कै दूत अद्भुत आए ॥
 इतै राव हम्मीर कै वीर छुट्टे ।
 उतै मीर धीरं गहीरं सु जुट्टे ॥७६२॥
 उड़ी रैन सैन न दीखंत भाँन ।
 दुहूँ ओर घोरं सु बज्जे निसाँन ॥
 छुट्टै^३ तोप बाँन दुहूँ ओर जोरं ।
 धरा अंमरं बीच मच्चे सु सोरं ॥७६३॥
 उठी ज्वाल माला धरा पै उपट्टे ।
 धुवाँ धोर घोरं सु जोरं प्रगट्टे ॥
 मनो दोय सिंधू तजै आय वेला ।
 प्रलैकाल कै काल कीनो समेला ॥७६४॥
 दुहूँ ओर घोरं सु गोलं वरक्खै ।
 मनो मोघ^४ बोला अतोलां^५ करक्खै ॥
 उट्टै अग्रपव्वय डहै गड्ढ फोटं ।
 परै गज्ज बाजं धरा धूरि लोटं ॥७६५॥
 प्रलै पावकं जानि उट्टी लपट्टै ।

१ छेकिय, छिक्किय । २ कुप्पिय । ३ मेघ । ४ अतुलंत ।

जरं उज्जरं^१ सूजरं^२ यों मपट्टै ॥
लगे गोल मैं गोल गोला सु गज्जै ।

भए वार पारं उपम्मा सु रज्जै ॥७६६॥
मनो स्याम कै वास है वारपारं^३ ।

चहुँ ओर राजंत है चारु वारं ॥
रहे गिद्ध तामैं घने वैठि अट्ट ।

करै ध्याँन बैठे गुफा मैं सुनिद्रं ॥७६७॥
उड़ै साथि गोलाँन कै वीर ऐसैं ।

मनो फाटिका^४ तैं उड़ै नट्टु जैसैं ॥
चलै तोप जोरं करै सोर भारी ।

परै बिज्जुरी सी घने^५ एक धारी ॥७६८॥
छुटै एक वारै^६ घनी चादर^७ यों ।

मनो भार भूजै वनै यों घनै यों ॥
बँदूकैं हजारं चलै एमि राजैं ।

मनो मेघ गोला परै भूमि गाजैं ॥७६९॥
चलै बाँन वेगं मचै सोर भारी ।

मनो आतसंवाज खेलंत कारी ॥
छुटै बाँन कम्माँन ज्यों मेघ धारा^८ ।

लगै वाज गज्जं हुवै वारपारा ॥७७०॥
मनो नाग छोना उड़ै होड मंढी ।

उसैं अंग अंग करै^९ मेन खंढी ॥
वहै तोमरं सेल ओ सक्ति ऐनं ।

करै वार पारं यहै^{१०} उष्ट वैनं ॥७७१॥
यहै खड्ग^{११} वेहर देवनं सुरं ।

१ मुज्जरं । २ धारपारं । ३ फाटिका । ४ घनी । ५ वारं ।

६ चादरै । ७ धारं, पारं चंपानुमाय । ८ धारी वैनं । ९ बहै । १० खड्ग ।

हम्मीररासो.

करै दोग दूकं समुक्कै^१ समूर^२ ॥
 वहै तेग कंधं परै गज्जराजं ।
 लगे आयुधं यों भरं सर्व साजं ॥७७२॥
 कटै कंगलं अंग ओ जीन वाजी ।
 तवै सूर^३ रीझै करै मालसाजी ॥
 कटारी वहै वारपारं निहारै^४ ।
 मनोस्याँम उर माँभ कौस्तुभ सम्हारै ॥७७३॥
 कहूँ पंजरं पिंजरं बेगि फारं ।
 मनो हाथ वाला अहारी निकारं ॥
 छुरी हत्थ जोरं करै सूर हाँकै ।
 कहूँ मल्ल युद्धं करै वीर खाँकै ॥७७४॥
 परै सीस भूमै^५ उठै रुंढ^६ घोरं ।
 दुँहूँ सेन देखंत कौतुकक जोरं ॥
 किती अंत उरभंत लटकंत^७ भूमै ।
 किते घायलं घाव लगे सु भूमै^८ ॥७७५॥
 भरे योगनी^९ पत्र पीवंत पूरं ।
 परै ज्यों मलेच्छं वरै आय हूरं ॥
 किलककै जु काली हँसै वार वारं ।
 करै भैरवं घोर सोरं अपारं ॥७७६॥
 भगी साह की सेन देखंत दोई ।
 कहै वैन कोपं वकं सीस सोई ॥
 किते भागि जैहो अरे मुढ़ आजं ।
 जिते^{१०} वीर चहुवाँन हम्मीर गाजं ॥७७७॥

१ दूकै सु भूकै, दुक्कं सु भुक्कं । २ शंभु रीझै । ३ विशारै ।

४ भुम्मी । ५ सीस । ६ लटकंत । ७ धूमै । ८ लुगनी । ९ जिते

चाहुवाँन हमीरं सुगाजं ।

भ्रम्यौ साह संगं तज्यौ जंग भारी ।

कहै साह उज्जीर सौं जो हँकारी ॥७७८॥

दोहरा छंद

कहा राव हम्मीर कै, सूर वीर बलवान्न ।

सवै^१ सु खाय हमारिये, जग समै प्रिय प्राँन ॥७७९॥

छप्पय छंद

कहै साह उज्जीर सुनो आपन^२ मन लाई ।

जिते राव कै वीर सवै^३ छत्री प्रन^४ पाई ॥

लरत भिरत नहिं टरत करत अद्भुत रस सीतो^५ ।

करत जंग अनभंग अंग छिन भंग है नीतो^६ ॥

नहिं सहत सार आपण^७ सपन^८ सवै मीर उमराव मर ।

किज्जे सु कौन मत तंत अव कहो बुद्धि आपन^९ समर ॥७८०॥

कहै उज्जीर^{१०} कर जोरि सुनो हजरत यह किज्जे ।

च्यारि सेन चतुरंग संग नाभी कर^{११} दिज्जे ॥

एक^{१२} सेन दिवान्न^{१३} एक बकसी भड़ बंके ।

एक^{१४} गोल मोहिं जानि आप^{१५} एकन फर हंके ॥

यह भाँति सेन चतुरंग कै अनी च्यारि करि जुट्टिए ।

हम्मीर राव चहुवान^{१६} तै फते आप लहि दट्टिए^{१७} ॥७८१॥

दोहरा छंद

करि करि मंत्र उज्जीर^{१८} तव चढ़े संग लै मीर ।

च्यारि अनी करि साहि दल जुरे जंग नव^{१९} वीर ॥७८२॥

१ सर्वहु । २ आपन । ३ धन । ४ मन । ५ जीते, जिने, सीतो ।

६ निते, जितो । ७ आपन । ८ सपन । ९ आपन । १० पर उज्जीर ।

११ नर । १२ दया । १३ दीवान्न, दिवान्न । १४ दल । १५ आपन ।

१६ करि हंके । १७ जे । १८ सुनि । १९ पर । २० निरि ।

जितनो हिंदू को वतन, पाऊँ अब कर जोहिं ॥७८६॥
 बीस सहस्र अबदल पिले, इत हमीर कै वीर ।
 आप^१ आप जय स्वामि की, चाहत मंगल धीर ॥७९०॥

छंद रसवाल

मीर पिल्ले तबै, वीर अबदुल जबै ।
 कहै बैन बाहं, सुनो आप साहं ॥७९१॥
 गहूँ राव ल्याऊँ, रणत्थंभ पाऊँ ।
 कमानस्सुग्रीवं, गरै डारि जीवं ॥७९२॥
 लगूँ साह पगौँ, उठै कोपि जगौँ ।
 हजारं सु बीसं, नमाए सु सीसं ॥७९३॥
 गजं साज^२ तीसं, करै जीव रीसं ।
 उतै राव कोपे,^३ पिले वीर ओपे ७९४॥
 उठी बंक मुच्छं, लगी जाय चच्छं ।
 मनो वीर मगौ, अक्रासं सु लगौ ॥७९५॥
 मिले वीर दोऊ, करै जोर सोऊ ।
 भिरै गब्जि गब्जं, वजे वीर वब्जं ॥७९६॥
 तुरंगं तुरंगं, मचे जोर जंगं ।
 पयदं पयदं, बकै कोप वहं ॥७९७॥
 भभक्कंत वाँनं, उड़ै लगि ज्वाँनं ।
 लगै तेग सीसं, उभै फाँक दीसं ॥७९८॥
 लगै जम्म दड्डं, करै पाँन गट्टु^४ ।
 परी लुत्थि जुत्थं, करी जो अकत्थं ॥७९९॥
 करी जूह लोटै, पवै जानि कोटै^५ ।
 तुरंगं धरनी, सु लड्डै वरनी ॥८००॥

१ अप्प अप्प । २ सज । ३ कुप्पे । ४ दादं, गादं अंत्यानुमास ।

५ लुटै, लुटै ।

नचै रूड^१ बीर^२, धरत्री सरीर^३ ।

सिर^४ हक्क^५ मारै, धरै अत्र धारै ॥८०१॥

उरज्जंत अंतं, मनो ग्राह तंतं ।

गहै अंत चिल्ली^४, अकासं समिल्ली ॥८०२॥

मनो बाल मड्डी^५, उड़ावंत गुड्डी ।

उडै^६ स्त्रोण छिछ्छं, फुँवारे^७ सु अच्छं ॥८०३॥

बहै स्त्रोण नहं, मनो नीर भदं ।

भरै पंग हथ्यं, तरब्बूज मथ्यं ॥८०४॥

पलक्की चमच्ची, उठै बीर नच्ची ।

किंयौ अट्टहासं, सुकाली प्रकासं ॥८०५॥

जहाँ क्षेत्रपालं, गुहै संभु मालं ।

भखै गिद्ध वोटी, फटै तासु पोटी ॥८०६॥

षट सहस सूरं, वरे जाय हूरं ।

गजं तीस पारे, पहारं करारे ॥८०७॥

सतं दोय वाजी, परे खेत साजी ।

तहाँ पद्म सैनं, रहे देखि^८ नैनं ॥८०८॥

तवै सेख सीसं, नवाए सरीसं ।

हमीरं सुरावं, कहै वैन चावं ॥८०९॥

दुहूँ सैन मध्ये, महिम्मा सु वध्ये ।

कहै उच्च वाचं, सुनो राव साचं ॥८१०॥

लखो हथ्य मेरे, वदे वैन टेरे ।

सुनो साहि वैनं, लखो अप्प^९ नैनं ॥८११॥

खरो मै जु खूनी, रहे क्यों ज मूनी ।

गहो क्यों न अच्चं, कहै वैन तच्चं ॥८१२॥

१ रुद्र । २ सुजीरं । ३ हाका । ४ चिल्ली, मिल्ही-अंत्यानुप्रास ।

५ उड्डी । ६ उडै । ७ फुहरें, फुहारें । ८ दिक्खि, पिक्खि । ९ आप ।

यहीं सेस सीसं, रह्यौ मैं जु दीसं ।

करो सत्य बाचं, ततो आप साचं ॥८१३॥

तवै पातसाहं, खुरासाँन नाहं ।

करे^१ कोप पिल्लं, तहाँ सेख मिल्लं ॥८१४॥

कहै साह वैनं, सुनो सर्व सैनं^२ ।

गहै सेख ल्यावै, इतो हस्म पावै ॥८१५॥

जु बारा हजारं, मनं^३ सव्व भारं ।

नोवति निसाँनं, अरु तेग माँनं ॥८१६॥

सुने वैन ऐसे, खुरासाँन रेमे ।

हजारं सतीसं, निवाए^४ सु सीसं ॥८१७॥

सदक्की जवाँनं, पिले सेख पानं ।

तवै सेख धाए, राव कौ सीस नाए ॥८१८॥

दोहरा छंद

करि सलाँम हम्मीर काँ, सेख लई वड़ बग ।

दुहँ^५ सेन देखत^६ नयन, रिस करि कड्डे^७ खग ॥८१९॥

चौपाई छंद

कहे साहि सुनि सदकी वैनं ।

यह कुट्टन^८ कौ गहो मुं ऐनं ॥

जीवत पकरि याहिं अब लीजै^९ ।

मनसव द्वादस सहस करीजै^{१०} ॥८२०॥

सहकि^{११} संग मीर खुरसानी ।

तीस सहस चढ़ि चले अमानी ॥

गहन सेख महिना कै फाजै ।

१ करी कुप्पि । २ एनं । ३ मनो । ४ ननार । ५ दोह । ६ दिखत,
पिक्खत । ७ कड्डिय, कड्डे । ८ कुट्टन । ९ लिजिय । १० करिजिय,
जुकिजिय । ११ सदकी ।

कुपिय^१ मीर खेत चढ़ि बाजै ॥८२१॥
इतै सुसेख राव पद बंदे ।

गहै तेग मन माहिं अनंदे ॥
इतै सेख सदकी उत आए ।

आप^२ आप जय सह सुनाए ॥८२२॥
कहै^३ सदकि सुनि साह सुजानं ।

ठठा भखर बसि करिए पानं ॥
कहा सेख हम्मीर सु राव ।

उठे युद्ध कौं करि जिय चावं ॥८२३॥

छप्पय छंद

जुटे वीर दुहुं जंग अंग अनभंग महावल ।
चढ़े जाँन आमाँन बढे निस्साँन^४ वरदल ॥
करि कमाँन करि पान काँन लों करिखह रक्खे ।
धरि नराच गुन राखि धाव करि बेगि वरक्खे ॥
निज संग वीर सत पंचजुन सेख भेखरौ यह धरिव ।
षट खुरासाँन षट सहस ल सदकी सह हांकी करिव ॥८२४॥
तेग बेग वहु कढ़ी मनो पावक्क लपट्टो ।
करी वाज नर जुट्ट^५ कटे सिर पाव उपट्टा ॥
परै धरनि धर नचै उदर काट अंत भभक्कै ।
चली रक्त धर धार लुत्थ परि लुत्थ धधक्कै ॥
षट सहस खिसे पुरसाँन दल लिय निसाँन वानै सुवर ।
किए नजर राव हम्मीर कै फवी फते महिमा समर ॥८२५॥
आइ सेख सिर नाय राव कूं वधन सुनाए ।
धनि छत्री चहुवाँन सरन पन जग जस छाए ॥

१ कोपे । २ अप्प अप्प । ३ कहै सदकी साह सुजानं ।

४ नीसाँन । ५ जुट्टि कट्टि ।

तेज राज धन धौम तात तिय हठ नहिं छंडे ।
 राखि^१ धर्म द्रढ़ सत्य कीर्ति जस जुग जुग मंडे ॥
 भरि नीर नैन सहिमा कहै अब जननी कव जन्म दे ।
 जब मिलों राव हम्मीर तुम बहुरि समै ह्वै कदे ॥८२६॥
 कहै राव हम्मीर धीर नहिं हीन उचारो ।
 सूर न करै सनेह देह छिन भंग विचारो ॥
 बिछुरन मिलन सजोग आदि ऐसां चलि आई ।
 ज्यों जीवन^२ त्यों मरन सकल^३ वेदन यह^४ गाई ॥
 कीजे^५ न भम^६ अनभग वित मिलै सूर कै लोक सघ ।
 हम तुम जु साह बहुरों^७ तथा ह्वै^८ एक^९ तन ताज सुअव ॥८२७॥
 तज्य^{१०} स्वारथ लोभ भाह काहू नहिं कारय ।
 देह धरे परधान^{११} स्वामि का^{१२} कारज सारय ॥
 को इतसों लै जात कहा उतसा लै आयो ।
 रहै अमर कारति पाप नरदेह सु गाया ॥
 सुनि सख दाख थिर नाहिं कछु तन मट्टा भोले जाइये ।
 का सोव मरन जीवन तना यह लान जुजन कां गइये ॥८२८॥
 सुनि हमीर कै वचन साह पर सनमुख धार ।
 मीर गाभरु वीर आने गिन^{१३} सास नवाए ।
 अलाशोक पनिसाह इतै मिर ऊपरि^{१४} राज ।
 तुन सर राव हमार सामि आन^{१५} कुल लाज ॥
 नन तजो नान का सरन दाउ यह तन गिन मिल गइये ।
 मिलिये जु भिस्त^{१६} मै जाय अथ धर्म न अरना छुडये ॥८२९॥
 हंसि अलावदी साह सेख को वचन नुताए^{१७} ।

१ रक्ख । २ ज्यामन, जौनन । ३ चऊ । ४ मै, दिदि ।
 ५ किज्जे । ६ भंग । ७ गवरु, गनह । ८ इक । ९ परमान । १० जो ।
 ११ रिछ । १२ उपर । १३ अप्पनि । १४ दिरछा । १५ कुनार ।

दिली छाड़ि करि सीस बहुरि मुझकौ नहिं^१ नाए ॥
 मिलो मुझे तजि रोस हुरम मैं तुमकौ दीनी ।
 अर गौरखपुर देस देहुँ तुम कौ सत चीन्ही^२ ॥
 मुसकाय सहि महिमा कहै^३ बचन यादि वै किजिये ।
 जननी जनमे फिरि आनि भव जबै मिलन गन लिजिये ॥८३०॥

दोहरा छंद

जब^४ जननी जनमै बहुरि, धरूँ देह कहुँ आनि ।
 तऊ न तजों हमीर सँग, सत्य बचन मम जानि ॥८३१॥
 तब सु राव हम्मीर सुनि, कीनी^५ मदति सु सेख ।
 हजरति महिमा साह कौ, बात लगावत देखि । ८३२॥
 कहै हमीर यह बचन पर, गही साह सों तेग^६ ।
 लोभ न करिये^७ जीव का, गहो^८ साह सो बेग ॥८३३॥

चौपाई छंद

कहै मीर गभरू ये बातें ।
 गहे^९ सार नहिं करिये धातें ॥
 हुकम धनी कै कौ प्रतिपालो ।
 आइ अदलि सीस पर चालो^{१०} ॥८३४॥
 सुनि गभरू कै बचन सुभाए ।
 महिमा फूल खेत में आए ॥
 सनमुख सार सम्हाय सु बढै ।
 माया^{११} मोह त्यागि खग कढै ॥८३५॥

१ न नवाए । २ अर गौरखपुर औधि देस दीनो (दिनों) मत
 चीहीं (चिन्हीं) । ३ कही । ४ अब । ५ कीन्ही । ६ तेक ।
 ७ किजिय । ८ तो रहै हमारी टेक । ९ गही सार रन की रनि
 धातें । १० प्रतिपालहु, भालहु अंत्यानुप्रास । ११ महिमा ।

दोहरा छंद

दोऊ बंधु रिसाइ कै, लई बाग^१ इमि संग ।
उतरि खेत मैं मिलि उभै, कीनौ हरष उमंग ॥८३६॥
मीर गाभरू पाँय परि, हुकम माँगि कर जोरि ।
स्वामि काज तन खंडिये, लगै^२ न कवहूँ खोरि ॥८३७॥

हनूफाल छंद

मिलि बंधु दोऊ ध्याय । बहु हरष कीन^३ सुभाय ।
अब स्वामि धर्म सुधारि । दोउ उठे वोर हँकारि ॥८३८॥
असमाँन^४ लगिय सीस । मनो उभै काल स दीस ॥
इत कोप महिमा कीन्ह । हम्मीर नौन सु चीन्ह ॥८३९॥
उत मीर गभरू आय । मिलि सेख कै परि पाँय ॥
कर तेग बेग समाहि । रहे दुहूँ सेन सचाहि ॥८४०॥
कस्माँन^५ लीन सु हथ । जनु^६ सार कार सुपथ ॥
धरि स्वामि काज^७ समथ । दोउ^८ उभै जुद्ध सपथ ॥८४१॥
दुहूँ द्वंद जुद्ध सुकीन । मनु जुटे मल्ल नवीन ॥
तरवारि वज्जिय ताय । मनु लगी ग्रीपम लाय ॥८४२॥
कटि चरण सीसरु हथ । परि लुथ जुथ सु तथ ॥
धमसाँन थाँन सु धीर । धर धरण(नि) खेलत वीर ॥८४३॥
गजराज लुटत भुम्भि । बहु तुरंग परत सु भुम्भि ॥
त्रिव घोर वज्जिय सार । तरवारि बरसहु^९ धार ॥८४४॥
दोउ भ्रात स्वामि सकाँम । जग रै किये अति नाम ॥
दोहूँ वीर देखत हूर । चढ़ि गए मुख अति नूर ॥

१ बाग । २ लपकत पकहूँ ज्योरि । ३ जियत । ४ कस्माँन कीस
(मत्थ) तुलगा (लगि) । मनु उभै काल जुजगा । ५ सर कार
धार सुपथ । ६ राज धर्म । ७ मनु उठ्यो । ८ कस्माँन

दल दोय दिक्खत वीर । पहुँचे बिहस्त गहीर ॥८४५॥

दोहरा छंद

तिल तिल भे^१ अँग दोहुँन कै, हने बाजि गजराज ।

हजरत राव हमीर कै, सबै सँवारे काज ॥ ८४६ ॥

मुसलमाँन हिंदवाँन^२ कौ, चले सेख सिर नाय ।

अदि विमाँन दोऊ तहाँ, बिहस्त पहुँचे जाय ॥८४७॥

छप्पय छंद

कहै साह मुख बचन^३ सुनो हम्मीर महाबल ।

अब न गहो तुम सार फिरै हम सकल दिली दल ॥

तुम्है माफ तकसीर राज रणथंभ करो थिर ।

हम तुम बीच कुराँन मुहिम नहिँ करो दिलीसुर ॥

परगनेँ पाँच^४ दीनेँ अवर रणतभँवर भुगतो सदा ।

जब लग सुराज हमरो रहै तुम सु राज राजो तदा ॥ ८४८ ॥

चौपाई खंद

कहै राव हम्मीर सु बानी ।

सुनि दिल्लीस सत्य जिय जानी ॥

जाकी अदलि होय किमि मिटै ।

नर तैं होनहार किमि घटै ॥ ८४९ ॥

तुम्हरो दयो राज किन पायौ ।

तुम्ह कौ राज कहो किन दायौ ॥

वेर वेर कहा मुखै^५ उचारो ।

कोटि म्याँनपन क्यों न विचारो ॥ ८५० ॥

कीरति अमर अमर नहिँ कोई ।

१ भण अँग । २ हितवाँन । ३ बच, वैन । ४ एंच दिगिय ।

५ मुख ।

दुर्योधन दसकंध सु जोई ॥
 काको गढ़ काकी यह दिल्ली ।
 हरि की दर्ई हमैं तुम मिल्ली ॥८५१॥
 हम तुम अंस एक उपजाए ॥
 आदि पदम रिषि अंग उपाए ॥
 देव दोष सर घर भए न्यारे ।
 हम हिंदू तुम यवन हँकारे ॥८५२॥
 तजिये भोग भूमि कै सबहीं ।
 चलिये सुरपुर वसिये अवहीं ॥
 सग हमारो पहुँच्यो जाई ।
 हम तुम रहैं सबहिं पहुँचाई ॥८५३॥
 गहो हथ्यार राज सब छंडो ।
 राखो जस तन खाँड विहंडो ॥
 अवै चालि सुरपुर सुख मंडो
 मृत्युलोक^१ कै भोग सु छंडो ॥८५४॥
 छंद त्रोटक
 यह बात^२ कही चहुवाँन तवै ।
 सुनि साह सबै भर पेलि जवै ॥
 करि साज सबै रण मंडि महा ।
 तिन भारथ पारथ जुद्ध मुदा ॥८५५॥
 दल संग चढ़े सब सूर असी ।
 सब तोष सु दाँन फनाँन फसी ॥
 गजराज अनेक वनाय धने ।
 मनो पावस बहल मेघ नने ॥८५६॥
 हय कंद अमंद सु पोत मनो ।

बहु दाँमनि सार चमकि मनो ॥
 घन गौर^१ सदायन देखतयं ।
 ध्वज बैरख मंडल लूरतयं ॥८५७॥
 विरदावत वृंद कविंद घने ।
 मनो चात्रक मोर अनंद बने ॥
 बगर्पति सुदंति अनंत रजे ।
 धुरवा करि सुंड छुटे भरजे ॥८५८॥
 वहै^२ धार अपार जुधार वही ।
 घन घोर सु नौबति नाद वही^३ ॥
 कर सोर समोर नकीव चले ।
 यह भाँति दोउ दिस^४ वीर^५ मिले ॥८५९॥
 करिये हंकार सुवीर चले ।
 ॥
 कह मीर सिकंदर नेम कियं ।
 सिर नाय सुभाय हुकम्म लियं ॥८६०॥
 पहलै पुर जाय सु वीर भगं ।
 राणथंभ कहा हजरति अगं ॥
 तुम सेर करथौ वह आप जथा ।
 अव देखहु मोर सुहाथ जथा ॥८६१॥
 सु जमीति खधार लई सवही ।
 अरु मीर सिकंदर आय^६ सही ।
 करि कोप सिकंदर मीर चढ़े ।
 तव राव हमीर कै भील कढ़े ॥८६२॥
 तव भोज कही अव मोहि कहो ।

१ घन घोर । २ वह शर अपार सु धार हुई । ३ हुई । ४ दल ।
 ५ मोर । ६ आ पठई ।

इतने अब हत्थ हमार लहो ॥
 तब राव कही रणथम्भ अगै ।
 दुइ(रहु) जैत अगै सिर भील तगै ॥८६३॥
 अर जैत सरन्नि सुराखि तवै ।
 सरि कौन करै तुम्हरी जु अवै ॥
 तुम संग रतन्न चितोर गढ़ ।
 चढ़ि जाहु हमार जु काज बढ़ ॥८६४॥
 सुनि भोज इसे कहि वैन तवै ।
 यह सीस तुम्हार निमित्त^१ अवै ॥
 रणथंभहिं हेत जु सीस दिवै ।
 अब ओर कहा विन राव जिवै ॥८६५॥
 यह औसर फोर वनै कवहीं ।
 हजरत्ति हमीर मिलै जवहीं ॥
 कहि वत्त इती जु सलौम करी ।
 अपनी सब लीन जमीन^२ खरी ॥८६६॥
 सब भील कसे हथियार जवै ।
 निकसे कढ़ि भोज अमान्न तवै ॥
 कमठा^३ कर तीर सम्हार उठे ।
 उत भीर सिकंदर आय जुटे^४ ॥८६७॥
 वजि घोर निमान्न प्रमान्न^५ मिले ।
 दल कोप करे बहु तोप चले ॥
 घमसान्न जुवान् कियो नवहीं ।
 दुहु सैन सुगेन वने जवहीं ॥८६८॥
 गजराज हरौल करे चलथं ।

^१ निमित्त, निमित्त । ^२ जमीन । ^३ कमठान् कुशार । ^४ उठे, हुठे ।
^५ प्रमान्न ।

उत सार अपार कढ़े दलयं ॥
 सजि भील अनी सुघनी हलकौ ।
 कसि गातिय^१ कोप कियौ बलकौ ॥८६९॥
 कमठा कर धार अपार बलं ।
 तब भोज मिल्यौ तहँ साह दलं ॥
 नट कूदत^२ जानि सु ढोल सुरं ।
 बहै^३ तीर अमीर सुजानि छुरं ॥८७०॥
 करि कोप तवै गजदत कढ़े ।
 मुरि मूरिय धूरि उपारि बढ़े ॥
 सब भीलन^४ मत्त सुकोप कियं ।
 जनु भाल बली मुख लंक लियं ॥८७१॥
 जनु मार अपार कटार चलै ।
 बहु मीर अमीर रु भील मिलै ॥
 हजरत्ति सराहत भोज बलं ।
 जनु मानव रिच्छ भिरत्त दलं ॥८७२॥
 दोड भोज सिकंदर मीर जुटे ।
 मुख वानिय मीर अमीर रटे ॥
 जब भोज कहै करि वार तुहीं ।
 कहै मीर सिकंदर बृढ़ तुहीं ॥८७३॥
 अब तोपर वार कहा करिये ।
 सब लोक अलोक महा भरिये ॥
 तब भोज स कोप कियौ रण मैं ।
 करि कोप कटार दियौ तन मैं ॥८७४॥
 तन कंगल भेदि धरन्नि परथी^५ ।
 किरवाँन चलाय स मीर हरथी^६ ॥

सिर भोज परचौ धरनी^१ तल मैं ।

धर धावत रुंड लरै^२ बल मैं ॥८७५॥

उत मीर सिकंदर भूमि परे^३ ।

वर हूर^४ सुदूर सुआनि बरे ॥

परि खेत खधार अपार सवै ।

बिन सीस पराक्रम भोज अवै ॥८७६॥

भजि साह अनी तजि खेत तवै ।

परि भोज समाज सबीर सवै ॥

कसमीर अमीर सहस्र पची ।

सुमिले^५ धर धूर अली सु सर्वा ॥८७७॥

तहाँ भोज स साथि हजार भले ।

वरि बाल सवै सुर लोक चले ॥८७८॥

दोहरा छंद

परे भोज सँग भील भर, सहस्र दोइ इक ठौर ।

सहस्र पचीस कसमीर कै, अरुपंधार भर मोर^६ ॥८७९॥

सहस्र तीस पंधार कै, ओर सिकंदर मीर ।

अली सयद^७ कै संग भट, परे मीर^८ दस भीर ॥८८०॥

भजी फोज पतसाह की, विकल सकल उमराव ।

दोय सहस्र भट भोज सँग, रहे खेत करि चाव ॥८८१॥

चौपाई छंद

राव हमीर भोज ढिंग आए ।

देखि^९ सु भोज नैन जल छाए ॥

तुम सब धनगर भए कलि माहीं ।

१ धरनितल । २ भूमि लरै चल मैं । ३ भूमि गिरे । ४ हूर ।

५ उलटी भइ सेन दिलीज जनी । ६ मोर । ७ सैद । ८ पाँव । ९ देखि ।

भोज मरि द्रग जल छाए ।

परे कासमीरं सहस्र पचीसं ।
 अली सेर मीरं परे संग दीसं ॥८८॥
 तबै साह कोपं किये बैन रीसं ।
 फिरे वीर लज्जा समेतं सुदीसं ॥
 तबै राव हम्मीर कोपे सुजाँनं ।
 चले^१ संग चहुवाँन वलवाँन राँनं ॥८९॥
 लिये सेन पंधार दो लक्ख जामो ।
 जबै जैन साहं सिकंदर सु नामी ॥
 इतै राव हम्मीर कम्मौन लीनी ।
 मनो पत्थ भारत्थ सारत्थ कीनी ॥९०॥
 लगै तीर अंगं हुवे पार गज्जै ।
 परै पील भुम्मी^२ सु घुम्मै गरज्जै ॥
 कहूँ पक्खरं^३ वाजि फूटै^४ सरौरं ।
 छुटै प्राण वाँन सु लागंत तीरं^५ ॥९१॥
 जुरे जंग मीरं अमारं सु चौजं ।
 इतै राव हम्मीर उत^६ साह फौजं ॥
 चढ़े^७ राव कै राघतं जो अमानै ।
 बनै पंगलं अंग जंग सु ठानै ॥९२॥
 करै रंग कै अंग वानै अनेकं ।
 घने केसरं साज लीने सु तेकं ॥
 किते वीर तोरा तबल्लं बनाए ।
 घने नेत वंधं गजं गाह लाए ॥९३॥
 किते मौर वंधं मजे केमराँनं ।
 किते वीर वोंके पढ़े पाहुवाँनं ॥

१ चढ़े । २ भूमिं हु चकार भरीं । ३ पाखरं । ४ फूटै । ५ मने
 मेघ पावस्त दूदंत नीरं । ६ राव के एग लागंत तीरं । ७ रं । ८ बड़े ।

पढ़ै पाहि^१ बंदीजनं बृंद भारे ।

मनो राति जोरत दूटंत तारे ॥५९४॥

उठी उद्ध मोक्षं लगी नैन आई ।

उठे रोम अंगं सुजंगं मचाई ॥

उतै साह कीने^२ घने गज्ज अगौं ।

मनो पाय चल्लै पहारं सु मगौं ॥

तिन्हें उप्परें साह^३ कै वीर धाए ।

गही तेग हथं उरं कोप छाए ॥८६५॥

इतै राव चहुवाँन कै वोर कोपे ।

मनो आजही साह कै वीर लोपे ॥

गजै सो हमीरं लखें खेत राजै ।

सवै सूर वीरं निसाँन सु बाजै ॥८९६॥

किते चाहुवाँन पिले डाल पीलं ।

उठावंत मारंत पारंत डीलं ॥

कहुँ सुडि पै तेग बाहंत ऐसा ।

मनो रंभ धंभ कहुँ तग जैसी ॥८६७॥

कटै दंत मातंग भाजंत^३ जंते ।

गहै पुच्छ सुडं पटकंत केते ॥

परै पील पव्वय मनौ खेत भारी ।

वहै रक्त^४ घाव मनौ घाव कारी ॥८६८॥

तिहौं काल कविराज उपम विचारी ।

वहै स्याँम पव्वै सु गेरु पनारी ॥

किते वाजि राजं पटकंत भूमै ।

भए अंग भंगं खरे घाव घूमै ॥८६९॥

कदी तेग बेगं लपटं सु जानो ।

मनो ग्रीषमं लाय लगी सुमानो ॥
 जुटे बीस बीरं गहीरं सु गज्जै १
 भजे कायर २ खेत छंडे सु लज्जै ॥६००॥
 कटे सीस बाहू कहूँ पाव ऐसे ।
 बहै तेग बेग मनो डार जैसे ॥
 लगै कंध ग्रीवा तबै सीस दूटै ३ ।
 परै सीस धरनी तबै रुंड भूटै ४ ॥६०१॥
 घने सीस तर्वूज से भुम्भि डारै ।
 लरै रुंड खेत सिर हक ५ मारै ॥
 बहै बाँन किरवाँन ६ बज्जन् ७ सारै ।
 मनो काठ काटंत ८ कट्टे कुहारै ॥६०२॥
 वहै सील अंग परै पार होई ।
 मनो रुंड मै नाग लपटंत सोई ॥
 कटारी लगै अंग दीसंत पारं ।
 मनो नारि मुग्धा कल्यौ पानि वारं ॥६०३॥
 छुरी वार सूरं करै जार ऐसे ।
 मनो सर्पनो पुच्छ दीखंत जैसे ॥
 लगै जोर सों यों विपाणं जवाँन ।
 हुवै अंग पारं जुटै जर बाँन ॥६०४॥
 भए लथ वथ दुहूँ पन ऐसे ।
 मनो यों अपारे भिरे मल जैसे ॥
 पछारै उखारै मुजा सीस सूर ।
 उछारै ९ हँकारै उठै १० धीर नूर ॥६०५॥
 मची मांस भेद घरा कीच भारी ।

१ कातरं । २ दूटै । ३ भूटै । ४ हक । ५ बज्जन् । ६ बाँन ।
 ७ कट्टे । ८ उठल्लै । ९ हँकारै । १० उठै ।

चली झुट्टि खेतं नदी मैं^१ अकारी ॥
 बनें कूल पीलं सुडीलं सु बज्जी ।
 बहै बीचि^२ लोहू जलं धार गल्ली ॥६०६॥
 रथं चक्र आवर्त्तो सो भौर मानो ।
 घनं षंस बेला कुलं रूप मानो ॥
 नरौ ग्राह पावं करं खर्प जैसे ।
 बनी अंगुरी मीन भोंगा सु तैसे ॥६०७॥
 बहै सीस इंदीवरं जानि फूले^३ ।
 खुले नैन यों चंचरीकं सु भूले ॥
 सिवालं सु केसं सुवेसं विराजै ।
 बने घाट बीसों खरे सर गाजै ॥६०८॥
 भरै जुगानी खप्परे सूर लोही ।
 मनो ग्राम वामा पनीहार सोही ॥
 करै केलि भैरव हरं संग काली ।
 मनो न्हात वैसाप कान्तिक्वाली ॥६०९॥
 इसे घाट ओघाट^४ किन्ने^५ हमीरं ।
 डरै कायर^६ साह कै मीर पोरं ॥
 भजी साह सेना सबै लाज डारी ।
 भिरे खेत चहुवाँन गज्जंत^७ भारी ॥६१०॥
 किते गिद्ध जंवू करालं सु चिल्ली ।
 वगं^८ हंस केते विहंगं सु मिल्ली ।
 परे खेत साहं सिकंदर सु नामी ।
 सवा लकख खंधार कै मीर वामी ॥६११॥
 गिरे खेत हथ्यी^९ सतं पौन ऐसे ।

१ बह । २ बिचि । ३ फुल्ले, सुल्ले अंत्यानुप्रास । ४ घट औबट ।
 ५ कीने । ६ कातरं । ७ गाजंत । ८ वगं । ९ हाथी ।

मनो पर्वत^१ अंग दीखंत जैसे ॥
 कसे साठि^२ हौदा परे खेत माहीं ।
 जरावं^३ जरं कंचनं कै सुमाहीं ॥६१२॥
 परे डंवरं^४ सौ कई गज्जराजं ।
 कई प्राणहीनं कई मो समाजं ॥
 परे सत पंचं निसानन्नवारे ।
 किते फगज्जराजं परे खेत भारे ॥६१३॥
 सवा लक्ख वाजी परे जे असाँनं ।
 परे खेत साहं^५ सिकंदर सुजाँनं ॥
 तिनै साह^६ लक्खं पँधारं सवायं ।
 परे एक^७ लक्खं दिलीसं सुपायं ॥६१४॥
 दुहूँ इक्क^८ मीरं परे खेत नामी ।
 कहूँ नाँम ताकै परै खेत वामी ॥
 परे दूसरे मीर सिर खाँन भारी ।
 रहे खेत महरम्म-खाँन सुधारी ॥६१५॥
 परे जौमजादेन से मीर नामी ।
 मोहोवत्त मुदफ्फर परे इक्क ठामी ॥
 परे नूर मीरं अफरैस्स धोरं ।
 वली इक्क निज्जाम दीनं सु पीरं ॥६१६॥
 परे मीर एते दुहूँ खेत सूरं ।
 वही नोर ज्यों रत्त^९ चाहंत कूर^{१०} ॥
 नची जुगनी और भैरव सु नच्चैँ ।
 भखैँ गिद्ध आमिप्प जंवू सु रच्चैँ ॥६१७॥
 धके सूर रब्धं सु जाँम सवायं ।
 महावीर धायं स घूमंत वायं ॥

१ पर्वत । २ छठि । ३ मरत । ४ इक्क । ५ पण । ६ लक्ख । ७ एक । ८ वही, वही ।

वर^१ अच्छरी सूर^२ वीरं सु अच्छे ।
 खुले मोक्ष^३ द्वारं प्रवेसंत गच्छे ॥९१८॥
 भयौ मंडलं कुंडलं भौन नहं ।
 कढ़े सूर वीरं सु धीर उपदं ॥
 महा रौद्र भौ खेत देखंत जानो ।
 कियो अद्भुतं देव सो जुद्ध मानो^४ ॥९१९॥
 परे खेत खंधार मीरं सु राते ।
 इके लक्ख हजार पंचास^५ जाते ॥
 इतै सूर हम्मीर कै सहस च्यारं ।
 सु तो वीर धीरं खुले मोक्ष द्वारं ॥९२०॥

दोहरा छंद
 तव हमीर हर ध्यान करि, हर हर हर उच्चारि ।
 गज निज सनमुख^६ पेलि कै, जुरे^७ साह सों रारि ॥९२१॥

त्रोटक छंद
 गजराज हमीर सु पेलि^८ वरं ।
 मुख तै उचरंत सु भाव हरं ॥
 किरवाँन^९ कढ़ी बलवाँन हथं ।
 सनमुख सु साहि सु बोलि^{१०} जथं ॥९२२॥
 सुनिये सु अलावदि वैन अयं ।
 करि द्वंद सु उद्ध सु जुद्ध धयं ॥
 सब सेन कहा करिहैं सु सुधं ।
 हम आपन^{११} इक्क^{१२} करैं सु जुधं ॥९२३॥
 दुहुँ ओर उछाह अथाह सजे ।

१ आय । २ मोच्छि । ३ जानों । ४ पच्चीस । ५ सन्मुख पिहि
 कै । ६ जुरिग, जुरिड । ७ पिहि । ८ कम्माँन चढ़ी । ९ बुलि गयं ।
 १० आपन । ११ एक ।

हजरति सु कोप अकथ^१ रजे ॥
 सनमुख हमीर सु आय^२ जुटे ।
 सब सथ जथारथ वेग^३ हटे ॥९२४॥
 तिहिं खेत^४ खरे^५ चहुवाँन नरं ।
 पतिसाह सबै दल भजि^६ भरं ॥
 रहे मीर उजीर कळूक तवै ।
 चहुवाँनन कै दल देखि^७ जबै ॥९२५॥
 पतिसाह कही यह कौन बनी ।
 सब सैन बड़ी^८ चहुवाँन तनी ॥
 तब मंत्र वजीर सु एमि कह्यौ^९ ।
 तुम मित्र सदा गुन जानि लख्यौ ॥९२६॥
 सुनिराव सु दूत पठाय दयौ ।
 चहुवाँनन सों हित जानि ठयौ ॥
 अब^{१०} बिग्रह छाडि^{११} सु संधि करो ।
 चहुवाँनन सों हित जानि डरो^{१२} ॥
 अपराध हमैं सब दूरि करो ।
 तुम होहु अभै हम कूच धरो ॥९२७॥
 नृप सों चर जाय कही तवहीं^{१३} ।
 सुनि राव यह मुख वत्त^{१४} कही ॥
 अब खेत चढ़े कळु संधि नहीं ।
 यह वत्त हमारि सुजानि सही ॥९२८॥
 रिपु तैं विनती^{१५} सुइ कातरत ।

१ अगत्य । २ आनि । ३ देखि । ४ अत्त, अत्थ, अर्थ । ५ अरे ।
 ६ भाजि । ७ दिक्खि, पिक्खि । ८ बड़ी । ९ कियो, लियो अंत्यानुयास ।
 १० व्यग्रह । ११ छंडि । १२ दुहु ओर महा मुख नूरि भगे । १३ जबही ।
 १४ वत्त । १५ विनति ।

अब^१ वृत्त कहे छल चातुरता ॥

अब जाहु यहाँ हम सेन सजी ।

बिन साह को जुद्ध करंत लजी ॥९२९॥

वचनिका

अब राव हम्मीर दूत कौं नीति सहित^२ उत्तर दियौ अरु
युद्ध को उच्छाह कियौ आपणां उमरावों सों कही आयुध^३
छत्तीस^४ सों च्यारि आवधां सूं युद्ध कीजे^५ अरु जग में अमर
नस लीजे ॥ तोप, बाण, चादरि, हथनालि, जंबूर, बंदूक,
तमंचा, कमाँन, सेल इन^६ नै त्यागो । अरु आयुध च्यारि लीजे ।
तरवारि, छुरी, कटारी, बिषाण, मल्ल युद्ध करि हजरति नै हाथ
दिखावो तौ सांयुज्य मुक्ति पावो ॥ पातसाह की ज्यान
बखसीस करो और अच्छरी^७ वरो यह हम्मीर की आज्ञा माथै
बारि राव हम्मीर कै उमरावाँ केसरिया साज बणाया अरु
बेहरा बाँधि पातसाह की फौज परि हाँको^८ कियौ ॥

त्रोटक छंद

कछु जंत्र न तोप न कंत^९ नहीं ।

तजि चापन चक्रन बाँन जिहीं ॥

किरवाँन^{१०} लई कर वाजि चढ़े ।

चहुवाँन अमाँन सुखेत बढ़े ॥६३०॥

उत मीर बजीर रु साहि निजं ।

करि कोप तवै पतिसाह सजं ॥

तरवारि दुधार अपार बहै ।

सब साहि सु सैन समूह दहै ॥९३१॥

१ अरु वृत्त (व्यर्थ) । २ संयुक्त । ३ आयुध । ४ छः तीस में ।

५ किजिये । ६ यन । ७ अच्छरी । ८ हल्लो । ९ कंत । १० कमाँन ।

कटि ग्रीव भुजा धर यों विफरे^१ ।
 मनु काटि करे रस कृत हरे ॥
 उड़ि मथ्य परे धर रुंड उठे ।
 चहुवाँन धरासह धार उठे ॥९३२॥
 सिर मारत हाँक^३ परे धर मैं ।
 धर जुझत जुद्ध करै अरमैं ॥
 कर जोर कटार सु अंग वहै ।
 बहु खंजर पंजर देह दहै ॥९३३॥
 बहु रंचक^४ मुष्ट कवच्य परै^५ ।
 मल जुद्ध समुद्ध सुवीर करै ॥
 पचरंग अनगिय खेत बन्यौ ।
 बकसी^६ तव साह सों नैन भन्यौ ॥९३४॥
 भयभीत सु साह की फौज^७ भगी ।
 घमसाँन मसाँन सु ज्योति जगी ॥
 प्रियो बकसी लखि नैन तवै ।
 उलटो गज कीन^८ सु साह जवै ॥९३५॥
 इक संग उजोर^९ न और नर ।
 फिरि रोकिय^{१०} साह अनंत भर ॥
 चहुवाँन धरम्म सु जानि कहै ।
 यह मारत साहि सु पाप अहै ॥९३६॥
 अभिपेक लिलाट कियो इन कै ।
 महि ईस कहावत है तिन कै^{११} ॥
 धरि अग्र^{१२} सु साह को पील जवै ।

१ निहरे । २ चहु भोग धरा सु अपार उठे । ३ हाँक । ४ रंचक ।
 ५ भन्यौ । ६ बकसी नृप साहि जो आप हन्यौ । ७ नैन । ८ किन ।
 ९ बजीर । १० रकिय । ११ तिनके । १२ अग्र ।

अब^१ वृत्त कहे छल चातुरता ॥

अब जाहु यहाँ हम सेन सजी ।

बिन साह को जुद्ध करंत लजी ॥९२९॥

वचनिका

अब राव हम्मीर दूत कौं नीति सहित^२ उत्तर दियौ अरु
युद्ध को उच्छ्राह कियौ आपणां उमरावों सों कही आयुध^३
छत्तीस^४ सों च्यारि आवधां सँ युद्ध कीजे^५ अर जग में अमर
मस लीजे ॥ तोप, बाण, चादरि, हथनालि, जंवूर, बंदूक,
तमंचा, कमाँन, सेल इन^६ नै त्यागो । अरु आयुध च्यारि लीजे ।
तरवारि, छुरी, कटारी, विषाण, मल्ल युद्ध करि हजरति नै हाथ
दिखावो तौ सांयुज्य मुक्ति पावो ॥ पातसाह की ज्यान
बखसीस करो और अचछरी^७ बरो यह हम्मीर की आज्ञा माथै
परि राव हम्मीर कै उमरावाँ केसरिया साज बणाया अरु
बेहरा बाँधि पातसाह की फौज परि हाँको^८ कियौ ॥

त्रोटक छंद

कछु जंत्र न तोप न कंत^९ नहीं ।

तजि चापन चक्रन वाँन जिहीं ॥

किरवाँन^{१०} लई कर वाजि चढ़े ।

चहुवाँन अमाँन सुखेत बढ़े ॥९३०॥

उत मीर वजीर रु साहि निजं ।

करि कोप तवै पतिसाह सजं ॥

तरवारि दुधार अपार वहै ।

सब साहि सु सैन समूह दहै ॥९३१॥

१ अरु वृत्त (व्यर्थ) । २ संयुक्त । ३ आयुध । ४ छः तीस मै ।
५ किजिये । ६ यन । ७ अपछरा । ८ हल्लो । ९ रुकंत । १० कमाँन ।

कटि ग्रीव भुजा धर यों विहरे^१ ।
 मनु काटि करे रस कृत हरे ॥
 उड़ि मथ्य परे धर रुंड उठे ।
 चहुवाँन धरासह धार उठे ॥९३२॥
 सिर मारत हाँक^२ परे धर मै ।
 धर जुझत जुद्ध करै अरमै ॥
 कर जोर कटार सु अंग वहै ।
 वह खंजर पंजर देह दहै ॥९३३॥
 बहु रंचक^३ मुष्ट कवथ्य परै^४ ।
 मल जुद्ध समुद्ध सुवीर करै ॥
 पचरंग अनगिय खेत वन्यौ ।
 बकसी^५ तव साह सों नैन भन्यौ ॥९३४॥
 भयभीत सु साह की फौज^६ भगी ।
 घमसाँन मसाँन सु ज्योति जगी ॥
 प्ररियो बकसी लखि नैन तवै ।
 उलटो गज कीन^७ सु साह जवै ॥९३५॥
 इक संग उजोर^८ न और नर ।
 फिरि रोकिय^९ साह अनंत भर ॥
 चहुवाँन धरम्म सु जानि कहै ।
 यह मारत साहि सु पाप अहै ॥९३६॥
 अभिपेक लिलाट कियो इन कै ।
 महि ईस कहावत है तिन कै^{१०} ॥
 धरि अग्र^{११} सु साह को पील जवै ।

१ विहरे । २ बहु श्लोक धरा जु अपार उठे । ३ हाँक । ४ रंचक ।
 ५ भरै । ६ बकसी नृप साहि को आप हन्यौ । ७ नैन । ८ बलि ।
 ९ बलीर । १० रक्किय । ११ बिनये । १२ अग्र ।

जहँ राव हमीर सु लाय पगै ॥६३७॥
 अब साहि सु राव कही तबहीं ।
 तुम जाहु 'दिली न डरो अबहीं ॥
 लखि साह कौ लोग मुरक्कि चलयौ ।
 नृप आप हमीर सु खेत मिल्यौ ॥६३८॥

वचनिका

राव हम्मीर का उमरावाँ तरवारि कटारियाँ सों जुद्ध
 कियौ^१ पातसाह का अमीर उमरावाँ सूं मल्ल जुद्ध करयौ^२
 तदि^३ पातसाह की फौज^४ विकल होकर पातसाह तैं छोड़ छोड़
 भागी हम्मीर की रावताँ पातसाह ने हाथी सुद्धाँ घेरि ल्याया ॥
 हम्मीर कै आगे ल्या खड़ो करयौ । राव हम्मीर पातसाह ने
 देखि आपणाँ रावताँ सों कही यानै छोड़ देओ यह ने पृथ्वीस
 कहै छै या अदंड छै ॥ यह सुनि पातसाह ने छोड़ दियौ^५ ।
 पातसाह ने उह की फौज मैं पहुँचाय दियौ । पातसाह वहाँ से
 खेत छोड़ कूँच कियौ^६ ॥

दोहरा छंद

छाड़ि खेत पातसाह तब, परे^७ कोस द्वै जाय ।
 हसम सकल चहुवाँन न, लीनो^८ तवै छिनाय ॥६३९॥
 लिये साह नीसाँन तब, वाना जिते बनाय ।
 और सम्हारि सु खेत कौ, घायल सोधि उठाय ॥६४०॥
 सब कै जतन कराय कै, देस काल सम आय ।
 राव जीति गढ़ कौ चले, हर्ष न हृदय समाय ॥६४१॥
 विन जाने नृप हर्ष मैं, गए भूलि^९ यह बात ।

१ कीधौ । २ बादसाह का अमीर उमरावाँ सूं मल्ल जुद्ध करि युग
 कटारी सों रंजका कौ प्रहार करयौ । ३ सज्जीनृत । ४ मेन । ५ दीधौ ।
 ६ कीधौ । ७ परिय । ८ लिचौ । ९ भुलि ।

साह निसाँन सु अग्र^१ करि, चले भवन हर्षात ॥६४२॥

पद्धरी छंद

भगि साह सेन जुत उलट आय ।

तजि विविध भाँति वाना^२ जु ताहिं ॥

सब साह हसम लीनी छिनाय ।

नृप सकल खेत सोधो कराय ॥६४३॥

बजि दुंदुभि जय जय धुनि सु आय ।

सब वायल नृप लीने उठाय^३ ॥

करि अग्र^४ साह नीसाँन भुल्लि ।

लखि भूप हसम हर कछौ फुल्लि ॥६४४॥

सब राज लोक तिय जिती जानि ।

सब सार परस्पर हरी^५ आनि^६ ॥

चहुवाँन दुग किन्नौ प्रवेस ।

यह सुनिय राव तिय मरन सेस ॥६४५॥

चहुवाँन आनि देख्यौ सु गेह ।

सिव वचन यादि कीनौ सु येह ॥

नृप सकल संग कौ सीख दीन ।

रावत राण मंत्रो प्रवीन ॥६४६॥

तुम जाहु जहाँ रतनेस आय ।

किजे न सोच नृपता बनाय ॥

चहुवाँन राव हम्मीर आय ।

हर मँदिर महँ प्रधिसंत जाय ॥६४७॥

करि पूजन भव^७ गणपति मनाय ।

बहु धूप दीप आरति बनाय ॥

हो गिरजा गणपति नमन देव ।

तुम जानत हो मम सकल भेव ॥९४८॥
 अपवर्ग देहु तुम नाथ सिद्धि ।
 तन छत्र धम्म दीजे^१ प्रसिद्धि ॥
 करि ध्यान संभु निज सीस हृथ^२ ।
 नृप तोरि कमल ज्यों किय अकथ ॥९४९॥
 यह सुनिय साह निज खवण बात ।
 चलि हर मंदिर कौ साह आत ॥
 जलधार नैन लखि राव कर्म ।
 कहि साहि मोहि दीनौ न मर्म ॥९५०॥
 कछु दियौ हमें उपदेस नाहि ।
 तुम चले आप वैकुण्ठ माहि ॥
 तुम अभय बाँह दीनी जु सेष ।
 जुग जुग नाम राख्यो विसेष ॥९५१॥
 अरु महादानि तुम भए भूप ।
 इच्छा सदाँन दीने अनूप ॥
 जगदेव मोरध्वज तैं विसेष ।
 जम लयौ लोक तुम रक्खि सेख ॥९५२॥

वचनिका*

.....आगै (अगै) साह कै नीसान देखि राणी आसमती
 आपणा परिवार समेति परस्पर प्रहार करि खंग (खग)
 प्रहार करयौ । जोहर करि देह त्यागी । सो राव हम्मीर
 ब्यौरो सुन्यौ औरसिव कै वचन यादि करयौ । और यह निश्चय

१ दिजिय । २ मत्य ।

* हस्तलेख में एक पद के न होने के कारण पूरी वचनिका नहीं दी जा सकी ।—संपादक

जानी कि वर्ष चौदह १४ पूरे भए गढ़ की अवधि पूर्ण हुई
तातैं यह सरीर राखनो (रक्खनो) उपहास्य है और छिन
भंग सरीर कौ राखनो आछथौ नहीं। यह बिचारि सिव कै
मंदिर गए और आप एक सेवग कनै गखि सिव कौ षोड़स
प्रकार पूजन करथौ और यह बर्दान माँग्यौ कि हे सिव तुम
ईस्वर हो। सेवक हृदय कै जाननहारे हो और सबकै प्रेरक
हो तातैं हम्मीर (हमरी) यह प्रार्थना है मुक्ति दीजे तो सायुज्य
दीजे। जन्म जन्म विषैं छत्रीकुल मैं जन्म पाऊँ यह कहि कै
खंग (खग) आप हाथ ले कै सीस उतारथौ सिव पिंडी पै
चढ़ाय दियौ तव सदासिवजी प्रसन्न होय कै आसीर्वाद दियौ
तिहारे कुल की जय होय ॥

दोहरा छंद

साह कहत हम्मीर सोँ, लेहु मोहि अव संग।
धर्म रोति जानो सु तुम, सूर उदार अभंग ॥९५३॥

पद्वरी छंद

मुसकाय सीस वोल्याँ सु यानि।

तुम करो साह मम वचन कानि ॥

हम तुम सु एक जानो न और।

तजि मोह देह त्यागो सु तौर ॥९५४॥

लीजे^१ सुभाँफ सागर सु जाय।

तव मिलैं आप^२ अप्पै सु आय ॥

यह कहिस सीस सुख मूँदि होत।

तव साहि ग्याँन हृद भौ उदोत ॥९५५॥

उठि साह सीस घदन सु कीन।

फरि प्रणम संभु को ध्यान लीन ॥

हजरत्त^१ आय डेरै सु तब्ब ।

उज्जीर मीर बोले^२ सु सब्ब ॥९५६॥

तुम जाहु सकल दिल्ली सथान ।

अलवृत्ति^३ राज दीजे सु आन ॥

नहिं करो मोर अज्ञा सु भंग ।

सेवक^४ धर्म यह है अभंग ॥९५७॥

दोहरा छंद

आयसु पाय सु साह की, चढ़े सकल सजि सैन ।

महरम खाँ उज्जीर तव, आए^५ दिल्ली सु ऐन ॥९५८॥

दयौ राज सिर छत्र धरि, अलावृत्त तिहिं काल ।

घरि घरि अति आनंद जुत, यह विधि प्रजा सुपाल ॥९५९॥

रणतभँवर कै खेत कौ, कीनौ सकल प्रमान ।

प्रथम हने रणधीर ने, बहुरि सेन परिवाँन ॥९६०॥

दोय लख रुमी परे, दोऊ कुँवर उदार ।

सेन आरबी^६ की जिती, हनी जु असी हजार ॥९६१॥

हने मीर द्वै सत सतरि, और सिकंदर साह ।

अट्ट^७ लख खंधार कै, हने मीर निज आह ॥९६२॥

सवा सहस गजराज^८ परे, दोय लख वाजि प्रसिद्ध ।

झादस लख सेना प्रबल, हनी हमीर सुसिद्ध ॥९६३॥

मस्तक राव हमीर कौ, किय^९ सुमेर हर आप ।

मुक्ति^{१०} द्वार सबई खुले, विद्या वर्ष सुधाप ॥९६४॥

छप्पय छंद

विद्या कीन^६ उज्जीर कुँच^७ दिल्ली कौ कीनौ^८ ।

१ हजरत्त । ४ बुद्धे । २ आयउ दित्तिय ऐन । ३ अगव्य ।

४ अट्ट । ५ गजपत्त । ६ कियो । ७ मोक्खि द्वार मय खुल्लिये ।

८ कियउ । ९ कुच्च । १० किलव, लिखव अंत्यानुग्रह ।

तव सुसाह तजि संग बचन हजरत को लीनौ ॥
 सेतबंद पर जाय पूजि रामेस्वर नीकै ।
 परे सिधु मैं जाय करे मन भाते जी कै ॥
 उर्वसी साह हम्मीर नृप सेख मीर सब नाक गय ।
 करि लोकपाल आदर अखिल जय जय जय हम्मीर कय ॥१६५॥
 मिले स्वर्ग मैं जाय साह हम्मीर हरकखे ।
 महिमा मीरु बाल विविध मिलि सुमन वरकखे ॥
 जय जय जय हम्मीर सकल देवन मुख गाए ।
 लोक अमर कीरति मुक्ति परलोक सुपाए ॥
 माणिक्य^१ राव चहुवाँन कुल दैन खड्ग^२ दोऊ^३ धरत ।
 कहि जोधराज यह वंस मैं ननकारी नाहिंन करत ॥१६६॥

दोहरा छंद

सुनत राव हम्मीर जस, प्रीति सहित नृप चंद ।
 मनसा वाचा कर्मना, हरे जोध कै द्वंद ॥१६७॥
 चंद्र नाग वसु पंच गिनि, संवत माधव मास ।
 सुख सुत्रतिया जीव जुत, ता दिन ग्रंथ प्रकास ॥१६८॥
 भूपति नीचागढ प्रगट, चद्रभाँन चहुवाँन ।
 साम दाँम अरु भेद जुन, दंडहि करत खलौन ॥१६९॥
 इति श्रीमन्महाराजाधिराज-राजराजेंद्र-श्रीमदखिल-चाहुवाँन-
 कुल-तिलक नीमराता-आंधिपति श्रीमहाराजा चद्र-
 भाँनजी-देवाज्ञया कवि जोधराज विर-
 चितं यवनेश अलावद्दान प्रति
 हम्मीरजुष्टं समाप्तम्

